प्रस्तावना



प्रथम यह पुस्तक छप कर प्रसिद्ध करनेका हेतु कहे है, की सकलगुणगरिष्ठ, विद्धज्ञानवरिष्ठ, चारित्र पात्र चूडामणि, षट्काय रक्षक इत्यादि अनेक सद्गु णो करके विराजमान न्यायांभोनिधि श्री श्री श्री श्री १००० महामुनिश्री 'शिवजी रामजी' महाराज, ग्रा मानुग्राम विहार करते करते, भव्यजीवोंको प्रतिवोध देते देते 'सवाइ जयपुर'में पधारे, तव समस्त श्रीसंघ मिलके वडे महोत्सवसें सव जिनचैत्योंका दर्शन क रवाये पीछें श्रीगुरुजी महाराज धर्मशालामें आ कर विराजमान हुवा, तव श्रीगुरुजी महाराजने सव श्री संघकों धर्मोपदेश देना सरु कीया, जिसमें ज्ञानका माहात्म्य वर्णन करते करते गुरुजीने ऐसा कहा कि इस कालमें ज्ञानाभ्यास करनेवालोंकी संख्या वहो त करकें स्वल्प हो गइ है, जिस्सें जगें जगें वडे वडे सहेरोमें पाठशाला वन जावे, तो क्रमसें पढनेवाले भी वहोत होजावे, क्योंकि कारणसें कार्य होता है ऐसा श्रीगुरु महाराजका उपदेश श्रवण करकें

अब ये छपी हुइ पुस्तककी प्रथमावृत्तिकी नकल सब खप जानेसें फिर इनकी द्वितीयावृत्तिकी नकल (२०००) दो हजार, हालमें यथामति संशोधन करकें मेंनें श्रावक भीमसिंहमाणककी मारफत छपवाई हे ये पुस्तककी दो हजार नकलमेंसें (१५००) पनरेसें नकलका खर्च मेहेंता माणेकचंद मिलापचंदने दिया हे तथा (५००) पांचसें नकलका खर्च नवानगरवाले लोढा लालमचंदने दीया हे और ये पुस्तककी द्वितीयावृत्तिमें प्रथमावृत्तिसें अधिक एक सूतकविचार, दूसरो असझाइविचार, और तीसरो साधु, श्रावककों कोनसी वस्तु कितने प्रहर तथा दिन पीछें खाने लायक न रहे ? ये सब दाखल किये हे

विज्ञप्ति

वर्त्तमान समयमें श्रीजिनधर्मके केइ तरेकी पुस्तकों छपी हें, परंतु तिनमें श्रावककों अवश्य करणे योग्य जो सामायिकसें ले कर पंचप्रतिक्रमण अरु पौषधादिक क्रिया हे तिसको जहां जैसा सूत्रपाठ चहियें वैसाही सूत्रपाठ लिखकें अरु जिस जगें जो जो वि

सघ श्रावकों आपसमें विचार करकें उसी वखत श्री गुरु महाराजजीकों कहने लगे कि महाज ! आपकी आज्ञासें 'सवाइ जयपुरमें' जैनपाठशाला स्थापन करनेका हमने निश्चय करा पीछें विक्रमार्क संवत् १९४५ के आषाढ शुक्ल दुजके दिन पाठशाला स्थापन करकें तिस्में विद्याभ्यासीयोंकों विद्याभ्यासार्थ संस्कृत भाषा जाननेवाला दो पण्डितोंको वर्षासन देकें रक्खे

पीछें विद्याभ्यासी जनोंको जैनमार्गमें सामायिकादिक षट् आवश्यक अवश्य कर्त्तव्य है, सो पहिलेही पढना चहियें, इस वास्ते तिस ग्रथको छपवानेका श्रीसंघने मुकरर कीया तिसमें एक हजार पुस्तकका खरच तो शेठ माणकचदजी मिलापचदजी मेहेंतानें दीया,और जास्ती पुस्तक छपानेका खरच पचाती तरफसें दीया जायगा एसा निश्चय करकें सब पचातियों मिलकें श्रीमुवईमें (मेरे पर) शेठ छगनलालजी मगन लालजीके पुत्र चूरामल्ल वेराठीके पर उक्त पुस्तककों मुबईमें छपानेका हुक्कम लिखा तो तिस मुजव मेनें गोपालचदजी यतिके पास यथा योग्य सशोधन करायकें श्रावक भीमसिंह माणककी मारफत छपवाया

॥ अस्य ग्रथस्यानुक्रमणिका प्रारंभ ॥

धि लिखना चहियें,जहा जहां विधि लिखकें बराबर क्रमपूर्वक छपी होवे, एसी कोइ पुस्तक नहीं है

इस वास्ते मेंने यह पुस्तक छपानेके प्रारम्भसें छक विचार पूर्वक सामायिकसें ले कर पौषधादि क्रियापर्यंत सर्व सूत्रोंको विधि संयुक्त विस्तार, प्रयास पूर्वक अनुक्रमसें छपकें पीछें सब श्रावक जाइयोंको निरंतर पठन पाठन करने योग्य ऐसे बहुत स्तवन, सज्झाय, स्तुतियो, चैत्यवंदनो, राग रागणीमें गानेकें प्रजातिपद तथा दादाजीके स्तवन वगेरे छपे हे

यह पुस्तककों मेरी मति अनुसार शोधन करनेमें दृष्टि दोषसें, अरु स्थूलबुद्धिके होनेसें जो कुछ मेरी तरफसें ह्रस्व, दीर्घ, काना मात्रादिकका फरक रहा गया होवे, और कोइ अक्षर अधिक न्यून हुवा होवे, आगें पीछें हूवा होवे, तो सब पढने पढानेवाले सुज्ञजनोनें मुझकों बालककी माफक ग्रथ शोधनेका अभ्यासी जान कर मेरे पर बच्चेकी माफक प्रेम दर्शाय कर शोधकें बांचनां मेरी तरफसें जो चूल रही होवे तिसका मिछामि दुक्कड सर्व श्रीसघ समक्ष देता हु सा० जुरामल्ल वेराठी यह पुस्तक सवाइ जयपुर जैन पाठशालामें मिलेगी

॥ अस्य ग्रंथस्यानुक्रमणिका प्रारंभ ॥

॥ ॐ परमेष्ठिने नम ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीश्रावकस्य विधिसंयुक्त देवसिराइ ॥

॥ प्रतिक्रमणादि सूत्रम्॥

॥ तत्र प्रथम ॥

॥ प्राभातिक सामायिक विधिप्रारम्भ ॥

॥ अथ नवकारमंत्र ॥

॥ णमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ णमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ णमो आयरियाण ॥ ३ ॥ णमो उवझायाणं ॥ ४ ॥ णमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच णमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणासणो ॥ ॥ ७ ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढम हवइ मंगलं ॥ ९ ॥ इति ॥ १ ॥ यह नवकार तीन बेर गुण कें थापनाजीकी थापना करे, तब तेरे बोल चिंतवे, सो कहते है ॥

॥ ॐ परमेष्ठिने नम ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीश्रावकस्य विधिसंयुक्त देवसिराइ ॥

॥ प्रतिक्रमणादि सूत्रम्॥

॥ तत्र प्रथम ॥

॥ प्राभातिक सामायिक विधिप्रारम्भ ॥

॥ अथ नवकारमंत्र ॥

॥ णमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ णमो सिध्दाणं ॥ २ ॥ णमो आयरियाणं ॥ ३ ॥ णमो उवज्झायाणं ॥ ४ ॥ णमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच णमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणासणो ॥ ॥ ७ ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ ९ ॥ इति ॥ १ ॥ यह नवकार तीन वेर गुण के थापनाजीकी थापना करे, तब तेरे बोल चिंतवे, सो कहते है ॥

॥ अथ थापनाचार्यजीकी तेरे पडिलेहणा ॥

॥ शुद्ध स्वरूप धारुं ॥१॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र ॥ ३ ॥ सहित सद्दहणा शुद्धि ॥ १ ॥ प्ररूपणा शुद्धि ॥ २ ॥ दर्शन शुद्धि ॥ ३ ॥ सहित पाच आचार पालु ॥१॥ पलावुं ॥२॥ अनुमोदु ॥ ३ ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचन गुप्ति ॥२॥कायगुप्ति॥आदरुं॥३॥ एव तेरे बोल श्रीधर्मरत्नप्रकरणसूत्रवृत्तिमें कहे हे ॥इति॥२॥

॥ पीछें गुरुजीके सामने अथवा थापनाचार्यजीके सामने खडा हो के तीन खमासमण देवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ खमासमण ॥

॥ इछामि खमासमणो वदिउ जावणिजाए निसीहिआए मछएण वंदामि ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ सुगुरुने शाता सुखपृछा ॥

॥ इछकार भगवन् सुहराइ,सुहदेवसी, सुख तप शरीर निराबाध सुखसंयम यात्रा निर्वहो

होजी ? स्वामी शाता छेजी ? इति ॥ ४ ॥ एम गुरुने कही नमस्कार करे, तेवारे गुरु कहे देवगुरु प्रसाद ॥

॥ पछिं नीचे बेठ के जिमणा हाथ नीचा कर के अभ्युठिउमि कहे पछिं खमासमण दे के इच्छा कारेण संदिस्सह जगवन् सामायिक लेवा मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेह पीछे इच्छं कही दुजी खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे ॥

॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहणके पच्चीश बोल लिखते हे ॥

॥ सूत्र, अर्थ साचो सर्दहुं ॥ १ ॥ सम्यक्त्व मोहनी ॥ २ ॥ मिथ्यात्व मोहनी ॥ ३ ॥ मिश्र मोहनी ॥४॥ परिहरुं यह चार बोल मुहपत्ती खोलती विरीया कहणा ॥

॥ कामराग ॥१॥ स्नेहराग ॥२॥ दृष्टिराग ॥३॥ परिहरु ॥ यह सात बोल प्रथम कहीजें ॥

॥ सुगुरु ॥ १ ॥ सुदेव ॥ २ ॥ सुधर्म ॥३॥

आदरु ॥ कुगुरु ॥१॥ कुदेव ॥२॥ कुधर्म ॥ ३ ॥ परिहरु ॥ ज्ञान ॥१॥ दर्शन ॥२॥ चारित्र ॥३॥ आदरु ॥ यह नव पडिलेहण भावे हाथे करणि॥

॥ ज्ञानविराधना ॥१॥ दर्शनविराधना ॥२॥ चारित्रविराधना ॥३॥ परिहरु ॥ मनोगुप्ति ॥ ॥ १ ॥ वचनगुप्ति ॥ २ ॥ कायगुप्ति ॥ ३ ॥ आदरु ॥ मनोदंरू ॥ १ ॥ वचनदंरू ॥ २ ॥ कायदंरू ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ यह नव पडिलेहण जिमणे हाथसें करणी ॥ यह पच्चीश बोल मुहपत्तीके जानने ॥

अब अंगकी पच्चीश पडिलेहण लिखते है ॥

॥ कृष्णलेश्या ॥१॥ नीललेश्या ॥२॥ कापोतलेश्या ॥३॥ ए तीनु निलाडे मस्तकें परिहरुं॥

॥ ऋद्धिगारव॥१॥ रसगारव ॥२॥ शातागारव ॥ ३ ॥ ए तीनुं मुखें परिहरु ॥

॥ मायाशल्य ॥१॥ नियाणाशल्य ॥२॥ मिच्छादंसणशल्य ॥३॥ ए तीन हीये परिहरु ॥

॥ क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ ए दोय जिमणे खन्ने परिहरुं ॥

॥ माया ॥ १ ॥ लोभ ॥ २ ॥ ए दोय डावे खन्ने परिहरुं ॥

॥ हास्य ॥ १ ॥ रति ॥ २ ॥ अरति ॥ ३ ॥ ए तीन डावे हाथे परिहरुं ॥

॥ भय ॥ १ ॥ शोक ॥ २ ॥ डुगंछा ॥ ३ ॥ ए तीन जिमणे हाथे परिहरुं ॥

॥ पृथ्वीकाय ॥ १ ॥ अप्पकाय ॥२॥ तेऊका य ॥ ३ ॥ ए तीन डावे पगे परिहरुं ॥

॥ वाऊकाय ॥१॥ वनस्पतिकाय ॥ २ ॥ त्रस काय ॥ ३ ॥ ए तीन जिमणे पगे परिहरु ॥ इति मुहपत्ति पडिलेहणा सपूर्णा ॥ ५ ॥

॥ पीछें खडा होय कें इच्छामि खमासमणका पाठ कहे कें इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् ॥ सामायिक सदिस्सावु ? गुरु कहे सदिस्सावेह ॥ पीछे इछं कहे के फेर खमासमण दे कें इच्छा०

॥ ज० ॥ सामायिक ठाउं ? गुरु कहे ठाएह ॥

॥ पीछे इहं कही खमासमण देइ थोडो जुकी तीन नवकार गणी इछाकारेण संदिस्सह जगवन् पसाउ करी सामायिक दण्डक उच्चरावोजी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीछे करेमि जंते सामाइय इत्यादि सामायिक सूत्र तीन वार उच्चरे ॥

॥ अथ सामायिकनु पच्चख्काण ॥

॥ करेमि जंते सामाइय, सावज्जं जोगं पच्चख्कामि ॥ जावनियम पज्जुवासामि ॥ डुविहं तिविहेण मणेण वायाए काएण, न करेमि, न कारवेमि, तस्स जंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ पीछें खमासमण देकें इछाकारेण संदिस्सह जगवन् इरियावहिय पडिक्कमामि ॥ गुरु कहे पडिक्कमह पीछे इहं कही ॥ इछामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए इत्यादि पाठ कहे, सो लिखते हैं॥

॥ अथ इरियावहियं ॥

॥ इछाकारेण संदिस्सह भगवन् ॥इरियाव हियं पडिक्कमामि ॥ इछ इछामि पडिक्कमिउं ॥ ॥ १ ॥ इरियावहियाए विराहणाए ॥ २ ॥ गम णागमणे ॥३॥ पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्क मणे ॥ उसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कड सं ताणा संकमणे ॥ ४ ॥ जे मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥ एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पचिंदिया ॥ ६ ॥ अभिहया वत्तिया लेसिया संघाइया सघट्टिया परियाविया ॥ किलामिया उद्दविया ठाणाउ ठाणं संकामिया जीवियाउ वव रोविया ॥ तस्स मिछामि डुक्कड ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ तस्स उत्तरी ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेणं ॥ पायछित्त करणेण ॥ विसोहीकरणेणं ॥ विसल्लीकरणेणं ॥ पावाणं क म्माण ॥ णिग्घायणठाए ॥ ठामि काउस्सग्गं ॥ ज॥

॥ न० ॥ सामायिक ठाउ ? गुरु कहे ठाएह ॥
॥ पीछे इछं कही खमासमण देइ थोडो जुकी
तीन नवकार गणी इछाकारेण संदिस्सह नग
वन् पसाउ करी सामायिक दम्क उच्चरावोजी ॥
गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीछें करेमि नंते सामाइ
य इत्यादि सामायिक सूत्र तीन वार उच्चरे ॥

॥ अथ सामायिकनु पच्चस्काण ॥

॥ करेमि नंते सामाइय, सावज्ज जोगं पच्च
स्कामि ॥ जावनियम पज्जुवासामि ॥ छुविह ति
विहेण मणेण वायाए काएण, न करेमि, न कार
वेमि, तस्स नंते पडिकमामि निंदामि गरिहा
मि अप्पाण वोसिरामि ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ पीछे खमासमण दे के इछाकारेण संदिस्सह
नगवन् इरियावहिय पडिक्कमामि ॥ गुरु कहे
पडिकमह पीछे इछ कही ॥ इछामि पडिक्कमिउं
इरियावहियाए इत्यादि पाठ कहे, सो लिखने हे॥

॥ १ ॥ उसन्न मजिञ्च च वंदे ॥ संनव मन्निणं
दणं च सुमइ च ॥ पउमप्पहं सुपासं ॥ जिणं च
चंदप्पहं वंदे ॥ श ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं ॥ सी
अल सिज्जंस वासुपुज्जं च ॥ विमल मणंत च
जिण ॥ धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अ
रं च मल्लिं ॥ वंदे मुणिसुवयं नमि जिण च ॥ वं
दामि रिठनेमिं ॥ पासं तह वद्धमाण च ॥ ४ ॥
एव मए अनियुआ ॥ विहुय रय मला पहीण
जरमरणा ॥ चउवीसपि जिणवरा ॥ तिञ्चयरा
मे पसीयतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया ॥ जे
ए लोगस्स उत्तमा सिका ॥ आरुग्ग बोहिला
न ॥ समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चदेसु नि
म्मलयरा ॥ आइच्चेस अहिय पयासयरा ॥

॥ अथ तस्स उत्तरी [illegible]

॥ तस्स उत्तरीकरणेण ॥ पायछित्त करणेण ॥
वि[illegible]हीकरणेणं ॥ विसल्लीकरणेणं ॥ पावाण क
म्[illegible]णिग्घायणठाए [illegible]मि काउस्सग्ग ॥ ७ ॥

॥ अथ अन्नत्थ ऊससिएण ॥

॥ अन्नत्थ ऊससिएण नीससिएण खासिएण छीएण जंभाइएण उड्डुएण वायनिसग्गेण भमलिए पित्तमुच्छाए॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं दिठ्ठिसंचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं ॥ अभग्गो अविराहिउ ॥ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ तावकाय ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥ इति ॥ ए॥ इहां चार नवकार अथवा एक लोगस्सको काउस्सग्ग करे पीछे णमो अरिहंताण कहे के काउस्सग्ग पारकें मुखसें प्रगट लोगस्स कहे, सो

भगवन् ईर्या

॥ अथ लोगस्स ॥

॥ लोगस्स उज्जोअगरे ॥ धम्म तिथ्थयरे जिणे ॥ अरिहंते कित्तइस्सं ॥ च० केवली

॥ अथ राई प्रतिक्रमणविधि प्रारंभ ॥

॥ प्रथम एक खमासमण दे के इछा० ॥भ०॥
त्यवदन करुं ? गुरु कहे करेह ॥ पछि इछ क
। जयउ सामि जयउ साmि इत्यादि कहे,सोही
लखते हैं ॥

॥ अथ सकलतीर्थंकरनमस्कारो लिख्यते ॥

। जयउ सामिय जयउ सामिय, रिसह सेत्तुंजि
उज्जंति ॥ पहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्चउरि मं
रूण ॥ १ ॥ भरुअच्छेह मुणिसुव्वय, महुरिपास
उह उरिय खंरूण॥ अवरविदेहिज तित्थयर,चि
हुंदिसि विदिसि ज केवि ॥ तीआणागय सपयं,
वंडु जिण सव्वेवि ॥ २ ॥

॥कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं पढम सघयणि
॥ उक्कोसउ सत्तरिसउ, जिणवराण विहरत ल
ब्भई ॥ नवकोडीहिं केवलिण, कोडि सहस्स न
व साहु संपइ॥ संपइ जिणवर वीस मुणि, विहु
कोडीहिं वरनाण ॥ समणह कोडी सहस्स दुई,

छ कहे के वली खमासमण दे कर ॥ इच्छा० ॥ भगवन् बेसणो ठाउं? गुरु कहे ठाएह ॥ फेर इछ कहे कें खमासमण दे कर इच्छा० ॥ भ० ॥ सिझाय सदिस्सावु? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पछिं इछं कहे के वली खमासमण दे कर इच्छा० ॥ भग० ॥ सिझाय करुं? गुरु कहे करेह ॥ फेर खमासमण दे के खडे हो कर आठ नवकार कह कर सझाय करे तथा जो शीतकालादि होवे तो खमासमण दे कें इच्छा० ॥ भ० ॥ पागरणो संदिस्सावु? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीछें इछं कह कर खमासमण दे कर इच्छा० ॥ भ० ॥ पांगरणो पडिग्गाउं? गुरु कहे पडिग्गाएह ॥ पछिं इछ कही वस्त्र ग्रहण करे तथा सामायिकवंत अथवा पोसासहित श्रावक वांदे तो "वंदामो" ऐसो कहे और जो कोई दूसरो वांदे तो, सिझाय करेह एसें कहे॥इति प्राभातिकसामायिक ॥

। ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं ॥ धम्मना
यगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरतचक्कव
ट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहय वरनाण दंसण धराणं,
विअट्ट छउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, ति
न्नाणं तारयाणं, बुद्धाण बोहयाणं, मुत्ताणं मो
अगाण ॥ ८ ॥ सवन्नूणं सवदरिसिण, सिव म
यल मरुअ मणंत मरकय मवाबाह मपुणरावि
त्ति ॥ सिद्धि गइ नामधेयं ॥ ठाण संपत्ताणं, न
मो जिणाणं, जिअ नयाणं ॥ ए ॥ जेअ अई
आ सिद्धा ॥ जेअ नविस्संति णागए काले ॥
संपइअ वट्टमाणा ॥ सवे तिविहेण वंदामि ॥ १३ ॥

॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

॥ जावंति चेइआइं ॥ उद्धेअ अहेअ तिरि
अ लोएअ ॥ सवाइं ताइं वंदे ॥ इहसंतो तछ
सताइ ॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ जावंत केवि साहू ॥

॥ नगवन् जावंत केवि साहू ॥ नरहेरवय म

थुणिऊण तिव्व विहाण॥ १ ॥सत्ताणवइ सहस्सा, लक्का उप्पन्न अठ कोडीउ ॥ चउसय गयासी या, तिल्लुके चेइए वदे ॥ २ ॥ वंदे नव कोडि स य, पणवीसं कोडि लक्क तेवन्ना ॥ अठावीस सहस्सा, चउसय अठासिया पडिमा ॥३॥११॥

॥ अथ जंकिंचि ॥

॥ ज किंचि नाम तिछ ॥ सग्गे पायाले मा णुसे लोए ॥ जाइं जिणबिंबाइं ॥ ताइं सवाइ वदामि ॥ १ ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ अथ नमुत्थुण वा शक्रस्तव ॥

॥ नमुत्थुणं अरिहताणं, नगवताणं ॥ १ ॥ आइगराण, तिछगराण, सय सबुद्धाण ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाण, पुरिससीहाण, पुरिसवरपुन्नरी आण, पुरिसवरगंधहवीण ॥३॥ लोगुत्तमाण, लोगनाहाणं, लोगहिआण, लोगपईवाण, लो गपज्जोअगराण ॥ ४ ॥ अनयदयाणं, चक्कुद याण ॥ मग्गदयाण, सरणदयाण, बोहिदयाण

॥ अथ जयवीअराय ॥

॥ जय वीअराय जगगुरु ॥ होउ मम तुह पभावउ नयव ॥ नवनिवेउ मग्गा, णुसारि आ इठ फलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धचाउ ॥ गुरुजणपूआ परढकरण च ॥ सुहगुरुजोगोत वय, ण सेवणा आभव मखंमा ॥ २ ॥ १७ ॥ ॥इत्यादि जयवीयराय पर्यंत चैत्यवंदन करे ॥ पीछे खमासमण दे के इछा० ॥ भ०॥ कुसुमिण दुसुमिण राई पायछित्त विसोहणढं काउस्सग्ग करु? गुरु कहे करेह पीछें इछं कह कर कुसुमि ण दुसुमिण राई पायछित विसोहणढं करेमि काउस्सग्गं॥अन्नढ ऊससिएणं॥ इत्यादि पाठ क हे कें सोले नवकार अथवा चार लोगस्सका चंदेसु निम्मलयरा पर्यंत चिंतन कर के काउ स्सग्ग करे॥पीछें णमो अरिहंताण कह कर का उस्सग्ग पारके मुखसें एक लोगस्सका पाठ प्र गट कहे जो रात्रिमे सुण सवधि मोटको दूषण

हाविदेहे अ ॥ सवेसि तेसि पणउ ॥ तिविहेण तिदम विरयाण ॥ १ ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ अथ परमेष्ठिनमस्कार ॥

॥ नमोऽर्हत्सिध्दाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्य ॥

॥ अथ उपसर्गहरस्तवन ॥

॥ उवसग्गहर पास ॥ पासं वंदामि कम्म घणमुक्क ॥ विसहरविसनिन्नास ॥ मगलकल्ला णआवास ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंतं ॥ कंठे धारेइ जो सया मणुउ ॥ तस्स गहरोगमारी ॥ डुठ जरा जंति उवसाम ॥ २ ॥ चिठउ दूरे मं तो ॥ तुव पणामो वि बहुफलो होइ ॥ नरतिरि एसुवि जीवा ॥ पावंति न डुस्क दोहग्ग ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लध्दे ॥ चिंतामणि कप्पपायवप्नहि ए ॥ पावति अविग्घेणं ॥ जीवा अयरामर ठा ण ॥ ४ ॥ इअ सथुउ महायस ॥ नत्तिप्नरनि प्नरेण हिअएण ॥ ता देव दिक्क बोहिं ॥ नवे नवे पासजिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ जयवीअराय ॥

॥ जय वीअराय जगगुरु ॥ होउ ममं तुह
प्नावर्ड भयवं ॥ भवनिवेउ मग्गा, णुसारि
आ इठ फलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धचाउ ॥
गुरुजणपूआ परत्नकरण च ॥ सुहगुरुजोगोत
वय, ए सेवणा आभव मखंमा ॥ २ ॥ १७ ॥
॥इत्यादि जयवीयराय पर्यंत चैत्यवंदन करे ॥
पीछे खमासमण दे के इछा० ॥ भ०॥ कुसुमिए
डुसुमिण राई पायछित्त विसोहणढं काउस्सग्ग
करु ? गुरु कहे करेह. पीछें इछं कह कर कुसुमि
ए डुसुमिण राई पायछित विसोहणढं करेमि
काउस्सग्गं॥अन्नछ उससिएणं॥ इत्यादि पाठ क
हे के सोले नवकार अथवा चार लोगस्सका
चदेसु निम्मलयरा पर्यंत चिंतन कर कें काउ
स्सग्ग करो॥पीछे णमो अरिहंताण कह कर का
उस्सग्ग पारीके मुखसें एक लोगस्सका पाठ प्र
गट कहे जो रात्रिमें गुण संबंधि मोटको दूषण

लागो होवे तो काउस्सग्गमांहे ॥ सागरवरगं भीरा ॥ पर्यंत चिंतवे ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अब पडिक्कमणां ठायवेका अवसर हुवा॥ जब खमासमण देइ श्रीआचार्यजी मिश्र कहि के वांदीयें ॥१॥ खमासमण देई श्रीउपाध्यायजी मिश्र कहि कें वांदीयें ॥ २ ॥ खमासमण देइ जंगम युगप्रधान वर्त्तमान भट्टारक श्रीपूज्यजीका नाम ले कें वांदीये ॥ ३ ॥ खमासमण देई कें सर्व साधुजीकु वांदीयें ॥ ४ ॥ इस तरे चार खमासमणसें पडिक्कमणा ठावी गोमालीयें वैठ के मस्तक नमाय कर दोनु हाथे मुहपत्ती मुहडे दे कर॥सबस्सविराइय॥इत्यादि पाठ कहे परतु इच्छाकारेणसदिस्सह इत्तं इस माफक न कहे

॥ अथ सबस्सवि ॥

॥ सबस्सवि देवसिअ दुच्चिंतिअ दुभासिय दुच्चिठिअ इच्छाकारेण

स्स मिच्छा मि डुक्कडं ॥ इति ॥ १८ ॥ सबेरका वसिके ठिकाने राइयं ऐसा पाठ कहे ॥ ॥ पीछे नमुत्थुण कह कें खडा होय कें ॥ करेमि भंते सामाइयं सावधं जोगं पच्चक्खामि ॥ इत्यादिक पाठ कहे ॥ पीछे इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे राइउ० ॥ यह पाठ कहे, सो लिखते है ॥

॥ अथ इच्छामि ठामि ॥

॥ इच्छामि ठामि काउस्सग्गं ॥ जो मे देवसिउ अइआरो कउ ॥ काइउ वाइउ माणसिउ ॥ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो ॥ अकरणिज्जो ॥ दुज्झाउ ॥ डुविचिंतिउ अणायारो ॥ अणिच्छिअव्वो ॥ असावगपाउग्गो ॥ नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते ॥ सुए सामाइए ॥ तिन्हं गुत्तीणं ॥ चउन्हं कसायाण ॥ पंचन्हमणुव्वयाणं ॥ तिन्हं गुणव्वयाणं ॥ चउन्हं सिक्खावयाणं ॥ बारसविहस्स सावगधम्मस्स ॥ ज खण्डिअं जं विराहिअं ॥ तस्स मि

ज्ञागो होवे तो काउस्सग्गमांहे ॥ सागरवरगं नीरा ॥ पर्यंत चिंतवे ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अब पडिक्कमणां ठायवेका अवसर हुवा॥ जब खमासमण देइ श्रीआचार्यजी मिश्र कहि के वादीये ॥१॥ खमासमण देई श्रीउपाध्यायजी मिश्र कहि कें वादीये ॥ २ ॥ खमासमण देइ जंगम युगप्रधान वर्त्तमान भट्टारक श्रीपूज्यजीका नाम ले कें वादीयें ॥ ३ ॥ खमासमण देई कें सर्व साधुजीकुं वादीयें ॥ ४ ॥ इस तरे चार खमासमणसें पडिक्कमणा ठावी गोमालीयें बेठ के मस्तक नमाय कर दोनु हाथे मुहपत्ती मुहडे दे कर॥सबस्सविराइय॥इत्यादि पाठ कहे परंतु इछाकारेणसदिस्सह इर्छ इस माफक न कहे

॥ अथ सबस्सवि ॥

॥सबस्सवि देवसिअ दुचिंतिअ दुभासिय दु च्चिठिअ इछाकारेण संदिस्सह भगवन इछं०

स्स मिछा मि डुक्कडं ॥ इति ॥ १८ ॥ सवेरका वसिके ठिकाने राइयं ऐसा पाठ कहे ॥ ॥ पीछें नमुत्थुण कह कें खडा होय कें ॥ करेमि नंते सामाइयं सावद्यं जोगं पच्चरकामि ॥ इत्यादिक पाठ कहे ॥ पीछे इछामि ठामि काउस्सग्गं जो मे राइउ० ॥ यह पाठ कहे, सो लिखते है ॥

॥ अथ इछामि ठामि ॥

॥ इछामि ठामि काउस्सग्गं ॥ जोमे देवसिउ अइआरो कउ ॥ काइउ वाइउ माणसिउ ॥ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो ॥ अकरणिज्जो ॥ डुझाउ ॥ डुविचिंतिउ अणायारो ॥ अणिछिअव्वो ॥ असावगपाउग्गो ॥ नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते ॥ सुए सामाइए ॥ तिन्हं गुत्तीणं ॥ चउन्हं कसायाणं ॥ पंचन्हमणुव्वयाणं ॥ तिन्हं गुणवयाणं ॥ चउन्ह सिरकावयाणं ॥ वारसविहस्स सावगधम्मस्स ॥ जं खम्डिअं जं विराहिअं ॥ तस्स मि

लागो होवे तो काउस्सग्गमाहे ॥ सागरवरगं
भीरा ॥ पर्यंत चिंतवे ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अथ पडिक्कमणां ठायवेका अवसर हुवा॥
जब खमासमण देइ श्रीआचार्यजी मिश्र क
हि कें वांदीये ॥१॥ खमासमण देई श्रीउपाध्या
यजी मिश्र कहि कें वांदीये ॥ २ ॥ खमासमण
देइ जगम युगप्रधान वर्त्तमान भट्टारक श्रीपू
ज्यजीका नाम ले कें वांदीयें ॥ ३ ॥ खमासमण
देई कें सर्व साधुजीकु वांदीयें ॥ ४ ॥ इस तरे
चार खमासमणसें पडिक्कमणा ठावी गोमालीयें
बैठ के मस्तक नमाय कर दोनु हाथे मुहपत्ती मु
हडे दे कर॥सव्वस्सविराइय॥इत्यादि पाठ कहे.
परतु इछाकारेणसदिस्सह इछं इस माफक न कहे

॥ अथ सव्वस्सवि ॥

॥ सव्वस्सवि देवसिअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिय दु
च्चिठिअ इछाकारेण सदिस्सह भगवन् इछं०

शुद्धि निमित्त पुक्खरवरदी०॥ सुयस्स नगवडंक रेमि काउस्सग्गं॥इत्यादि पाठ कहे,सोलिखते हैं

॥ अथ पुक्खरवरदी ॥

॥ पुक्खरवरदीवढे, घायइसंमे अ जबुदीवे अ ॥ नरहे रवय विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपमलविं्द, सणस्स सुरगणनरिंदमहिअस्स ॥ सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ मोहजालस्स ॥ २ ॥ जाई जरामरण सोगपणासणस्स, कल्लाण पुक्खलविसालसुहावहस्स ॥ को देवदाणव नरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सार मुवलप्न करे पमाय ॥ ३ ॥ सिद्धे नो पयउ णमो जिणमए, नदी सया सजमे ॥ देव नाग सुवन्न किन्नर गण, स्सप्नूअ नावच्चिए॥ लोगो जत्र पइठिउ जगमिण, तेलुकमच्चासुरं ॥ धम्मो वढउ सासउ विजयउ, धम्मुत्तरं वढउ ॥४॥ इति ॥२१॥ सुअस्स नगवउ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए० ॥ ए पाव पूर्ण कह

च्छा मि डुक्कड ॥ इति ॥ इहां देवसियंके ठिकानें राइयं कहेनां ॥ इति ॥ १९ ॥

॥ पीछे तस्सुत्तरी०॥ अन्नत्थ ऊससिएणं कह क र चारित्रशुद्धि निमित्त चार नवकार अथवा प क लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारि के दर्शन शुद्धि निमित्तें प्रगट लोगस्स कही सव्वलोए अरिहंत चेइआणं ॥ करेमि काउस्सग्गं वंदण त्तिआए ॥ इत्यादि कहनां, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ वंदणवत्तिआए ॥

॥ वंदणवत्तिआए, पूअण वत्तिआए ॥ सक्का र वत्तिआए, सम्माण वत्तिआए ॥ बोहिलाभ वत्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए ॥ १ ॥ स द्धाए मेहाए धीईए ॥ धारणाए अणुप्पेहाए ॥ वढ्ढमाणीए ठामि काउस्सग्ग ॥२॥ इति ॥ २०॥

॥ पीछे अन्नत्थ०कही चार नवकार अथवा एक लोगस्सका काउस्सग्ग करके पार के ज्ञानाचार

॥ अथ वेयावच्चगराण ॥

॥ वेयावच्चगराणं संतिगराणं ॥ सम्मदिठि समाहिगराणं ॥ इति ॥ करेमि काउस्सग्ग ॥ अन्नत्थ० ॥ इति ॥ २३ ॥

॥ पीछे संमासा प्रमार्जन पूर्वक बैठ के तीसरे आवस्सग सूत्र वादणा निमित्ते मुहपत्ती पडिले हु ? गुरु कहे पडिलेएह ॥ मुहपत्ती पडिलेहे. पीछे वादणा दे. तिनका विधि कहते हैं ॥

॥ अवग्रहके बाहिर उना हूआ आधा नीचा नम कर इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जा ए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं. इत ना पाठ कह कर नूमि प्रमार्जन करता हूआ नि सीहि कह के कछुक अवग्रहमें प्रवेश कर के सं मासा प्रमार्जन कर के उकड बेठ के मावे हाथमें मुहपत्ति ले कें मावे कानसें ले कें जिमणा कान पर्यंत निलाड पुजी, मुहपत्ती आगें रख के ति सके मध्य नागमे गुरुचरणकी कल्पना क

कर अन्नत्थूससिएणं कह के आठ नवकार अ थवा दो लोगस्सका काउस्सग्ग करे. काउस्स ग्गके माहे आतुणा चार प्रहर चितवे सो आगें लिखेंगे पीछे सिन्धाणं बुन्धाणंका पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सिन्धाणं बुन्धाण ॥

॥ सिन्धाण बुन्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ॥ लोअग्ग मुवगयाणं, नमो सया सवसिन्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमं संति ॥ त देव देव महिअं, सिरसा वंदे महावी रं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वन्धमाणस्स ॥ संसारसागराउ, तारेइ नरं व ना रिं वा ॥ ३ ॥ उर्क्कित सेल सिहरे, दिस्का नाणं निसीहिआ जस्स ॥ तं धम्मचक्कवहिं, अरिठ नेमिं नमसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ दस दो, य वंदिया जिणवरा चउवीस ॥ परमठ निठिअठा, सिन्धा सिन्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति ॥ २७ ॥

॥ अथ वेयावच्चगराण ॥

॥ वेयावच्चगराणं संतिगराणं ॥ सम्मदिठि समाहिगराएं ॥ इति ॥ करेमि काउस्सग्ग ॥ अन्नत्थ० ॥ इति ॥ ৫३ ॥

॥ पीछें संमासा प्रमार्जन पुर्वक बैठ कें तीसरे आवस्सग सूत्र वादणा निमित्तें मुहपत्ती पडिले हुं ? गुरु कहे पडिलेएह ॥ मुहपत्ती पडिलेहे. पीछे वादणां दे तिनका विधि कहते है ॥

॥ अवग्रहके बाहिर उना हूआ आधा नीचा नम कर इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जा ए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं इत ना पाठ कह कर भूमि प्रमार्जन करता हूआ नि सीहि कह के कछुक अवग्रहमें प्रवेश कर कें सं मासा प्रमार्जन कर कें उक्कड बेठ के भावे हाथमें मुहपत्ति ले के मावे कानसें ले कें जिमणा कान पर्यंत निल्लाड पुंजी, मुहपत्ती आगें रख के ति सके मध्य भागमे गुरुचरणकी कल्पना क

कर अन्नत्थूससिएण कह के आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका काउस्सग्ग करे काउस्सग्गके माहे आजुणा चार प्रहर चिंतवे सो आगें लिखेंगे पीछे सिद्धाण बुद्धाणंका पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सिद्धाण बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाण बुद्धाणं, पारगयाण परंपरगयाणं ॥ लोअग्ग मुवगयाण, नमो सया सवसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणवि देवो, ज देवा पंजली नमं संति ॥ त देव देव महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ॥ संसारसागराउ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥ उज्जित सेल सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स ॥ तं धम्मचक्कवर्ट्टि, अरिठ नेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ दस दो, य वंदिया जिणवरा चउवीसं ॥ परमठ निठिअठा, सिद्धा सिर्द्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ अथ वेयावच्चगराण ॥

॥ वेयावच्चगराण संतिगराणं ॥ सम्मदिठि समाहिगराण ॥ इति ॥ करेमि काउस्सग्ग ॥ अन्नछ० ॥ इति ॥ २३ ॥

॥ पीछें संडासा प्रमार्जन पुर्वक बेठ कें तीसरे आवस्सग सुत्र वांदणा निमित्ते मुहपत्ती पडिले हुं ? गुरु कहे पडिलेएह ॥ मुहपत्ती पडिलेहे. पीछें वांदणा दे तिनका विधि कहते है ॥

॥ अवग्रहके बाहिर उना हूआ आधा नीचा नम कर इछामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जा ए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं. इत ना पाठ कह कर भूमि प्रमार्जन करता हूआ नि सीहि कह कें कबुक अवग्रहमें प्रवेश कर कें सं डासा प्रमार्जन कर कें उकडु बेठ कें डावे हाथमें मुहपत्ति ले के डावे कानसें ले कें जिमणा कान पर्यंत निल्लाड पूजी, मुहपत्ती आगें रख के ति सके मध्य भागमे गुरुचरणकी कल्पना क

र के ॥ अहो काय इत्यादि आवर्त्त कर के कञ्क नीचा नम कर मस्तकें अजलि कर कें गुरु सन्मु ख दृष्टि स्थापन कर के ॥ खमणिज्जो ने किला मो ॥ इत्यादि पाठ कहे पीठे फेर ॥ जत्ता भे ॥ इत्यादि आवर्तन कर कें खडा होकें पीठे पगसें जूमि पूंजता हूआ अवग्रहसें वाहिर निकलकें स्वस्थान पर आवे जहां ॥ आवस्सियाए ॥ इत्यादि पाठ सर्व कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सुगुरुवांदणा ॥

॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहिआए ॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं निसी हि ॥ अहो कायं काय संफासं, खमणिज्जो भे किलामो ॥ अप्पकिलंताण बहु सुभेण भे, दि वसो वइक्कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे, खामे मि खमासमणो ॥ देवसिअं वइक्कम्मं आवसि आए, पडिक्कमामि खमासमणाणं ॥ देवसिआ ए, आसायणाए ॥ तित्तीसन्नयराए जं किंचि मि

च्चाए, मणडुक्कडाए वयडुक्कडाए, कायडुक्कडाए कोहाए, माणाए, मायाए, लोजाए, सवकालि आए, सव मिलोवयाराए, सवधम्माइक्कमणा ए ॥ आसायणाए जो मे अइआरो कउ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि ॥ निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥ १ ॥ दूजी वारके वांदणें आवसिआए ए पद न कहेना, अने राइये राइउ वइक्कंतो, तथा चउमासीयें चउमासीउ वइ क्कंतो, पक्खीयें पक्खो वइक्कंतो, संवछरीये संवछ रीउ वइक्कतो ॥ एसीतरें पाठ कहेनां ॥ इति ॥ २४ ॥

॥ अथ देवसियं आलोउ ॥

॥ इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् देवसिय आलोउ इच्छ ॥ आलोएमि, जो मे० ॥ इति ॥ २५ ॥ देवसियके ठिकाने राइय कहेनां ॥

॥ पीछें रात्रि संबंधि अतिचार गुरु समक्ष आलोवे, सो कहेते हे ॥

र के॥ अहो कायं इत्यादि आवर्त्त कर के कञुक नीचा नम कर मस्तकें अजलि कर कें गुरु सन्मुख दृष्टि स्थापन कर के॥ खमणिज्जो भे किलामो॥ इत्यादि पाठ कहे पीछे फेर॥ जत्ता भे॥ इत्यादि आवर्तन कर कें खडा होके पीछे पगसें भूमि पूजता हूआ अवग्रहसें बाहिर निकलके स्वस्थान पर आवे जहा॥ आवस्सियाए॥ इत्यादि पाठ सर्व कहे, सो लिखते है॥

॥ अथ सुगुरुवांदणां॥

॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहिआए॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि॥ अहो कायं काय संफासं, खमणिज्जो भे किलामो॥ अप्पकिलंताण बहु सुभेण भे, दिवसो वइक्कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे, खामेमि खमासमणो॥ देवसिअं वइक्कम्मं आवसिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं॥ देवसिआए, आसायणाए॥ तित्तीसन्नयराए जं किंचि मि

क्रोध ॥ ६ ॥ मान ॥ ७ ॥ माया ॥ ८ ॥ लोभ ॥ ए ॥ राग ॥१०॥ द्वेष ॥११॥ कलह ॥ १२ ॥ अभ्याख्यान ॥ १३ ॥ पैशुन्य ॥ १४ ॥ रति ॥ अरति ॥ १५ ॥ परपरिवाद ॥ १६ ॥ मायामृषावाद ॥ १७ ॥ मिथ्यात्वशल्य ॥ १८ ॥ ए अढारे पापस्थानक सेव्या होय, सेवराव्यां होय, सेवता प्रत्यें भला जाण्या होय, ते सवे हु मनें, वचनें, कायायें करी तस्स मिछा मि डुक्कडं॥

॥ ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकरवाली, देव गुरु धर्मकी आशातना करी होय॥ पन्नरे कर्मादानोकी आसेवना करी होय॥ राजकथा,देशकथा, स्त्रीकथा, भक्तकथा करी होय और जो कोइ पाप परनिंदा कीधु होय, कराव्यु होय, करता अनुमोद्यु होय सो सर्व मन, वचन,कायाये कर के, दिवस अतिचार आलोयणो कर कें पडिक्कमणामें आलोउं॥ तस्स मिछा मि डुक्कड॥इति आलो

॥ अथ आलोयण लिख्यते ॥

॥ आजुणा चार प्रहर दिवसमें जे में जीव विराध्या होय ॥ सात लाख पृथिवीकाय ॥ सात लाख अप्पकाय ॥ सात लाख तेउकाय ॥ सात लाख वाउकाय ॥ दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय ॥ चउदे लाख साधारण वनस्पतिकाय ॥ दोय लाख बेइन्द्रिय ॥ दोय लाख तेंद्रिय ॥ दोय लाख चौरिंद्रिय ॥ चार लाख देवता ॥ चार लाख नारकी ॥ चार लाख तिर्यंच पचेंद्रिय ॥ चउदे लाख मनुष्य ॥ एव चार गतिके चौरा[illegible]नमं, माहारे जीवें जे [illegible] जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणता प्रत्यें भलो जाण्यो होय, ते सवे हुं मन वचन कायायें करी मिछा मि डुक्कडं ॥ इति ॥ २६ ॥

॥ अथ अढारे पापस्थानक आलोव ॥

॥ प्राणातिपात ॥ १ ॥ मृषावाद ॥ २ ॥ अदत्तादान ॥ ३ ॥ मैथुन ॥ ४ ॥ परिग्रह ॥

क्रोध ॥ ६ ॥ मान ॥ ७ ॥ माया ॥ ८ ॥ लोभ ॥ ए ॥ राग ॥१०॥ द्वेष ॥११॥ कलह ॥ १२ ॥ अभ्याख्यान ॥ १३ ॥ पैशुन्य ॥ १४ ॥ रति ॥ अरति ॥ १५ ॥ परपरिवाद ॥ १६ ॥ मायामृ षावाद ॥ १७ ॥ मिथ्यात्वशल्य ॥ १८ ॥ ए अ ढारे पापस्थानक सेव्यां होय, सेवराव्यां होय, सेवता प्रत्यें नला जाण्यां होय, ते सवे हुं म नें, वचनें, कायायें करी तस्स मिछा मि डुक्कडं॥

॥ ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठव णी, कवली, नवकरवाली, देव गुरु धर्मकी आ शातना करी होय॥ पन्नरे कर्मादानोकी आसे वना करी होय॥ राजकथा,देशकथा, स्त्रीकथा, नक्तकथा करी होय और जो कोइ पाप पर निंदा कीधुं होय, कराव्युं होय, करतां अनुमो द्युं होय सो सर्व मन, वचन,कायाये कर के, दि वस अतिचार आलोयणे कर कें पडिक्कमणार्मे आलोवं॥ तस्स मिछा मि डुक्कड॥इति आलो

यण ॥ इहां प्रभातके पडिक्कमणेमें दिवसके
ठिकाने रात्रिका पाठ कहेना ॥ इति ॥ ९८ ॥
॥ पीछें सव्वस्सवि राइय ॥ इत्यादि पाठ कहे.
तिहां इच्छाका० ॥ भ० ॥ ए पद कहनेसे आलो
या हुआ अतिचारका प्रायश्चित्त मागे ॥ गुरु
कहे पडिक्कमह ॥ पीछे इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्क
डं कहके समासा प्रमार्जन करके आसन पर
बैठ कें जिमणा गोडा ऊंचा रख के डावा गोडा
नीचें कर कें ऐसें कहे कि भगवन्! सूत्र भणुं? तब
गुरु कहे भणेह ॥ पीछें इच्छ कहि कें तीन नवकार
अरु तीन वार करेमि भंते॥भण कें इच्छामि पडिक्क
मिउ जो मे राइउ इत्यादि कह कर॥ तं निंदे तं
च गरिहामि पर्यंत वंदित्तु सूत्र कहे सो लिखते
है ॥ पीछें खडा हो कें अ्ब्भु [illegible] आराहणाए
इत्यादि सपूर्ण कहे,

र ॥ इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआर स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंस ए चरित्ते अ ॥ सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहंमि, साव ज्जे बहुविहे अ आरम्भे ॥ कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देवसिय सव्वं ॥ ३ ॥ जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं ॥ रागेण व दोसे ण व, त निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगम णे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे ॥ अ भिओगे अ निओगे, पडिक्कमे० ॥ ५ ॥ संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ॥ सम्म त्तस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ ६ ॥ छक्काय समारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा ॥ अत्तट्ठाय पर ट्ठा, उभयट्ठा चेव त निंदे ॥ ७ ॥ पंचण्हमणु व्वयाणं, गुणव्वयाण च तिण्हं मइयारे ॥ सिक्खा ण च चउण्हं, पडिक्कमे० ॥ ८ ॥ पढमे अणुव्व यमि, थूलग पाणाइवाय विरईउ ॥ आयरिअ

यण ॥ इहां प्रभातके पडिक्कमणेमे दिवसके ठिकाने रात्रिका पाठ कहेना ॥ इति ॥ २८ ॥

॥ पीछे सव्वस्सवि राइय॥ इत्यादि पाठ कहे. तिहां इच्छाकार ॥ भ० ॥ ए पद कहनेसे आलो या हुआ अतिचारका प्रायश्चित्त मागे ॥ गुरु कहे पडिक्कमह ॥ पीछे इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं कह के संभासा प्रमार्जन कर के आसन पर बैठ कें जिमणा गोडा ऊंचा रख के मावा गोडा नीचें कर कें ऐसें कहे कि भगवन्! सूत्र भणुं? तब गुरु कहे भणेह॥ पीछे इच्छं कहि कें तीन नवकार अरु तीन वार करेमि भंते॥ भण कें इच्छामि पडिक्कमिउ जो मे राइउ इत्यादि कह कर॥ त निंदे तं च गरिहामि पर्यंत वंदित्तु सूत्र कहे सो लिखते है ॥ पीछें खडा हो कें अब्भुठ्ठिओमि आराहणाए इत्यादि सपूर्ण कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रावक वंदितासूत्र ॥

॥ वंदित्तु सव्व सिद्धे, धम्मायरिए अ

॥ १७ ॥ धण धन्न खित्त वत्थू, रुप्प सुवन्ने कुविअ परिमाणे ॥ दुपए चउप्पयंमि, पडि क्क० ॥ १८ ॥ गमणस्स य परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहेअ तिरिअं च ॥ वुड्ढिसइअंतरद्धा, पढ मि गुणवए निंदे ॥ १ए ॥ मज्जंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ॥ उवभोग प रिभोगे, बीयमि गुणवए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते पडिबद्धे, अपोल दुप्पोलिअं च आहारे ॥ तु च्छोसहि भरकणया, पडिक्कमे० ॥ २१ ॥ इंगाली वणसाडी, भाडी फोडी सुवज्जए कम्मं ॥ वाणि ज्जं चेव दं, त लक्क रस केस विसविसयं ॥ ॥ २२ ॥ एवं खु जतपिल्लण, कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं ॥ सरदह तलाव सोस, असई पोसं च वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्थग्गि मुसल जंतग, तण कट्ठे मत मूल भेसज्जे ॥ दिन्ने दवाविएवा, पडि क्कमे० ॥ २४ ॥ न्हाणु वट्टण वन्नग, विलेवणे सद्दरूव रस गंधे ॥ वत्थासण आभरणे, पडिक्क

मप्पसढे, इअ पमायप्पसगेण ॥८॥ वह बंध छ विछेए, अइ भारे भत्त पाण वुछेए ॥ पढमं व यस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ १० ॥ बीए अणुवयं मि,परिथूलगअलिअ वयण विरईउ॥आयरि अमप्पसढे, इअ पमायप्पसंगेण ॥ ११ ॥ सह सा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ ॥ बीयं वयस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ १२ ॥ तइए अणुवयमि, थूलग परदव्वहरण विरईउ ॥ आ यरिअ मप्पसढे, इअ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहडप्पउंगे, तप्पडिरूवे विरुद्ध गमणे अ ॥ कूडतुल कूडमाणे, पडिक्कमे० ॥ १४ ॥ चउछे अणुवयमि, निच्च परदारगमण विरइउ ॥ आ यरिअ मप्पसढे, इअ पमायप्पसगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर,अणंग वीवाह तिव्व अ णुरागे ॥ चउछ वयस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ ॥ १६॥ इत्तो अणुवए प, चमंमि आयरिअ म प्पसढमि ॥ परिमाण परिछेए, इअ पमायप्पसं

गे ॥ पंचविहो अइआरो, मा मह हुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए ॥ मणसा माणसिअस्स, सवस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवय सिरकागा, रवेसु सन्ना कसाय दंडेसु ॥ गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्मदिठी जीवो, जइ विहुपाव समायरे किंचि ॥ अप्पोसि होइ बंधो, जेण न निद्धंधस कुणइ ॥ ३६ ॥ तं पिहुसपडिक्कमणं, सप्परिआव सउत्तरगुणं च ॥ खिप्पं उवसामेइ, वाहिव सुसिक्खिउ विज्जो ॥ ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुठगय, मत मूल विसार या ॥ विज्जा हणति मंतेहिं, तो तं हवइ निविसं ॥ ३८ ॥ एवं अठविहं कम्मं, राग दोस सम ज्जिअ ॥ आलोयंतो अ निंदंतो, खिप्प हणइ सुसावउ ॥ ३९ ॥ कय पावोवि मणुस्सो, आलोइअ निंदिय गुरुसगासे ॥ होइ अइरेग लहुउ, उहरिअ भरुव भारवहो ॥ ४०॥ आवस्स

मे० ॥ २५ ॥ कटप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगर
ए जोग अइरित्ते ॥ दंमंमि अणठाए, तइयंमि
गुणवए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे डुप्पणिहाणे, अ
णवठाणे तहा सइ विहूणे ॥ सामाइअ वितह
कए, पढमे सिरकावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे
पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलरकेवे ॥ देसावगा
सियमि, वीए सिरकावए निंदे ॥ २८ ॥ सथा
रुच्चारविही, पमाय तह चेव जोयणाजोए ॥ पो
सह विहि विवरीए, तइए सिरकावए निंदे ॥
॥ २९ ॥ सच्चित्ते निरिकवणे, पिहिणे ववएस म
च्छरे चेव ॥ कालाइक्कम दाणे, चउडे सिरकावए
निंदे ॥ ३० ॥ सुहिए सुअ डुहिए सुअ, जामे
असजएसु अणुकपा ॥ रागेणव दोसेणव, तं
निंदे त च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु सविभा
गो, न कउ तव चरण करण जुत्तेसु ॥ संते फासु
अ दाणे, त निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इह
लोए परलोए, जीविअ मरणे अ आसंस पञ

मे सव्वजूएसु, वेरं मज्जं न केणइ ॥ ४ए ॥ एव म
हं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ ङुगंछिअ स
म्मं ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वी
स ॥५०॥ इति ॥१ए॥ इहां प्रजातके पडिक्कमण
में देवसिके ठीकाने राइय कहना ॥

पीछे दो वादणा देकर अवग्रहमांहियकोज
कहे ॥ इछाका०॥स०॥ज०॥अप्नुठिउमि अप्निंत
र ॥ राइय खामेमि ? गुरु कहे खामेह ॥ संमा
सा प्रमार्जन पूर्वक गोमाली बेठ के, वे वाह प
डिलेहि ॥ मुहपत्ती वामहाथसु मुखे देई, दक्खि
ण हाथ गुरु सामो करी ॥ नीचो नम्यो थको जं
किंचि अप्पत्तिय ॥ इत्यादि संपूर्ण कहे ॥

॥ अथ अप्नुठिउ ॥

॥ इछाकारेण सदिस्सह जगवन् अप्नुठिउमि
अप्निंतर देवसिउ खामेउ ॥ इछं खामेमि देवसिय
जंकिंचि अप्पत्तिय ॥ परप्पत्तिय जत्ते पाणे विणए
वेआवच्चे आलावे संलावे उच्चासणे ॥ समासणे

एण एएण, सावउ जइवि बहुरउ होइ ॥ उवस
ण मत्त किरिअ, काही अचिरेण कालेण ॥
॥ ४१ ॥ आलोअणा बहुविहा, नयसंभरिआ
पडिक्कमणकाले ॥ मूल गुण उत्तरगुणे, त निंदि
त च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवलि
पन्नत्तस्स ॥ अब्भुट्ठिओमि आरा, हणाए विरउ
मि विराहणाए ॥ तिविहेण पडिक्कतो, वंदामि
जिणे चउवीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआई० ॥
॥ ४४ ॥ जावंत केवि साहू० ॥ ४५ ॥ चिर सं
चिय पाव पणासणीइ, भवसयसहस्स महणीए
॥ चउवीस जिण विणिग्गय कहाइं, वोलंतु मे
दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगल मरिहंता, सिद्धा
साहु सुअं च धम्मो अ ॥ सम्मद्दिट्ठी देवा, दिं
तु समाहिं च बोहिं च ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाणं
करणे, किच्चाण मकरणे पडिक्कमणे ॥ असद्दह
णे अ तहा, विवरीय परूवणाए अ ॥ ४८ ॥
खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे ॥ मित्ती

मे सवनूएसु, वेरं मज्कं न केणइ ॥ ४ए॥ एव म
हं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ डुगंछिअं स
म्म ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउवी
सं ॥५०॥ इति ॥२ए॥ इहा प्रनातके पडिकमण
में देवसिके ठीकाने राइय कहना ॥

पीछे दो वादणा दे कर अवग्रहमाहियकोज
कहे ॥ इछाका०॥स०॥न०॥अप्नुछिउमि अप्नित
र ॥ राइय खामेमि ? गुरु कहे खामेह ॥ सम्म
सा प्रमार्जन पूर्वक गोमाली बेठ के, बे बाह प
डिलेहि ॥ मुहपत्ती वामहाथसुं मुखे देई, दक्षि
ण हाथ गुरु सामो करी॥ नीचो नम्यो थको जं
किंचि अप्पत्तिय ॥ इत्यादि संपूर्ण कहे ॥

॥ अथ अप्नुछिउ ॥

॥ इछाकारेण सदिस्सह नगवन् अप्नुछिउमि
अप्निंतर देवसिउं खामेउं ॥ इछं खामेमि देवसिय
जंकिंचि अप्पत्तिय ॥ परप्पत्तिय नत्ते पाणे विणए
वेआवच्चे आलावे सलावे उच्चासणे ॥ समासणे

अतरभासाए उवरिभासाए ॥ जं किंचि ॥ मक विणय परिहीणसुहुम वा वायर वा॥तुझे जाणह अह न जाणामि ॥ तस्स मिछामि डुक्कडं ॥इति॥

॥ इहां गुरु पण मिछामि डुक्कडं कहे पीछे वे वांदणा देई नूमि प्रमार्जन करता हुआ पगसे अवग्रह बाहिर आय कें आयरिय उवझाए इत्यादि तीन गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ आयरिय उवझाए ॥

॥ आयरिअ उवझाए, सीसे साहमीए कुल गणे अ ॥ जे मे कया कसाया, सबे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सबस्स समण संघस्स, नगवउ अजलि करिअ सीसे ॥ सबं खमावइत्ता, खमामि सबस्स अहयपि ॥ २ ॥ सबस्स जीवरासिस्स, नावउ धम्मो निहिअ निअ चित्ते ॥ सब खमावइत्ता, खमामि सबस्स अहयपि ॥ ३ ॥

पीछें करेमि नं ते इछामि ठामि काउस्सगं तस्सुत्तरी० ॥ श्रीमहावीर

चिंतवणा निमित्त करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थू० ॥ कहि के काउस्सग्ग करे, काउस्सग्गमें श्रीवीरकृत छम्मासी तप चिंतवन करे ॥ चोवीश नवकार अथवा छ लोगस्सका काउस्सग्ग करे, काउस्सग्ग पारिकें प्रगट लोगस्स कहे ॥

॥ छठे आवश्यककी मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेह ॥ मुहपत्ती पडिलेहीवे वांदणा देई सकल तीर्थनाम लइ नमस्कार करे, सो लिखेहैं.

॥ अथ सकल तीर्थ नमस्कार ॥

॥ स्रग्धरा वृत्तम् ॥

॥ सद्भक्त्या देवलोके रविशशिभवने, व्यंतराणां निकाये, नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारकाणां विमाने ॥ पाताले पन्नगेंद्रे स्फुटमणिकिरणे ध्वस्तसांद्रांधकारे, श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ॥ १ ॥ वैताढ्ये मेरुशृंगे रुचकगिरिवरे कुंडले हस्तिदंते, वक्षारे कूटनंदीश्वरकनकगिरौ नैषधे नीलवंते ॥ चैत्रे

अंतरनासाए उवरिनासाए ॥ ज किंचि ॥ मज विणय परिहीण सुहुम वा बायर वा॥तुब्भे जाणह अहं न जाणामि ॥ तस्स मिछामि ङुकडं ॥इति॥

॥ इहां गुरु पण मिछामि ङुकडं कहे पीछे वे वांदणा देई नूमि प्रमार्जन करता हुआ पगसे अवग्रह बाहिर आय के आयरिय उवज्झाए इत्यादि तीन गाथा कहे, सो लिखते हे ॥

॥ अथ आयरिय उवज्झाए ॥

॥ आयरिअ उवज्झाए, सीसे साहमीए कुल गणे अ ॥ जे मे कया कसाया, सब्बे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स समण संघस्स, नगवउ अजलि करिअ सीसे ॥ सब्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयपि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीवरासिस्स, नावउ धम्मो निहिअ निअ चित्ते ॥ सव्वं खमा वइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयपि ॥ ३ ॥

पीछे करेमि न ते इछामि ठामि काउस्सग्ग तस्सुत्तरी० ॥ श्रीमहावीर स्वामी क्षमासि तप

चोज्जयिन्या, कौशाम्ब्यां कोशलाया कनकपुरव
रे देवगिर्यां च काश्या ॥ रासक्ये राजगेहे द
शपुरनगरे भद्दिले ताम्रलिप्त्यां ॥ श्री० ॥ ७ ॥
स्वर्गे मर्त्येऽन्तरिक्षे गिरिशिखरहृदे स्वर्णदीनीर
तीरे, शैलाग्रे नागलोके जलनिधिपुलिने भूरु
हाणा निकुंजे ॥ ग्रामेऽरण्ये वने वा स्थलजल
विषमे दुर्गमध्ये त्रिसंध्य ॥ श्रीम० ॥ ८ ॥ "श्री
मन्मेरौ कुलाद्रौ रुचकनगवरे शाल्मलौ जंबुवृ
क्षे, चौजन्ये चैत्यनदे रतिकररुचके कौंडले मा
नुषांके ॥ इक्षूकारे जिनाद्रौ च दधिमुखगिरौ
व्यंतरे स्वर्गलोके, ज्योतिर्लोके भवति त्रिभुवन
वलये यानि चैत्यालयानि" ॥ ए ॥ इत्थं श्रीजै
नचैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठंति प्रवीणा, प्रो
द्यत्कल्याणहेतु कलिमलहरणं भक्तिभाजस्त्रि
सध्यम् ॥ तेषा श्रीतीर्थयात्राफलमतुलमलं जा
यते मानवाना, कार्याणा सिद्धिरुच्चैः प्रमुदित

शैले विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ २ ॥ श्रीशैले विंध्यशृंगे विमलगिरिवरे ह्यर्बुदे पावके वा, सम्मेते तारके वा कुल गिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले ॥ सह्याद्रौ वैज यते विमलगिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ ३ ॥ आघाटे मेदपाटे क्षितितटमुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे च धाटे विटपिघनतटे हेमकूटे विराटे ॥ कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे च भोटे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ श्रीमाले मालवे वा म लयिनि निषधे मेखले पिच्छले वा, नेपाले नाह ले वा कुवलय तिलके सिंहले केरले वा ॥ म्ह हाले कोशले वा विगलितसलिले जगले वा ढमाले ॥ श्रीम० ॥ ५ ॥ अंगे वंगे कलिंगे सु गतजनपदे सत्प्रयागे तिलंगे, गौडे चौडे मुरंडे वरतरद्रविडे उड्रियाणे च पौंड्रे ॥ आर्द्रे माद्रे पुलिंद्रे द्रविडकवलये कान्यकुब्जे सुराष्ट्रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ चद्राया चन्द्रमुख्या गजपुरमथुरापत्तने

चोज्जयिन्यां, कौशाम्व्या कोशलाया कनकपुरव
रे देवगिर्यां च काश्यां ॥ रासक्ये राजगेहे द
शपुरनगरे नद्दिले ताम्रलिप्त्यां ॥ श्री० ॥ ७ ॥
स्वर्गे मर्त्येऽतरिक्षे गिरिशिखरहृदे स्वर्णदीनीर
तीरे, शैलाग्रे नागलोके जलनिधिपुलिने नूरु
हाणा निकुंजे ॥ ग्रामेऽरण्ये वने वा स्थलजल
विषमे डुर्गमध्ये त्रिसंध्य ॥ श्रीम० ॥ ८ ॥ "श्री
मन्मेरौ कुलाद्रौ रुचकनगवरे शाल्मलौ जंबुवृ
क्षे, चौजन्ये चैत्यनंदे रतिकररुचके कौरुले मा
नुषाके ॥ इक्षूकारे जिनाद्रौ च दधिमुखगिरौ
व्यंतरे स्वर्गलोके, ज्योतिर्लोके नवति त्रिभुवन
वलये यानि चैत्यालयानि" ॥ ए ॥ इत्थं श्रीजै
नचैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठंति प्रवीणा, प्रो
द्यत्कल्याणहेतु कलिमलहरण नक्तिनाजस्त्रि
संध्यम् ॥ तेषां श्रीतीर्थयात्राफलमतुलमल जा
यते मानवानां, कार्याणां सिद्धिरुच्चै प्रमुदित

मनसा चित्तमानदकारि ॥ १० ॥ इति चैत्य
वदन सपूर्णम् ॥ इति ॥ ३७ ॥

पीछे गुरुमुखें पच्चरकाण करि के॥ इच्छामो नि
सहिय कहि के गुरु एक गाथाकी स्तुति कहे
॥ पीछे णमो खमासमणाण णमोऽर्हत्सि-द्ध०॥
कह कर परसमय तिमिरतरणिं ए तीन गाथा
कहीजें सो लिखते हैं ॥

॥ अथ परसमय तिमिरतरणिं ॥

॥ परसमय तिमिरतरणिं, भवसागर वारि
तरण वरतरणिं ॥ रागपराग समीरं, वदे देवंम
हावीरम् ॥ १ ॥ निरुध्द संसार विहारकारि,ड
रन्तभावारिगणा निकाम ॥ निरन्तर केवलिस
त्तमा वो, भवावर्ह मोहभर हरंतु ॥ २ ॥ सदेह
कारिकुनयागमरूढगूढ, संमोहपकहरणामल
वारिपूरम् ॥ ससारसागरसमुत्तरणोरुनावं, वी
रागमं परमसिध्दिकरं नमामि ॥ ३ ॥ परिमल
भरलोभालीढलोलालिमाला, वरकमलनिवा

से हारनीहारहासे ॥ अविरलभवविकारागार विछित्तिकारं, कुरु कमलकर मे मङ्गल देविसारम् ॥४॥ इति ॥३३॥ अथवा ससारदावानी तीन गाथा कहेवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ संसारदावा स्तुति ॥

॥ संसारदावानलदाहनीरं, समोहधूली हरणे समीरम् ॥ माया रसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥१॥ भावावनाम सुरदानवमानवेन, चूलाविलोलकमलावलिमालितानि ॥ संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपद पदवी नीरपूराभिरामं, जीवाहिंसाविरललहरीसंगमागाहदेहम् ॥ चूलावेलं गुरु गममणी संकुल दूरपारं, सारं वीरागमजलनिधिं सादर साधु सेवे ॥ ३ ॥ आमूला लोलधूली बहुल परिमला लीढलोलालिमाला, झंकारा रावसारा मलदलकमलागारभूमीनि

मनसा चित्तमानदकारि ॥ १० ॥ इति चैत्य
वदन सपूर्णम् ॥ इति ॥ ३७ ॥

पीछे गुरुमुखें पच्चख्काण करि के॥ इच्छामो नि
सद्धिय कहि के गुरु एक गाथाकी स्तुति कहे
॥ पीछें णमो खमासमणाण णमोऽर्हत्सि०॥
कह कर परसमय तिमिरतरणिं ए तीन गाथा
कहीजें सो लिखते हैं ॥

॥ अथ परसमय तिमिरतरणिं ॥

॥ परसमय तिमिरतरणिं, भवसागर वारि
तरण वरतरणिं ॥ रागपराग समीरं, वदे देवंम
हावीरम् ॥ १ ॥ निरुद्ध संसार विहारकारि,ड
रन्तभावारिगणा निकाम ॥ निरन्तर केवलिस
त्तमा वो, भवावहं मोहभरं हरंतु ॥ २ ॥ संदेह
कारिकुनयागमरूढगूढ, संमोहपंकहरणामल
वारिपूरम् ॥ ससारसागरसमुत्तरणोरुनावं, वी
रागम परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥ परिमल
भरलोभालीढलोलालिमाला, वरकमलनिवा

से हारनीहारहासे ॥ अविरलनविकारागार चिछित्तिकार, कुरु कमलकरं मे मङ्गलं देविसारम् ॥४॥ इति ॥३३॥ अथवा संसारदावानी तीन गाथा कहेवे, सो लिखते हे ॥

॥ अथ ससारदावा स्तुति ॥

॥ संसारदावानलदाहनीर, संमोहधूली हरणे समीरम् ॥ माया रसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥१॥ भावावनाम सुरदानवमानवेन, चूलाविलोलकमलावलिमालितानि ॥ सपूरिताभिनतलोकसमीहितानि, काम नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥ बोधागाध सुपद पदवी नीरपूराभिरामं, जीवाहिंसाविरललहरीसंगमागाहदेहम् ॥ चूलावेलं गुरु गममणी संकुल दूरपारं, सारं वीरागमजलनिधि सादर साधु सेवे ॥ ३ ॥ आमूला लोलधूली बहुल परिमला लीढलोलालिमाला, ऊंकारा रावसारा मलदलकमलागारभूमीनि

वासे ॥ गयासन्नारसारे वरकमलकरे तारहा रानिरामे, वाणीसदोहदेहे नवविरहवरं देहि मे देवि सारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ ३४ ॥

॥ इत्यादि तीन गाथा नणी, शक्रस्तव कहे पीछे खडा हो कर अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्ग ॥ वंदणवत्तिआए० अन्नत्थू० ॥ इत्यादि पाठ कहि कें ॥

॥ काउस्सग्गमांहे एक नवकार चिंतवी ॥ एक श्रावक प्रथम काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्सिद्धा० कही॥एक गाथा स्तुति कहे, सो लिखते हैं

॥ अश्वसेन नरेसर, वामादेवी नंद ॥ नव कर तनु निरुपम,नील वरण सुखकंद ॥ अहि लंबण सेवित, पउमावइ धरणिंद ॥ प्रह उठी प्रणमूं, नित प्रति पास जिणंद ॥ १ ॥ ए गाथा एक जण कहे ॥ दूसरे सब काउस्सग्गमांहे रह्या हुआ सुणे ॥ पछिं णमो अरिहंताण कहि कें काउस्सग्ग पारे॥ इस तरे ं पण

णणा ॥ पीछें लोगस्स कहे ॥ सवलोए अरिहं त चेईआए वदणवत्ति० ॥ अन्नत्थू० ॥ इत्यादि कहि कें ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग करी पा रि कें दूजी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ कुल गिरिवेयड्ढइ, कणयाचल अभिराम ॥ मानुषोत्तर नंदी, रुचक कुंमल सुखधाम ॥ भुवणेसुर व्यंतर, जोइस विमाणी नाम ॥ वर्त्ते ते जिणवर, पूरो मुऊ मन काम ॥ २ ॥

॥ पीछें पुस्करवरदीवड्ढे कहि कें सुयस्स भगव उ० वदण० अन्नत्थू०॥ कही ॥ एक नवकारका का उस्सग्ग पारि के ॥ त्रीजी स्तुति कहे, सो लिखते,

॥ जिहा अग इग्यारे, बार उपग ब भेद ॥ दस पयन्ना दाख्या, मूल सूत्र चउभेद ॥ जिन आगम षड्द्रव्य, सप्त पदारथ युक्त ॥ साभलि सर्दहता, त्रूटे करम तुरत्त ॥ ३ ॥

॥ पीछें सिद्धाणं बुद्धाणं०॥ कह कें वेयावच्च गराणं० ॥ अन्नत्थू० कही ॥ एक नवकारका का

वासे ॥ गयासन्नारसारे वरकमलकरे तारहा
रान्निरामे, वाणीसदोह्देहे न्नवविरहवरं देहि
मे देवि सारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ ३४ ॥

॥ इत्यादि तीन गाथा न्नणी, शक्रस्तव कहे
पीछे खडा हो कर न्नरिहंत चेइयाए करेमि का
उस्सग्ग ॥ वंदणवत्तिन्नाए० न्नन्नत्थू० ॥ इत्या
दि पाठ कहि कें ॥

॥ काउस्सग्गमांहे एक नवकार चिंतवी ॥
एक श्रावक प्रथम काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्सि
ध्दा० कही॥एक गाथा स्तुति कहे, सो लिखते हैं

॥ न्नश्वसेन नरेसर, वामादेवी नंद ॥ नव क
र तनु निरुपम,नील वरण सुखकंद ॥ न्नहि लं
छण सेवित, पउमावइ धरणिंद ॥ प्रह उठी प्र
णमूं, नित प्रति पास जिणंद ॥ १ ॥ ए गाथा
एक जण कहे ॥ दूसरे सब काउस्सग्गमांहे
रह्या हुन्ना सुणे ॥ पीछें णमो न्नरिहंताणं क
हि कें काउस्सग्ग पारे॥ इस तरे न्नागे पण जा

णणां ॥ पीछे लोगस्स कहे ॥ सवलोए अरिहं
त चेईआणं वंदणवत्ति० ॥ अन्नत्थू० ॥ इत्यादि
कहि कें॥एक नवकारका काउस्सग्ग करी पा
रि कें दूजी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ कुल गिरि वेयढ्ढइ, कणयाचल अभिराम
॥ मानुषोत्तर नदी, रुचक कुंभल सुखठाम ॥
भुवणेसुर व्यंतर, जोइस विमाणी नाम ॥ वर्त्तें
ते जिणवर, पूरो मुऊ मन काम ॥ २ ॥

॥ पीछे पुक्खरवरदीवढ्ढे कहि कें सुयस्स भगव
उ० वदण० अन्नत्थू०॥ कही॥एक नवकारका का
उस्सग्ग पारि के ॥ त्रीजी स्तुति कहे,सो लिखते,

॥ जिहां अंग इग्यारे, बार उपंग छ छेद ॥
दस पयन्ना दाख्या, मूल सूत्र चउभेद ॥ जिन
आगम षड्द्रव्य, सप्त पदारथ जुत्त॥ साभलि
सईहता, त्रूटे करम तुरत्त ॥ ३ ॥

॥ पीछे सिद्धाणं बुद्धाण०॥ कह कें वेयावच्च
गराणं० ॥ अन्नत्थू० कही ॥ एक नवकारका का

उस्सग्ग करी पारि कें णमोऽर्हत्सि०शा० कह कें
चोथी स्तुति कहे, सो लिखते है ॥
॥ पउमावई देवी, पार्श्व यक्ष परतक्ष ॥ सहु
सघना सकट, दूर करेवा दक्ष ॥ समरो जि
नभक्ति, सुरि कहे इक चित्त ॥ सुख सुजस स
मापो, पुत्र कलत्र बहु वित्त ॥४॥ इति ॥ ३५ ॥
॥ पीछें नीचा बेठ कें णमोथूणं० कहि कें ॥
तीन खमासमणे पूर्वोक्त रीतें ॥ आचार्य,उपा
ध्याय, सर्वसाधु वादे ॥
॥ अथवा केई ठिकाने जिमणो हाथ नीचो
करि, मुखें मुहपत्ती देई अढ्ढाइज्जेसु कहे हैं,सो
लखते हैं ॥ इति सम्प्रदाय ॥

॥ अथ अढ्ढाइज्जेसु ॥

॥ अढाइज्जेसु॥दीव समुद्देसु ॥ पन्नरससु क
म्मभूमीसु ॥ जावंत केवि साहू ॥ रयहरण गु
च्छपडिग्गहधारा पंचमहव्वयधारा ॥ अढारसह
स्स सीलंगधारा ॥ रित्ता स

वे ॥ सिरसा मणसा मह्णएण वंदामि ॥ इति ॥ ॥ इतना विधि किया पीछें स्थिरता हुवे तो खमासमण तीन वखत देई ॥ इहाकारेण सं दिस्सह नगवन् ॥ चैत्यवदन करुं जी यह पाठ कह कर चैत्यवंदन करे सो लिखते है ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय त्रिनुवन आदिनाथ, पंचमग ति गामी ॥ जय जय करुणा शात दांत, नवि जनहितकामी ॥ जय जय इद नरिद वृंद, सेवि त सिरनामी ॥ जय जय अतिशयानंतवत, अं तर्गतजामी ॥ १ ॥ पूरव विदेह विराजता ए, श्री सीमंधर स्वाम ॥ त्रिकरणशुद्ध त्रिहुं काल मे, नितप्रति करूं प्रणाम ॥ २ ॥ ॥ ज किंचि ना म तिहं० ॥ नमोत्थूण० जावंति चेइआ० जावं त केवि साहू० ॥ नेर णमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपा ध्याय सर्वसाधुभ्य ॥ तक कहि के सीमंधर जीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३ ७ ॥

आठम सोमवारा ॥ प्रनुके चरण परतापसिंद में, क्षमारतन प्रनु प्यारा रे ॥ध०॥५॥ इति ॥
॥ पढि जयवीयराय०॥ वंदणवत्तियाए०॥ अन्नत्थू०॥ कहि के एक नवकारका काउस्सग्ग करी॥ पारि के नमोऽर्हत्सिद्धा०॥ कहि के ॥
॥ शेत्रुजगिरि नमियें, ऋषनदेव पुमरीक ॥ शुन तपनो महिमा, सुणि गुरु मुख निरवीक ॥ शुद्ध मन उपवासे, विधिशु चैत्यवदनीक ॥करियें जिन आगल, टाली वचन अलीक ॥१॥ इति ॥ ४१ ॥ पीछें फुरसद होवे तो पडिलेहण करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ पडिलेहण ॥

॥ खमासमण देई इछाकारेण संदिस्सह नगवन् ॥ पडिलेहण संदिस्साउं ? गुरु कहे-संदिस्साएह ॥ बीजे खमासमणें ॥ इछाका० स० ॥न०॥ पडिलेहण करु ? गुरु कहे,करेह॥ पीछें इछं कही ॥ मुहपत्ती पडिलेहे ॥ इमहीज

केवि साहू०॥ णमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्य ॥ तक कहि कें श्री सिद्धाचलजीका स्तवन कहे, सो लिखते है ॥ ३ए ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलस्तवनम्॥

॥ सिद्धाचल गिरि नेट्या रे ॥ धन्य नाग्य हमारा ॥ विमलाचलगिरि०॥एह गिरिवरनो महिमा महोटी, कहेता न आवे पारा ॥ रायण रूख समोसस्या स्वामी, पूर्व नवाणुं वारा रे ॥ ध० ॥ १ ॥ मूलनायक श्रीआदिजिनेश्वर, चोमुख प्रतिमा चार॥ अष्ट द्रव्यसें पूजो नावें, समकित मूल आधारारे ॥ध०॥२॥ दूर देशथी हूं इहा आयो, श्रवण सुनी गुण तोरा ॥ पतित उद्धारण बिरुद तुमारा, एह तीरथ जग सारा रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ नाव नक्तिसें प्रभु गुण गावे, अपना जन्म सुधारा ॥ जात्रा करि नवि जन शुन्न नावें, नरक तिर्यंच गति वारा रे ॥ ध० ॥ ॥ ४ ॥ संवत अढारे त्र्यासी मास आषाढे, वदि

आगम सोमवारा ॥ प्रभुके चरण परतापसिंह
में, क्षमारतन प्रभु प्यारा रे ॥ध०॥५॥ इति ॥
॥ पछि जयवीयराय०॥ वंदणवत्तियाए० ॥ अ
न्नत्थ० ॥ कहि के एक नवकारका काउस्सग्ग
करी॥ पारि के नमोऽर्हत्सिद्धा०॥ कहि के ॥
॥ शेत्रुजगिरि नमिये, ऋषभदेव पुन्डरीक ॥
शुभ तपनो महिमा, सुणि गुरु मुख निरबीक
॥ शुद्ध मन उपवासे, विधिशु चैत्यवंदनीक ॥क
रियें जिन आगल, टाली वचन अलीक ॥१॥
इति ॥ ४१ ॥ पछि फुरसद होवे तो पडिलेहण
करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ पडिलेहण ॥

॥ खमासमण देई इच्छाकारेण संदिस्सह
भगवन् ॥ पडिलेहण सदिस्साउं ? गुरु कहे.
सदिस्साएह ॥ बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका०
स० ॥भ०॥ पडिलेहण करु ? गुरु कहे,करेह॥
पछि इच्छं कही ॥ मुहपत्ती पडिलेहे ॥ इमहीज

दोइ खमासमणे अंग पडिलेहण संदि
अंगपडिलेहण करु कही के धोतियुं
डिलेहि कें ॥ खमासमण देई इच्छाकार जगवन्
साउ करी पडिलेहण पडिलेहावो जी एम कहीं॥
थापनाचार्य पडिलेह रखे, अने जो गुरवादिक
थापनाचार्य पडिलेहे, तो पण खमासमण देई
आग्या मागे, पीछे खमासमण देई॥इच्छा०॥सं०॥
ज० ॥ मुहपत्ती पडिलेहुं? गुरु कहे पडिलेहेह॥
पीछें इछं कही ॥ मुहपत्ती पडिलेहि ॥ दोय ख
मासमणे ॥इच्छाका०॥स०॥ज०॥ उहि पडिलेहण
सदिस्साउं ॥ उही पडिलेहण करु ॥ एम कही
कंबल वस्त्रादि पडिलेहे ॥ पीछें पोषधशाला
प्रमार्जी काजो, विधिशुं परठवी खमासमण देई
इरियावही पडिक्कमे ॥ ए मूलविधि जाणवो ॥
इतनी स्थिरता न होवे, तोजी दृष्टिपडिलेहण
तो अवश्य करणी ॥ अबजी प्राये एही क
रते दिखते हैं ॥

॥ अथ सामायिक पारणेका विधि कहे हे ॥

॥ पहि सामायिक पारे ॥ एक खमासमण देई ॥ मुहपत्ति पडिलेहे ॥ फिर खमासमण देई ॥ इछा०॥स०॥न०॥ सामायिक पारुं ॥ गुरु कहे पुणोवि कायवो, पहिं यथाशक्ति कही वली खमासमण देई कहे इछाका० ॥स०॥ न०॥ सामायिक पारेमि ॥ गुरु कहे आयारो न मोत्तवो ॥ पीछें तहत्ति कही, अर्द्ध नमि ऊनो थको, तीन नवकार गुणी नीचो गोमालीयें बेसी मस्तक नमावी ॥ नयवं दसएनदो ॥ इत्यादिगाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ नयवं दसएनहो ॥

॥नयवं दसएनहो,सुदंसणो थूलिजद्द वयरोय ॥सफलीकयगिहचाया, साहू एह विहा हुती ॥१
साहूण वंदणेण, नासइ पावं असकिया नावा ॥ फासु अदाणे निक्कर, अनिग्गहो नाण माईणं ॥ २ ॥ बगमहो मूढमणो, कित्तिय मित्तपि संन

रइ जीवो ॥ ज च न संभरामि अहं, मिछामि
क्कड तस्स ॥३॥ जं जं मणेण चिंतिय, मसुहं
याइ भासिय किंचि ॥ असुहं काएण कयं, मि
छामि डुक्कड तस्स ॥ ४ ॥ सामाइय पोसहसं,
ठियस्स जीवस्स जाइ जो कालो ॥ सो स
लो बोधवो,सेसो ससार फलहेऊ ॥५॥ सामाचि
क विधें लीधु विधें कीधुं, विधि करता अविधि
आशातना लगी होय, दश मनका, दश वच
नका, बारह कायाका, बत्तीस दूषणमांहि जो
कोइ दूषण लगा होय, सो सहु मन कर, व
चन कर, कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥ इति
सामायिक पोसह पारवानी गाथा ॥

॥ अथवा पहिला सामायिक पारी कें, पछि
पडिलेहण करे इहां यथायोग्य अवसरे गुरुकूं
सुहराइ पूछै ॥

दूसरा खमासमण देवे, श्रीजिनपति सूरि

जीकी सामाचारीमें एसे कह्यो छे ॥ इति सामायिक पारणविधि ॥

॥ अथ संध्याकाल सामायिकविधि लिख्यते ॥

॥ पिछले पहोरें धर्मशाला प्रमार्जी वस्त्रादिक पडिलेहे. जो अवेरो आयो हुवे, तो दृष्टिपडिलेहण करे ॥ पीछे गुरु आगें अथवा थापनाचार्य जी आगे आवी भूमि प्रमार्जी आसण वाम पास मूकी खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ स० ॥भ०॥ सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेहेह इछं कही ॥ फिर खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे ॥ पीछे खमासमण देई ॥इच्छाका०॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक संदिस्साउं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई इच्छाका०॥ स०॥भ०॥ सामायिक ठाउं ? गुरु कहे, ठाएह ॥ इछं कही फिर खमासमण देई ॥ अर्धावनत थई तीन नवकार गुणी कहे इच्छकार भगवन् पसाउ करी सामायिक दंडक उच्चरावो जी ॥

रइ जीवो ॥ ज च न सन्नरामि अहं, मिछामि ड
क्कड तस्स ॥३॥ जं ज मणेण चिंतिय,मसुहं
याइ भासिय किंचि ॥ असुहं काएण कयं, मि
छामि डुक्कड तस्स ॥ ४ ॥ सामाइय पोसहसं,
ठियस्स जीवस्स जाइ जो कालो ॥ सो सफ
लो बोधवो,सेसो संसार फलहेऊ ॥५॥ सामायि
क विधें लीधुं विधें कीधु, विधि करता अविधि
आशातना लगी होय, दश मनका, दश वच
नका, बारह कायाका, बत्तीस दूषणमाहि जो
कोइ दूषण लगा होय, सो सहु मन कर, व
चन कर, कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥ इति
सामायिक पोसह पारवानी गाथा ॥

॥ अथवा पहिलां सामायिक पारी के, पछि
पडिलेहण करे इहां यथायोग्य अवसरें गुरुकूं
सुहराइ पूछे ॥

दूसरा खमासमण देवे, श्रीजिनपति सूरि

उविहार उपवास हुवे, तो पच्चरकाण करवुं छे नही ॥ ते माटें मुहपत्ती नहिं पडिलेहे ॥ ए विस्तार विधि है ॥ पछिं एक खमासमण देई इच्छाका० ॥ स० ॥ भ०॥ सिवाय संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह पछि इच्छं कही वली खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ स० ॥भ०॥ सिज्झाय करुं ? गुरु कहे करेह ॥ पछिं इच्छं कही ॥ खमासमण देई ॥ उभो थको मधुर स्वरें आठ नवकारनी सिज्झाय करे ॥ पछिं खमासमण देई॥इच्छा० ॥स० ॥भ० ॥ बेसणु सदिस्साउ ? गुरु० संदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई इच्छा०॥ सं० ॥भ० ॥ बेसणुं ठाउं ? गुरु कहे, ठाएह ॥ पछिं इच्छ कही जो शीत कालादि हुवे तो खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पागरणु संदिस्साउं ? गुरु कहे, सदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई ॥इच्छा०॥ सं० ॥भ० ॥ पागरणुं पडिग्घाउ? गुरु कहे पडिग्घाएह॥ पछि इच्छं क

गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीछे करेमिभंते य ॥ इत्यादि सामायिक सूत्र गुरु अनुज्ञापण करतो थको तीन वार क री खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ स० ॥ भ० ॥ इरियावहिय पडिक्कमामि ? गुरु कहे पडिक्कमे ह ॥ पीछे इच्छ कही ॥ इच्छामि पडिक्कमिउं ॥ इ रियावहियाए इत्यादि पाठसें इरियावहिय पडि क्कमी ॥ एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी णमो अरिहंताण कही, काउस्सग्ग पारी मु खें प्रगट लोगस्स कही, नीचें बैठ के मुहप त्ती पडिलेहि वांदणा देई कहे इच्छाकार भग वन्! पसाउ करी पच्चक्काण करावोजी पीछें गुरु, दिवस चरिम पच्चक्काण करावे ॥ गुरु अभावें थापनाचार्य समक्षें अथवा स्वमुखें, अथवा वडेरा साधर्मी मुखे पच्चक्के ॥ अने जो तिवि हार उपवास कीधो हुवे, तो मुहपत्ती पडिलेहि पच्चक्काण करे ॥ वांदणा न देवे, अने च

उविहार उपवास हुवे, तो पञ्चरकाण करवुं छे नही ॥ ते माटें मुहपत्ती नहिं पडिलेहे ॥ ए विस्तार विधि है ॥ पीछें एक खमासमण देई इच्छाका० ॥ स० ॥ भ०॥ सिज्ञाय संदिस्साउ ? गुरु कहे, संदिस्सावेह पीछे इछं कही वली खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ स० ॥भ०॥ सिज्ञाय करुं ? गुरु कहे करेह ॥ पीछे इछं कही ॥ खमासमण देई ॥ उभो थको मधुर स्वरें आठ नवकारनी सिज्ञाय करे ॥ पीछे खमासमण देई॥इच्छा० ॥स० ॥भ० ॥ बेसणु संदिस्साउ ? गुरु० संदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई इच्छा०॥ स० ॥भ० ॥ बेसणुं ठाउं? गुरु कहे, ठाएह ॥ पीछें इछ कही जो शीत कालादि हुवे तो खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पागरणु संदिस्साउ ? गुरु कहे, सदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई ॥इच्छा०॥ स० ॥भ० ॥ पागरणुं पडिग्घाउ? गुरु कहे पडिग्घाएह॥ पीछे इछक

गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीछे करेमिभंते
य ॥ इत्यादि सामायिक सूत्र गुरु वचन
अनुन्नापए करतो थको तीन वार उच
री खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ स० ॥ भ० ॥
इरियावहियं पडिक्कमामि ? गुरु कहे पडिक्कमे
ह ॥ पीछे इच्छ कही ॥ इच्छामि पडिक्कमिउं ॥ इ
रियावहियाए इत्यादि पाठसे इरियावहिय पडि
क्कमी ॥ एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी,
एामो अरिहंताए कही, काउस्सग्ग पारी मु
खें प्रगट लोगस्स कही, नीचें बेठ के मुहप
त्ती पडिलेहि वादणा देई कहे इच्छाकार भग
वन्! पसाउ करी पच्चरकाए करावोजी पीछें गुरु,
दिवस चरिम पच्चरकाए करावे ॥ गुरु अभावें
थापनाचार्य समक्षे अथवा स्वमुखें, अथवा
वगेरा साधर्मी मुखे पच्चरके ॥ अने जो तिवि
हार उपवास कीधो हुवे, तो मुहपत्ती पडिलेहि
पच्चरकाए करे ॥ वादणा न देवे, अने जो च

उविहार उपवास हुवे, तो पच्चरकाण करवुं छे नही ॥ ते माटें मुहपत्ती नहिं पडिलेहे ॥ ए विस्तार विधि है ॥ पछिं एक खमासमण देई इच्छाका० ॥ स० ॥ न०॥ सिधाय सदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह पछि इच्छ कही वली खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ स० ॥न०॥ सिज्झाय करुं ? गुरु कहे करेह ॥ पछि इच्छं कही ॥ खमासमण देई ॥ उनो थको मधुर स्वरें आठ नवकारनी सिज्झाय करे ॥ पछि खमासमण देई॥इच्छा० ॥स० ॥न० ॥ वेसणु सदिस्साउं ? गुरु० संदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई इच्छा०॥ सं० ॥न० ॥ वेसणु ठाउं? गुरु कहे, ठाएह ॥ पछि इच्छ कही जो शीत कालादि हुवे तो खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ पागरणु संदिस्साउं ? गुरु कहे, सदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई ॥इच्छा०॥ स० ॥न० ॥ पागरणुं पडिग्घाउं? गुरु कहे पडिग्घाएह ॥ पछि इच्छ क

ही शुभ ध्यान करे॥ इति सध्यासामायिक विधिः॥
॥ अथ देवसि पडिक्कमण विधि लिख्यते ॥
॥ प्रथम त्रण खमासमण देई ॥ इछा०॥सं०॥
भ०॥ चैत्यवंदन करु'गुरु कहे करेह पछि इछक
ही॥जय तिहुयण कहे॥ जिसमे पक्खी तथा चउ
मासी तथा संवछरीके रोज तीस गाथा कहेनी ॥
और दिनोमे तो पाच गाथा पहेलेकी,और दोय
गाथा पिछाडीकी,एवं सात गाथा कहेनेकी प्रवृत्ति
देखणेमें आवे है अब जयतिहुअण लिखते हैं॥
॥ अथ जयतिहुअण लिख्यते ॥
॥ जय तिहुअण वरकप्परुक्क जय जिण धन्न
तरि, जय तिहुअण कल्लाणकोस दुरिअक्करि के
सरि ॥ तिहुअण जण अविलंघियाण भुवणत्त
य सामिअ, कुणसुसुहाइ जिणेस पास थभणय
पुरठिअ ॥१॥ तई समरत लहंति झत्तिवर पु
त्त कलत्तहिं, धण सुवन्न हिरण पुण जणभुंजहि
रज्जहि ॥ पिक्खहि मुक्क असखसुक्ख तुह पासप

साइण, इय तिहुअण वरकप्परुक्क सुक्कहि कुण महजिण ॥ २ ॥ जरजज्जर परिजुण्ण कण्णणहु ठ सुकुट्ठिण, चक्कुक्खीणखएणखुण्ण निरसल्लिअ सूलिण॥तुह जिण सरणरसायणेण लहु हुंति पुणण्णव, जय धन्नंतरि पास महवि तुहुं रोगहरो भव ॥ ३ ॥ विज्जाजोइस मततंतसिद्धिउ अपयत्तिण, भुवणब्भुअ अठविह सिद्धि सिज्जइ तुह नामिण ॥ तुह नामिण अपवित्तउवि जण होइ पवित्तउ, त तिहुअण कल्लाणकोस तुह पास निरुत्तउ ॥ ४ ॥ खुद्द पवत्तइ मंत तंत जताई विसुत्तइ, चरथिरगरलगहुग्गखग्गरिउवग्गवि गजइ ॥ डुत्थियसत्थ अणत्थ घत्थ नित्थारइ दय करि, दुरिअई हरउ सुपासदेव दुरिअक्करिकेसरि ॥५॥ तुह आणाथम्भेइ भीमदप्पुद्धर सुरवर, रक्कस जक्क फणिंद विंद चोरानलजलहर॥ जलथलचारिरउद्दखुद्द पसुजोइणि जोइअ, इय तिहुअणअविलंघिआण जय पास सुसामिअ

ही शुभ ध्यान करे॥ इति सध्यासामायिक विधिः॥

॥ अथ देवसि पडिक्कमण विधि लिख्यते ॥

॥ प्रथम त्रण खमासमण देई ॥ इछा०॥सं०॥ भ०॥चैत्यवदन करु?गुरु कहे करेह पछि इछं कही॥जय तिहुयण कहे॥ जिसमें पक्की तथा चउमासी तथा संवछरीके रोज तीस गाथा कहेनी॥ और दिनोमे तो पाच गाथा पहेलेकी,और दोय गाथा पिछाडीकी,एवं सात गाथा कहेनेकी प्रवृत्ति देखणेमे आवे है अब जयतिहुअण लिखते है॥

॥ अथ जयतिहुअण लिख्यते ॥

॥ जय तिहुअण वरकप्परुक्ख जय जिण धन्नंतरि, जय तिहुअण कल्लाणकोस दुरिअक्करि केसरि ॥ तिहुअण जण अविलंघियाण भुवणत्तय सामिअ, कुणसुसुहाई जिणेस पास थंभणय पुरठिअ ॥१॥ तई समरत लहंति झत्तिवर पुत्त कलत्तहिं, धण सुवन्न हिरन्न पुन्न जणभुंजहि रज्जहि ॥ पिक्कहि मुक्ख असंखसुक्ख तुह पासप

पवूढरूढ उद्दाहसुपुलइय ॥ मसदिंमसूसउस पुसअप्पाणं सुरनर,इय तिहुअण आणंदचंद ज य पास जिणेसर ॥११॥ तुह कल्लाणमहेसुघट टंकारवपिल्लिअ, वल्लरमल्लमहल्लनत्तिसुरवर गेजुल्लिअ ॥ हल्लुप्फलिअ पवत्तयंति नवणेहि महूसव,इय तिहुअण आणंदचंद जय पाससुहु भव ॥ १२ ॥ निम्मल केवल किरणनियरविहु रिअ तमपहयर, दंसिअ सयलपयहसहविहरि अ पहाम्नर ॥कलिकलुसिअ जण घूअलोयलो यणहअगोयर, तिमिरइ निरुहर पासनाह भुव णत्तय दिणयर ॥१३॥ तुह समरणजलवरिससि त्त माणव मइ मेइणि, अवरावरसुहुमहबोह कं दलदलरेहणि ॥ जायइ फलभरभरिय हरिय दु हदाह अणोवम, इयमइ मेइणि वारिवाह दिसि पास मइ मम ॥१४॥ कय अविकल कल्लाणव ल्लिउल्लूरियदुहवणुं, दाविअसग्गपवग्गमग्ग दु ग्गइगम वारणु॥ जय जंतुहजणएणतुल्लजंजणि

॥६॥ पणिअ अत्थ अणतहियभत्तिभर निब्भर,
रोमच चिअचारुकाय किन्नरनरसुरवर ॥ जसु
सेवहिं कमकमलजुअल पक्खालिअ कलिमलु,
सो भुवणत्तयसामि पास मह मद्दउ रिउबलु॥७॥
जय जोइअमणकमलभसलभय पजरकुंजर,
तिहुअणजण आणंदचद भुवणत्तयदिणयर॥ज
य महमेइणि वारिवाह जयजतु पिआमह, थंभ
णयट्ठिअ पासनाह नाहत्तण कुणमह ॥८॥ बहु
विहवण्णअवण्णु सुण्णु वण्णिउ छप्पण्णहिं, मुक्खधम्मु
कामत्थकाम नर नियनियसत्थहिं ॥ जं झायइ
बहु दरिसणत्थ बहु नाम पसिद्धउ, सो जोइअ
मण कमलभसलसुह पास पवद्धउ ॥ ९॥ भय
विब्भल रणझणिरदसण थरहरिअ सरीरय, तर
लिअ नयण विसण्णसुण्णगग्गिरगिरकरुणय॥ तइ
सहसत्तिसरंति हुंति नरनासिअ गुरुदर, मह वि
ज्झविसज्झसइ पास जय पजरकुंजर ॥ १० ॥ पइ
पासवि विअसंतनित्तपत्तंतपवित्तिय

सामिद तुढु माय वप्प तुहुं मित्तपियकरु, तुढु गइ
तुहुं मइ तुह्जि ताण तुहुं गुरु खेमकरु॥ हउं डुह
न्नरनारिञ्अवराउ राउलनिन्नग्गउ, लीणउ तुह
कमकमल सरणजिणपालहि चगउ ॥ २० ॥ प
इकिविकयनीरोयलोयकिविपावियसुहसय, कि
विमइ मंतमहतकेवि किविसाहियसिवपय ॥ कि
वि गंजिअरिउवग्गकेविजसधवलिअ नूअल,
मइं अवहीरहिकेणपास सरणागयवह्लल॥२१॥
पञ्चुवयारनिरीहनाहनिप्पस पयोअण,तुहुं जिण
पासपरोवयार करुणिकपरायण॥सत्तुमित्त सम
चित्तवित्तिनयनिंदअसममण,मा अवहीरिअजु
ग्गउविमइ पासनिरजण॥२२॥ हउं बहुविहडु
हतत्तगत्ततुहु डुहनासणपरु,हउ सुयणहकरुणि
कगण तुहुं निरुकरुणाकरु ॥ हउ जिण पासअ
सामिसालु तुहुं तिहुअणसामिअ,ज अवहीरहि
मइ झखतइय पासन सोहिअ॥२३॥जुग्गाजुग्ग
विनागनाहनहुजोअणतुहसम, नवणुवयारसु

यहियावढु, रम्म धम्म सो जयउ पास जय जं
तु पिआमह ॥१५॥ भुवणारम्रनिवास दरिअ
परदरिसणदेवय, जोइणिपूअणखित्तवाल खुद्दा
सुर पसुवय ॥ तुह उत्तठ सुनठ सुठ अविसंतुल
चिठहि, इय तिहुअण वणसिंह पास पावाइ प
णासहिं ॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरतरयण कर रं
जिअ नहयल, फलिणी कंदलदलतमाल निल्लु
प्पलसामल ॥ कमठासुर उवसग्गवग्ग संसग्ग
अगजिअ, जय पच्चक्कजिणेस पास थंभणय पुर
हिअ ॥ १७ ॥ महमणतरलपमाणनेय वायावि
विसवलु, नियतणुरवि अविणयसहाव आल
सविहिलघलु ॥ तुहमाहप्पपमाणदेव कारुण्ण
पवत्तउ, इयमइमाअवहीरपासपालहिविलवं
तउ ॥ १८ ॥ किंकिंकप्पिउणेयकलुणकिंकिंवनज
पिउ, किं वनचिठिउकिठदेवदीणयमविलंबिउ
॥ कासुनकियनिप्फललल्लुअह्मेहिंदुहत्तइं, तहवि
न पत्तउताण किपि पइपहु परिचत्तइं ॥१९॥ तुहुं

सामिद तुहु माय वप्प तुहु मित्तपियंकरु, तुहुं गइ तुहुं मइ तुहिज ताण तुहुं गुरु खेमकरु॥ हउं डुह भरभारिअवराउ राउलनिभ्भग्गउ, लीणउ तुह कमकमल सरणजिणपालहि चगउ ॥ ३० ॥ प इंकिविकयनीरोयलोयकिविपावियसुहसय, कि विमइमंतमहंतकेवि किविसाहियसिवपय ॥ कि वि गंजिअरिउवग्गकेविजसघवलिअ भूअल, मइ अवहीरहिकेणपास सरणागयवच्छल॥३१॥ पच्चुवयारनिरीहनाहनिप्पन्न पयोअण,तुहुं जिण पासपरोवयार करुणिक्कपरायण॥सत्तुमित्त सम चित्तवित्तिनयनिंदअसममण,मा अवहीरिअज्ज ग्गउविमइ पासनिरंजण॥३२॥ हउ बहुविहदु हतत्तगत्ततुहुं डुहनासणपरु,हउ सुयणहकरुणि क्कठाण तुहुं निरुकरुणाकरु ॥ हउजिण पासअ सामिसाहुतुहुं तिहुअणसामिअ,ज अवहीरहि मइ झखतइय पासन सोहिअ॥३३॥जुग्गाजुग्ग विभागनाहनहुजोअणतुहसम, भवणुवयारसु

हावभाव करुणारससत्तम॥समविसमइ किंघ
नएइ भुविदाहुसमतउ, इय डहवधव पासनाह
मइ पाल थुणातउ॥ २४॥ नयदीणहदीणपभुर
वि अम्हविकिविजुग्गय,ज जोइयउवयारुकरह
वयारससुज्झय॥दीणह दीणनिहीणजेणतुहनाहि
णचत्तउ, तो जुग्गउअहमेव पासपालहिमइं च
गउ ॥२५॥ अहअम्हविजुग्गयविसेसकिविमह
हि दीणह, जं पासविउवयारुकरइ तुहनाह सम
ग्गह॥ सुच्चिअकिल कल्लाणुजेण जिण तुम्ह प
सीयह, किं अम्हुण तचेव देव मामइंअवहीरह
॥२६॥ तुह पत्थण नहु होइ विहल जिणजाण
उ किं पुण,हउं डुक्खिउ निरुसत्तचत्तडुक्कहु उस्सु
यमण॥ त मन्नउ निमिसेण एण एउविक्कइ ल
भइ, सच्च जं भुक्खियवसेण कि उंवरु पच्चइ ॥
॥२७॥ तिहुअणसामिअ पासनाह मइ अप्पप
यासिउ,किज्जउ जं नियरूवसरिसुनमुणंवहु जपि
उ॥ अम्हु ण जिणजगतुहसमोविदक्खिणदयास

ग, जइ अवगिसुसि तुंहिजअहहकिंहोइसहया सउ ॥२८॥ जइ तुहरूविणकिणविपेअ पाइणवे लविउ,तउजाणुंजिणपास तुम्ह हउंअंगीकरिअ उ ॥ इयमहइछिअ ज न होइ सातुहउहावण, रकंतह नियकित्तिणे य जुज्जइअवहीरण॥२९॥ एवमहारिहजत्तदेवइयन्हवणमहूसउ, ज अण लिय गुणगहण तुम्ह मुणिजणअणिसिद्धउ ॥ इय मइ पसियसुपासनाहथंनणयपुरछिअ, इय मुणिवरसिरि अनयदेव विणवइ आणिंदिअ ॥ ॥ ३० ॥ इति श्रीस्तन्ननकतीर्थराजश्रीपार्श्व नाथस्तवनम् ॥

पींछे जय महायस कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ जय महायस प्रारंन ॥

॥ जय महायस जय महायस जय महाना ग जय चिंतिय सुह फलय ॥ जय समत्र परम ठजाणय, जय जय गुरु गिरिम गुरु ॥ जय डु हत्त सत्ताण ताणय, थंनणयछिय पासजिण ॥

हावभाव करुणारससत्तम॥समविसमइ किंव
नएइ जुविदाहुसमतउ, इय झ्हवधव पासनाह
मइ पाल थुणतउ ॥ २४ ॥ नयदीणहदीणयम्हुए
वि अस्रविकिविज्जुग्गय,जं जोइयउवयारुकरइ
वयाररसमुज्भय॥दीणह दीणनिहीणजेणतुहनाहि
णचत्तउ, तो जुग्गउअहमेव पासपालहिमइं चं
गउ ॥२५॥ अहअम्रविज्जुग्गयविसेसकिविमन्न
हि दीणह, ज पासविउवयारुकरइ तुहनाह सम
ग्गह ॥ सुच्चिअकिल कल्लाणुजेण जिण तुम्ह प
सीयह, किं अम्रुण तचेव देव मामइअवहीरह
॥२६॥ तुह पत्थण नहु होइ विहल जिणजाण
उ किं पुण,हउ उक्खिउ निरुसत्तचत्तडक्कहु उस्सु
यमण ॥ तं मणउ निमिसेण एण एउविज्जइ ल
भ्रइ, सच्च ज जुक्खियवसेण कि उवरु पच्चइ ॥
॥२७॥ तिहुअणसामिय पासनाह मइं अप्पप
यासिउ,किज्जउ जं नियरूवसरिसुनमुणंवहु जपि
उ॥ अम्रु ण जिणजगतुहसमोविदक्खिणदयास

॥ पीछे लोगस्स कह कर सबलोए अरिहंत चेइयाण वंदणवत्ति० ॥ अन्नत्थू० ॥ कहि के एक नवकारका काउस्सग्ग करे पारि के उक्त स्तुति की दूसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ सुर नर किन्नर, वंदित पद अरविंद ॥का मित नर पूरण, अभिनव सुरतरु कंद ॥ भवि यणनें तारे, प्रवहण सम निशिदीस ॥ चोवीशे जिनवर, प्रणमुं विशावा वीस ॥ यह दूसरी गाथा कहि कें काउस्सग्ग पारे पीछे पुक्खरवरदी० वंदणवत्तिआए० अन्नत्थू० कहि कें एक नवकार का काउस्सग्ग कर के, पारि कें उक्त स्तुतिकी तीसरी गाथा कहे, सो लिखते है ॥

॥ अरथे करि आगम, भाख्या श्रीभगवंत ॥ गणधरने गुंथ्या, गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पण महिमा, कहि न शके एकंत ॥ समरुं सुखसायर, मन शुद्ध सूत्र सिद्धांत ॥३॥ यह गाथा कहि के सिद्धाणं बुद्धाणं० ॥ वेयावच्च

नवियद्द नीम नवत्तु, नव अवणं ताण तं गुण
तुऊत्ति संज नमोत्तु ॥ १ ॥ इति ॥

॥ पीछे शक्रस्तव कह के खडा हो कर अरि
हत चेइयाण० ॥ करेमि काउस्सग्गं वदणवति
आए० ॥ अन्नत्थू० ॥ इत्यादि पाठ कह के काउ
स्सग्गमाहे एक नवकार चितवी एक श्रावक
काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कहीएक
गाथा स्तुति कहे, सो लिखते है ॥

॥ अथ महावीरजिनस्तुति प्रारंभः ॥

॥ मूरति मन मोहन, कंचन कोमल काय
॥ सिद्धारथ नंदन, त्रिशलादेवी समाय ॥ म
गनायक लंछन, सात हाथ तनु मान ॥ दिनदि
न सुख दायक, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥

॥ ए स्तुति एक श्रावक कहे अरु दूसरे
श्रावक सब काउस्सग्गमें रहे थके सुने पीछें
णमो अरिहंताणं कह के काउस्सग्ग पारे इसी
तरें आगें पण स्तुतिकी चारों गाथामे जान लेना

॥ पीछे लोगस्स कह कर सबलोए अरिहंत चेइयाण वंदणवत्ति० ॥ अन्नत्थू० ॥ कहि के एक नवकारका काउस्सग्ग करे पारि के भक्त स्तुति की दूसरी गाथा कहे, सो लिखते है ॥

॥ सुर नर किन्नर, वंदित पद अरविंद ॥कामित भर पूरण, अभिनव सुरतरु कंद ॥ भवियणनें तारे, प्रवहण सम निशिदीस ॥ चोवीशे जिनवर, प्रणमुं विशवा वीस ॥ यह दूसरी गाथा कहि के काउस्सग्ग पारे पीछे पुस्करवरदी० वंदणवत्तिआए० अन्नत्थू० कहि के एक नवकार का काउस्सग्ग कर कें, पारि कें भक्त स्तुतिकी तीसरी गाथा कहे, सो लिखते है ॥

॥ अरथे करि आगम, भाख्या श्रीभगवंत ॥ गणधरने गूथ्या, गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पण महिमा, कहि न शके एकंत ॥ समरु सुखसायर, मन शुद्ध सूत्र सिद्धांत ॥३॥ यह गाथा कहि के सिद्धाणं बुद्धाण० ॥ वेयावच्च

नवियइ नीम नवतु, नव अवणं ताण तं गुण
तुऊत्ति संज नमोत्तु ॥ १ ॥ इति ॥

॥ पीछें शक्रस्तव कह के खडा हो कर अरि
हंत चेइयाए० ॥ करेमि काउस्सग्ग वंदणवत्ति
आए० ॥ अन्नत्थू० ॥ इत्यादि पाठ कह के काउ
स्सग्गमाहे एक नवकार चिंतवी एक श्रावक
काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कहीएक
गाथा स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ महावीरजिनस्तुति प्रारंभः ॥

॥ मूरति मन मोहन, कंचन कोमल काय
॥ सिद्धारथ नंदन, त्रिशलादेवी समाय ॥ मृ
गनायक लंछन, सात हाथ तनु मान ॥ दिनदि
न सुख दायक, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥

॥ ए स्तुति एक श्रावक कहे अरु दूसरे
श्रावक सब काउस्सग्गमें रहे थके सुने पीछें
णमो अरिहंताणं कह के काउस्सग्ग पारे इसी
तरें आगें पण स्तुतिकी चारों गाथामे जान लेना

तस्सुत्तरि०॥अन्नत्थू०॥इत्यादि कहि के, आठ नवकारका काउस्सग्ग करे. काउस्सग्गमांहि आज्ञुना चउ प्रहरमे॥ इत्यादि पाठ मनमें चिंतवी, णमो अरिहंताणं कही काउस्सग्ग पारि कें प्रगट लोगस्स कहे ॥

॥ पीछे सण्मासा प्रमार्जन पूर्वक बैठ के तीसरे आवश्यक सुत्र वांदणा मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह पीछें मुहपत्ती पडिलेहि के वांदणा देवे पीछे अवग्रहमांहिज उन्नो थको इच्छा॥ सं० ॥ च० ॥ देवसियं आलोउं, एसा कहे तब गुरु कहे आलोएह पीछे इच्छ आलोएमि० ॥ यह पाठ कह के अतिचार आलोवे. पीछे सवस्सवि देवसियं इत्यादिथी मार्गीने इच्छाकारेण संदिस्सह पर्यंत कहे, तब गुरु पडिक्कमह यह पाठ कहे ॥

॥ पीछे इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कड कहि कें सण्मासा प्रमार्जि प्रमार्जित भूमिये आसन पर

गराए अन्नत्थू० ॥ कही काउस्सग्ग पारी एक स्तुतिकी चोथी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ सिद्धायिकादेवी, वारे विघन विशेष॥सबु संकट चूरे, पूरे आश अशेष॥ अहोनिश कर जोडी, सेवे सुर नर इंद ॥ जपे गुण गण इम, श्रीजिनलाभ सूरिंद ॥ ४ ॥ इति महावीरजिन स्तुति ॥ यह चोथी स्तुति कहिकें बैठ के नमो त्थूणं कहे, पीछे एक खमासमण देई के श्रीआचार्य मिश्र दूसरा खमासमण दीये पीछे श्रीउपाध्यायजी मिश्र तीसरा खमासमण दे कर श्रीवर्त्तमान आचार्यजीका नाम ले कें मिश्र चोथे खमासमण में सर्व साधुजीमिश्र इसी तरें कह कर गोडा टीयि बैठ के मस्तक नमावी सव्वस्सवि देवसिय० इत्यादि कह कर तस्स मिच्छामि दुक्कड कहे, परं 'इच्छाकारेण संदिस्सह इच्छं' ए पद न कहे ॥

॥ पीछे खडे हो कर करेमि भंते सामाइयं० ॥ इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिओ० ॥

तस्सुत्तरि०॥अन्नत्थू०॥इत्यादि कहि के, आठ न वकारका काउस्सग्ग करे काउस्सग्गमांहे आजूना चउ प्रहरमे॥ इत्यादि पाठ मनमें चिंतवी, णमो अरिहंताणं कही काउस्सग्ग पारि कें प्रगट लोगस्स कहे ॥

॥ पीछें संडासा प्रमार्जन पूर्वक बैठ के तीसरे आवश्यक सूत्र वांदणा मुहपत्ती पडिलेहु ? गुरु कहे, पडिलेहेह पीछें मुहपत्ती पडिलेहि के वांदणां देवे पीछे अवग्रहमाहिज उभो थको इच्छा०॥ स० ॥ ज० ॥ देवसिय आलोउं, एसा कहे तब गुरु कहे आलोएह. पीछें इच्छ आलोएमि० ॥ यह पाठ कह के अतिचार आलोवे पीछे सव्वस्सवि देवसियं इत्यादियी मारीने इच्छाकारेण संदिस्सह पर्यंत कहे, तब गुरु पडिक्कमह यह पाठ कहे ॥

॥ पीछे इछं तस्स मिच्छामि दुक्कड कहि कें संडासा प्रमार्जि प्रमार्जित भूमिये आसन पर

वैठ के भगवन्! सूत्र भणुं एसा कहे तब गुरु कहे भणेह पीछे इच्छ कही तीन नवकार गणी, तीन करेमि भं ते भणीने इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे देव सिउ इत्यादि कही एक श्रावक वंदित्तु कहे दू सरा सब सुने पीछें खडा हो कर अब्भुठिउमि आराहणाए इत्यादि सपूर्ण पाठ कही, दो वांद णा देवे, अरु अवग्रहमाहिज खडा हुवा इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ अब्भुठिउमि अभिंतर देवसियं खामेउं? गुरु कहे, खामेह ॥

॥ पीछें इच्छं खामेमि देवसिय कहि के गोडाखी ये बैठ कें वाम हाथे मुहपत्ती मुखें धर कें दक्षि ए हाथ गुरु सन्मुख कर कें सर्व पाठ कहे पीछें विधिसेंती दो वांदणां दे कर आयरिय उवझाय इत्यादि त्रण गाथा कहिके करेमि भ ते सामाइ य इच्छामि ठामि काउस्सग्ग इत्यादि कही चारि त्र शुद्धि निमित्ते अन्नत्थू० ॥ कहि कें आठ नव, ... लोगस्सका

काउस्सग्ग करी पारि के पीछे दर्शनशुद्धि नि मित्ते प्रगट लोगस्स कही सवलोए अरिहंत चेइयाण०॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नत्थू० ॥ कहि के एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारि के ज्ञान शुद्धि निमित्तें पुक्खरवरदीवड्ढे कहि के सुयस्स नगवउ० ॥ वंदणवत्ति०॥ अन्नत्थू० ॥ कहि के एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे पीछे पारि कें सिद्धाण बुद्धाण० कहि कें वेयावच्चगराण न कहे पीछें सुयदेवयाए करेमि काउस्सग्ग अन्न त्थू०॥ कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करे पीछे गुरुका योग न होवे तो एक श्रावक काउ स्सग्ग पारिके णमो अर्हत्सिद्धा० कहि के श्रुत देवताकी स्तुति कहे गुरु हुवे तो,गुरु कहे. और दूजा सर्व स्तुति सुणके काउस्सग्ग पारे अब श्रुतदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते हे ॥

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥

॥ सुवर्णशालिनी दयाद्, द्वादशांगी जिनो

वैठ के भगवन्! सूत्र भणु एसा कहे तब गुरु कहे भणेह पीछे इछं कही तीन नवकार गणी, तीन करेमि भ ते भणीने इछामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिउ इत्यादि कही एक श्रावक वंदित्तु कहे दूसरा सब सुने. पीछें खडा हो कर अभुठिउंमि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण पाठ कही, दो वांदणा देवे, अरु अवग्रहमाहिज खडा हुवा इछा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ अभुठिउंमि अभिंतर देवसियं खामेउ? गुरु कहे, खामेह ॥

॥ पीछें इछं खामेमि देवसियं कहि कें गोडाली यें वैठ कें वाम हाथे मुहपत्ती मुखें धर के दक्षिण हाथ गुरु सन्मुख कर कें सर्व पाठ कहे पीछें विधिसेंती दो वांदणा दे कर आयरिय उवझाय इत्यादि त्रण गाथा कहिके करेमि भ ते सामाइय इछामि ठामि काउस्सग्गं इत्यादि कही चारित्र शुद्धि निमित्ते करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थू० ॥ कहि कें आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका

काउस्सग्ग करी पारि के पीछे दर्शनशुध्धि नि
मित्ते प्रगट लोगस्स कही सवलोए अरिहंत
चेइयाणं०॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नत्थू० ॥ कहि के
एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारि कें ज्ञान
शुध्धि निमित्तें पुक्खरवरदीवड्ढे कहि के सुयस्स
जगवउ० ॥ वंदणवत्ति०॥ अन्नत्थू० ॥ कहि कें
एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे पीछे पारि
कें सिध्धाण बुध्धाण० कहि कें वेयावच्चगराणं न
कहे पीछे सुयदेवयाए करेमि काउस्सग्ग अन्न
त्थू०॥ कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करे.
पीछें गुरुका योग न होवे तो एक श्रावक काउ
स्सग्ग पारि के णमो अर्हत्सिध्धा० कहि के श्रुत
देवताकी स्तुति कहे गुरु हुवे तो,गुरुकहे. और
दूजा सर्व स्तुति सुण कें काउस्सग्ग पारे अव
श्रुतदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥

॥ सुवर्णशालिनी दयाद्, द्वादशांगी जिनो

वैठ कें नगवन्! सूत्र नणुं एसा कहे तब गुरु कहे नणेह पीछें इछ कही तीन नवकार गणी, तीन करेमि न ते नणीने इछामि पडिकमिउ जो मे देव सिउ इत्यादि कही एक श्रावक वंदित्तु कहे. दू सरा सब सुने पीछें खडा हो कर अप्भुठिउमि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण पाठ कही, दो वांद णा देवे, अरु अवग्रहमाहिज खडा हुवा इछा० ॥ सं० ॥ न० ॥ अप्भुठिउमि अप्निंतर देवसियं खामेउ? गुरु कहे, खामेह ॥

॥ पीछें इछं खामेमि देवसिय कहि के गोमली ये वैठ कें वाम हाये मुहपत्ती मुखें धर के दक्षि ण हाथ गुरु सन्मुख कर कें सर्व पाठ कहे पीछें विधिसेंती दो वांदणां दे कर आयरिय उवझाय इत्यादि त्रण गाथा कहिके करेमि नं ते सामाइ य इछामि ठामि काउस्सग्ग इत्यादि कही चारि त्र शुद्धि निमित्ते करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थू० ॥ कहि कें आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका

काउस्सग्ग करी पारि के पीछे दर्शनशुद्धि निमित्ते प्रगट लोगस्स कही सबलोए अरिहंत चेइयाणं०॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नत्थू० ॥ कहि के एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारि कें ज्ञान शुद्धि निमित्तें पुरूकरवरदीवड्ढे कहि कें सुयस्स भगवउ० ॥ वंदणवत्ति०॥ अन्नत्थू० ॥ कहि कें एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे पीछे पारि कें सिद्धाण बुद्धाण० कहि कें वेयावच्चगराणं न कहे पीछे सुयदेवयाए करेमि काउस्सग्ग अन्नत्थू०॥ कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करे, पीछे गुरुका योग न होवे तो एक श्रावक काउस्सग्ग पारि के णमो अर्हत्सिद्धा० कहि के श्रुत देवताकी स्तुति कहे गुरु हुवे तो,गुरु कहे. और दूजा सर्व स्तुति सुण कें काउस्सग्ग पारे अब श्रुतदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥

॥ सुवर्णशालिनी दयाद, द्वादशांगी जिनो

बैठ कें भगवन्! सूत्र भणुं एसा कहे तब गुरु कहे
भणेह पीछे इछं कही तीन नवकार गणी, तीन
करेमि भ ते भणीने इछामि पडिक्कमिउं जो मे देव
सिउ इत्यादि कही एक श्रावक वंदित्तु कहे दू
सरा सब सुने पीछें खडा हो कर अब्भुठिओमि
आराहणाए इत्यादि संपूर्ण पाठ कही, दो वांद
णा देवे, अरु अवग्रहमाहिज खडा हुवा इछा०
॥ सं० ॥ भ० ॥ अब्भुठिओमि अभिंतर देवसियं
खामेउ? गुरु कहे, खामेह ॥

॥ पीछे इछं खामेमि देवसियं कहि के गोम्मजी
ये बैठ कें वाम हाथे मुहपत्ती मुखें धर के दक्षि
ण हाथ गुरु सन्मुख कर कें सर्व पाठ कहे पीछें
विधिसेंती दो वादणा दे कर आयरिय उवझाय
इत्यादि त्रण गाथा कहिकें करेमि भं ते सामाइ
य इछामि ठामि काउस्सग्गं इत्यादि कही चारि
त्र शुद्धि निमित्ते करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थू० ॥
कहि कें आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका

काउस्सग्ग करी पारि कें पछि दर्शनशुद्धि नि मित्ते प्रगट लोगस्स कही सवलोए अरिहंत चेइयाणं०॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नत्थू० ॥ कहि के एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारि कें ज्ञान शुद्धि निमित्तें पुक्खरवरदीवड्ढे कहि कें सुयस्स भगवउ० ॥ वंदणवत्ति०॥ अन्नत्थू० ॥ कहि के एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे पीछें पारि कें सिद्धाण बुद्धाण० कहि कें वेयावच्चगराण न कहे पछि सुयदेवयाए करेमि काउस्सग्ग अन्न त्थू०॥ कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करे पीछें गुरुका योग न होवे तो एक श्रावक काउ स्सग्ग पारिके णमो अर्हत्सिद्धा० कहि के श्रुत देवताकी स्तुति कहे गुरु हुवे तो,गुरु कहे. और दूजा सर्व स्तुति सुणके काउस्सग्ग पारे अब श्रुतदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते हे ॥

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥

॥ सुवर्णशालिनी दयाद्, द्वादशांगी जिनो

बैठ के भगवन्! सूत्र भणुं एसा कहे तब गुरु कहे भणेह पीछे इछ कही तीन नवकार गणी, तीन करेमि भं ते भणीने इछामि पडिक्कमिउं जो मे देव सिउ इत्यादि कही एक श्रावक वंदित्तु कहे दू सरा सब सुने पीछें खडा हो कर अब्भुठिओमि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण पाठ कही, दो वांद णा देवे, अरु अवग्रहमाहिज खडा हुवा इछा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ अब्भुठिओमि अभिंतर देवसियं खामेउ? गुरु कहे, खामेह ॥

॥ पीछें इछं खामेमि देवसिय कहि के गोभाखी ये बैठ के वाम हाथे मुहपत्ती मुखें धर कें दक्षि ण हाथ गुरु सन्मुख कर कें सर्व पाठ कहे पीछें विधिसेंती दो वांदणा दे कर आयरिय उवझाय इत्यादि त्रण गाथा कहिके करेमि भ ते सामाइ य इछामि ठामि काउस्सग्ग इत्यादि कही चारि त्र शुध्दि निमित्ते करेमि काउस्सग्ग अन्नत्थू० ॥ कहि कें आठ नवकार अथवा दो ... स्स ...

काउस्सग्ग करी पारि के पीछे दर्शनशुद्धि निमित्ते प्रगट लोगस्स कही सब्बलोए अरिहंत चेइयाण०॥ वदणवत्ति० ॥ अन्नत्थू० ॥ कहि के एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारि कें ज्ञान शुद्धि निमित्तें पुस्करवरदीवड्ढे कहि कें सुयस्स नगवउ० ॥ वदणवत्ति०॥ अन्नत्थू० ॥ कहि के एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे पीछे पारि के सिद्धाण बुद्धाण० कहि कें वेयावच्चगराणं न कहे पीछे सुयदेवयाए करेमि काउस्सग्ग अन्नत्थू०॥ कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करे. पीछें गुरुका योग न होवे तो एक श्रावक काउस्सग्ग पारिके णमो अर्हत्सिद्धा० कहि के श्रुत देवताकी स्तुति कहे गुरु हुवे तो,गुरुकहे और दूजा सर्व स्तुति सुणकें काउस्सग्ग पारे अब श्रुतदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥

॥ सुवर्णशालिनी दयाद्, द्वादशांगी जिनो

बैठ के भगवन्! सूत्र भणुं एसा कहे तब गुरु कहे भणेह पीछे इछ कही तीन नवकार गणी, तीन करेमि भ ते भणीने इछामि पडिक्कमिउं जो मे देव सिउ इत्यादि कही एक श्रावक वंदित्तु कहे दू सरा सब सुने पीछें खडा हो कर अब्भुट्ठिओमि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण पाठ कही, दो वांद णा देवे, अरु अवग्रहमाहिज खडा हुवा इछा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर देवसियं खामेउ? गुरु कहे, खामेह ॥

॥ पीछें इछं खामेमि देवसिय कहि के गोभाली यें बैठ कें वाम हाथे मुहपत्ती मुखें धर कें दक्षि ण हाथ गुरु सन्मुख कर कें सर्व पाठ कहे पीछें विधिसेंती दो वांदणा दे कर आयरिय उवझाय इत्यादि त्रण गाथा कहिके करेमि भं ते सामाइ य इछामि ठामि काउस्सग्गं इत्यादि कही चारि त्र शुद्धि निमित्त करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थू० ॥ कहि कें आठ नवकार अथवा दो

ण मतर, जोइसवासविमाण वासीय॥ जे केवि
डुठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मे स्वाहा ॥ १ ॥ प
च्चरकाण नहिं लिया होय तो करे ॥ सामायिक
चोइसलो पडिकमणा, वांदणा, काउस्सग्ग, पच्च
रकाण, ब आवश्यक सांधता कानो, मात्रा, उंगे
अधिको अक्कर उंचो नीचो कह्यो होय, ते सर्वे
मन, वचन, कायाये करी मिछामि डुकडं ॥ इछा
मो अणुसठिं०॥ कही बैठे पछि गुरु एक स्तुति
कह्या पीछे श्रावक समस्त, मस्तके अंजलि क
रिकें णमो खमासमणाण॥ णमोऽर्हत्सिद्धा०॥ क
ही॥णमोऽस्तु वर्द्धमानाय० इत्यादि तीन स्तुति
कहे श्राविका णमो खमासमणाणं कही ससार
दावाकी स्तुति कहे

॥ अथ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय ॥

॥ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्म
॥ तज्जयावासमोक्षाय, परोक्षाय कुती
र्थिनां ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या, ज्याय

भवा ॥ श्रुतदेवी सदा मह्य, मशेषश्रुतसंपदम् ॥ २ ॥ पछिं खित्तदेवयाए, करेमि काउस्सग्गं० ॥ अन्नत्थू० ॥ कहि के, एक नवकार चिंतवी पूर्व ली परें क्षेत्रदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ क्षेत्रदेवताकी स्तुति ॥

॥ यासा क्षेत्रगता सति, साधव श्रावका दय ॥ जिनाज्ञा साधयतस्ता, रक्षंतु क्षेत्र देवता ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पछिं खडा हुवा एक नवकार कही, सं मासा प्रमार्जि बकड्ड बैठ कें छठे आवश्यककी मुहपत्ती पडिलेहु ? गुरु कहे पडिलेहेह

पछि मुहपत्ती पडिलेही विधिशु दो वांदणा देइ ॐ वरकनक कहे, सो लिखते हे

॥ अथ वरकनक प्रारम्भ ॥

॥ ॐ वरकणय सख विद्रुम, मरगय घण स न्निह विगय मोह ॥ सित्तरि सयं जिणाणं, स मर पूइय वंदे ॥ स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ भवणवा

ण मतर, जोइसवासविमाण वासीय॥ जे केवि
छठदेवा, ते सवे उवसमंतु मे स्वाहा ॥ १ ॥ प
च्चस्काण नहिं लिया होय तो करे ॥ सामायिक
चोइसव्वो पडिक्कमणां, वांदणां, काउस्सग्ग, पच्च
स्काण, ब आवश्यक सांधता कानो, मात्रा, उगे
अधिको अक्कर उचो नीचो कह्यो होय, ते सर्वे
मन, वचन, कायाये करी मिच्छामि डुक्कडं ॥ इच्छा
मो अणुसहिंण॥ कही बेठे पीछे गुरु एक स्तुति
कह्या पीछें श्रावक समस्त, मस्तके अंजलि क
रिकें णमो खमासमणाणं॥ णमोऽर्हत्सिद्धा०॥ क
ही॥णमोऽस्तु वर्द्धमानाय० इत्यादि तीन स्तुति
कहे श्राविका णमो खमासमणाण कही संसार
दावाकी स्तुति कहे

॥ अथ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय ॥

॥ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्म
॥ तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुती
र्थिनाम् ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या, ज्यायः

क्रमकमलावलिं दधत्या ॥ सदृशैरिति संगतं प्रशस्य, कथित सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्रा ॥ ॥ २ ॥ कषायतापार्दितजंतुनिर्वृतिं, करोति यो जैनमुखाम्बुदोद्गत ॥ स शुक्रमासोद्भववृष्टिसन्निभो, ददातु तुष्टिं मयि विस्तरोगिराम् ॥३॥ श्वसितसुरभिगंधा लीढभृङ्गीकुरङ्ग, मुखशशिनमजस्त्रं बिभ्रती या बिभर्त्ति ॥ विकच कमलमुच्चै साऽस्त्वचिंत्यप्रभावा, सकलसुखविधात्री प्राणभाजां श्रुताङ्गी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ यह तीन गाथा कहि के पीछे णमोत्थुणं० कहि कें एक श्रावक खमासमण देई कहे—इच्छा का० ॥ स० ॥ भ० ॥ स्तवन भणुं? दूसरा खमासमण देई कहे ॥ इच्छा० ॥ सं०॥ भ० ॥ स्तवन भणु स्तवन सांभलु? गुरु कहे, भणेह सांभलेह पीछे आसन पर बैठ के नमोऽर्हत्सिद्धा०॥ कहि कें बडो स्तवन कहे, सो ` `

॥ अथ श्री चिंतामणि पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ नविका श्रीजिनबिंब जुहारो, आतम परम आधारो रे ॥ न०॥श्री०॥ जिनप्रतिमा जिन सारखीजाणो, न करो शंका कांई ॥ आगम वाणीने अनुसारें, राखो प्रीति सवाई रे ॥ न० श्री० ॥ १ ॥ जे जिनबिंब स्वरूप न जाणे, ते कहियें किम जाणे ॥ नूला तेह अज्ञाने नरिया, नहिं तिहा तत्त्व पिछाणे रे ॥ न० ॥ श्री० ॥ ॥ २ ॥ अंबड श्रावक श्रेणिक राजा, रावणप्रमुख अनेक ॥ विविधपरे जिन नगति करता, पाम्या धर्म विवेक रे ॥ न० ॥ श्री० ॥३॥ जिन प्रतिमा बहु नगतें जोता, होय निश्चय उपगार ॥ परमारथ गुण प्रगटे पूरण, जो जो आर्द्र कुमार रे ॥ न० ॥ श्री० ॥४॥ जिनप्रतिमा आकारे जलचर, बे बहु जलधि मझार ॥ ते देखी बहुला मत्स्यदिक,पाम्या विरतिप्रकार रे ॥ न० ॥ श्री० ॥५॥ पाचमा अंगे जिन प्रतिमानो, प्र

गटपणे अधिकार ॥ सूरियाज सुर जिनवर पू
ज्या, रायपसेणी मझार रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥६॥
दशमे अगें अहिंसा दाखी, जिन पूज्या जिन
राज ॥ एहवा आगम अरथ मरोडी, करियें केम
अकाज रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥७॥ समकितधारी स
तीय द्रौपदी, जिन पूज्या मन रंगें ॥ जो जो प
हनो अरथ विचारी, छठे ज्ञाता अगें रे ॥ ज०
श्री० ॥ ८ ॥ विजयसुरें जिम जिनवर पूजा,
कीधी चित्त थिर राखी ॥ द्रव्य जाव बिहुं जेदें
कीनी, जीवाजिगम ते साखी रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥
॥ ए ॥ इत्यादिक बहु आगम साखें, कोइ शं
का मति करजो ॥ जिनप्रतिमा देखी नित
नवली, प्रेम घणो चित्त धरजो रे ॥ ज० ॥ श्री०
॥ १० ॥ चिंतामणि प्रजु पास पसाये, सरधा
होजो सवाई ॥ श्रीजिनलाज सुगुरु उपदेशें,
श्रीजिनचंद सवाई रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ११ ॥
इति श्रीचिंतामणि पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ पीछें तीन खमासमणें आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु वांदी, अड्ढाइज्जेसु कहनां, फेर खमास मणे ॥ इच्छाका० ॥ स० ॥ भ० ॥ देवसि पाय छित विशुद्धि निमित्त काउस्सग्ग करुं ? गुरु कहे, करेह पीछें इच्छं कहि कें देवसि पायछित्त विशुद्धि निमित्तं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थू० ॥ कहि शोले नवकार अथवा चार लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पारी के लोगस्स कहे

॥ पछि खमासमण दे कर इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ खुद्दोवद्दव उड्डावणत्थं करेमि काउस्स ग्ग ॥ अन्नत्थू० ॥ इत्यादि कही शोल नवकार अथवा चार लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पा रि कें प्रगट लोगस्स कहे पछि खमासमण देई ॥ सज्झाय संदिस्साउं फेर खमासमण देई सज्झाय करु ? तीन नवकार गुणीजें पछि ख मासमण देई कें ॥ इच्छा० ॥ स० ॥ भगवन् चै त्यवंदन करुं जी ॥ ऐसा कह कर थभणा पा

र्श्वनाथजीका चैत्यवंदन करे, सो लिखते हे ॥

॥ अथ श्रीथंनणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन ॥

॥ श्रसेढीतटिनीतटे पुरवरे श्रीस्तंजने स्वर्गिरौ, श्रीपूज्याजयदेवसूरिविबुधाधीशै समारोपित ॥ ससिक्त स्तुतिनिर्जलै शिव फल स्फूर्जत्फणापल्लवः, पार्श्व कल्पतरु स मे प्रथयता नित्यं मनोवाछितम् ॥ १ ॥ आधि व्याधिहरो देवो, जीरावल्लीशिरोमणि ॥ पार्श्व नाथो जगन्नाथो, नित्यनाथो नृणां श्रिये॥इति॥

॥ पीछे नमोत्थुणंसें लेकें जयवीयराय सुधी कहे ॥ पीछें खमासमणपूर्वक मस्तक नमावी ' सिरि थंनणयछिय पास सामिणो० ' इत्यादि दोय गाथा कहे, सो लिखते हे.

॥ अथ श्रीथंनणयछियपाससामिणो ॥

॥ श्री थंनणयछियपाससामिणो सेस तिछ सामीण ॥ तिछ समुन्नय कारण, सुरासुराणं च सबेसिं ॥ १ ॥ एस महं सरणछ, काउस्सग्ग

करेमि सत्तीए॥ नत्तीए गुण सुठियस्स,सघस्स समुन्नय निमित्तं ॥ २ ॥ इति ॥

॥ श्रीथन्नणा पार्श्वनाथजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ पीछें खडे हो के वंदण व० ॥ अन्न० ॥ कही चार लोगस्सका काउस्सग्ग करि के पीछे पारी प्रगट लोगस्स कही कें ॥ श्रीखरतरगछ सिणगारहारजंगम युगप्रधान नट्टारक दादाजी श्रीजिनदत्त सूरिजी चारित्र चूडामणीजी आराधवा निमित्त करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थू० कहि के,एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पछि प्रगट लोगस्स कह के

॥ श्रीखरतरगछ सिणगारहार जंगमयुग प्रधान नट्टारक दादाजी श्रीजिन कुशल सूरिजी चारित्र चूडामणिजी आराधवा निमित्त करेमि काउस्सग्ग ॥ अन्नत्थू० कहि के एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे पीछें प्रगट लोगस्स कहि बैठ के माथो गोमो ऊंचो करि के खमास

र्श्वनाथजीका चैत्यवंदन करे, सो लिखते हे ॥
॥ अथ श्रीथंभणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन ॥
॥ श्रसेढीतटिनीतटे पुरवरे श्रीस्तंभने स्वर्गिरो, श्रीपूज्याभयदेवसूरिविबुधाधीशै समारोपित ॥ ससिक्त स्तुतिभिर्जलैः शिव फल स्फूर्जत्फणापल्लवः, पार्श्वे कल्पतरु स मे प्रथयता नित्यं मनोवांछितम् ॥ १ ॥ आधि व्याधिहरो देवो, जीरावल्लीशिरोमणि ॥ पार्श्व नाथो जगन्नाथो, नित्यनाथो नृणा श्रिये॥इति॥
॥ पीछे नमोत्थुणंसें लेके जयवीयराय सुधी कहे ॥ पीछें खमासमणपूर्वक मस्तक नमावी 'सिरि थंभणयठिय पास सामिणो०' इत्यादि दोय गाथा कहे, सो लिखते हे
॥ अथ श्रीथंभणयठियपाससामिणो ॥
॥ श्री थंभणयठियपाससामिणो सेस तित्थ सामीण ॥ तित्थ समुन्नय कारणं, सुरासुराणं च सव्वेसिं ॥ १ ॥ एस मई सरणत्थं, काउस्सग्गं

तो वडी शाति सुणे, परतु और दिनोमे छोटी शाति सुणे, सो लिखते है

॥ अथ लघुशातिस्तव ॥

॥ शातिं शातिनिशांतं, शांतं शांताशिव नमस्कृत्य ॥ स्तोतु शातिनिमित्तं, मत्रपदै शांतये स्तौमि ॥ १ ॥ उमिति निश्चितवचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम् ॥ शांतिजिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेषकमहा, संपत्तिसमन्विताय श स्याय ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च, नमोनमः शातिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह, स्वा मिकसपूजिताय निजिताय ॥ भुवनजनपा लनोद्यत, तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ स र्वडुरितौघनाशन, कराय सर्वाशिवप्रशम नाय ॥ डुष्ट ग्रह भूतपिशाच, शाकिनीना प्र मथनाय ॥५॥ यस्येति नाममंत्र, प्रधानवाक्यो पयोगकृततोपा ॥ विजया कुरुते जनहित,

मण देई कें, इच्छा० ॥ स० ॥ भ० ॥ चैत्यवंदन करुं जी ऐसें कहि के चैत्यवंदन करे

॥ अथ चउक्कसाय ॥

॥ चउक्कसाय पडिमल्लुल्लूरण, डुज्जय मय ण बाण मुसुमूरण ॥ सरस पियगु वन्नु गय गामिउ, जयउ पास भुवणत्तय सामिय ॥ १ ॥ जसु तणु कंति कडप्पसिणिध्द्उ, सोहइ फणम णि किरणालिध्द्उ ॥ नवव जलहर तडिल्ल य लंछिय, सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिय ॥ २ ॥

॥ अर्हन्तो भगवत इंद्रमहिता सिध्दाश्च सिध्दिस्थिता, आचार्या जिनशासनोन्नतिकरा पूज्या उपाध्यायका ॥ श्रीसिध्दातसुपाठका मु निवरा रत्नत्रयाराधका, पंचैते परमेष्ठिनः प्र तिदिन कुर्वंतु वोमंगलम् ॥ १ ॥

॥ पीछें नमुत्थूणसें ले कें जयवीयराय पर्यंत कहि कें, पक्खी, चउम्मासी अरु

कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्ति च कुरु कुरु त्वं मे ॥ १३ ॥ नगवति गुणवति शिवशां, ति तुष्टि पुष्टिस्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम् ॥ उमिति नमो नमो ह्रौं, ह्रीं ह्रूँ ह्र य क्षः ह्रीं फट् फट् स्वाहा ॥ १४ ॥ एव यन्नामाक्षर, पुरस्स र संस्तुता जया देवी ॥ कुरुते शांतिं नमतां, नमो नम शांतये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरि दर्शित, मंत्रपदविदर्भित स्तवः शांते ॥ स लिलादिनय विनाशी, शांत्यादिकरश्च नक्ति मताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोति नावयति वा यथायोग्यम्॥ स हि शांतिपदं या यात्, सूरि श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ उपसर्गाः क्षयं याति, छिद्यंते विघ्नवल्लय ॥ मन प्रसन्न तामेति, पूज्यमाने जिनेश्वर ॥ १७ ॥ सर्वमंगल मांगल्य,सर्व कल्याण कारणम् ॥ प्रधानं सर्व ध र्माणा, जैनं जयति शासनम् ॥ १ए ॥ इति ॥

॥ पहि चीराकका अथवा बीजलीका चादणा

मिति च नुता नमत तं शांतिम् ॥ ६ ॥ भवतु न
मस्ते भगवति, विजये सुजये परापरैरजिते ॥
अपराजिते जगत्या, जयतीति जयावहे भव
ति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि च संघस्य, भद्र कल्या
ण मंगलप्रददे ॥ साधूनां च सदा शिव, सुतु
ष्टिपुष्टिप्रदे जीयाः ॥ ८ ॥ भव्यानां कृतसि
द्धे, निर्वृति निर्वाणजननि ! सत्त्वानाम् ॥ अभय
प्रदाननिरते, नमोस्तु स्वस्तिप्रदे तुभ्यम् ॥९॥
भक्तानां जन्तूनां, शुभावहे नित्यमुद्यते देवि ! ॥
सम्यग्दृष्टीनां धृति, रति मति बुद्धि प्रदाना
य ॥ १० ॥ जिनशासननिरतानां, शांतिन
तानां च जगति जनतानाम् ॥ श्रीसंपत्कीर्त्ति य
शो, वर्द्धिनि ! जय देवि विजयस्व ॥ ११॥ सलि
लानल विषविषधर, दुष्ट ग्रह राज रोगर
णभयत ॥ राक्षस रिपुगण मारी, चौरेतिश्वा
पदादिभ्य ॥ १२ ॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं,
कुरु कुरु शांतिं च कुरु कुरु मदेति ॥ तुष्टिं

कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्ति च कुरु कुरु
त्वं मे ॥ १३ ॥ नगवति गुणवति शिवशां, ति
तुष्टि पुष्टि स्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम् ॥ उमिति
नमो नमो ह्रौं, ह्रीं ह्रूं ह्र य क्षः ह्रीं फट्
फट् स्वाहा ॥ १४ ॥ एव यन्नामाक्षर, पुरस्स
र संस्तुता जया देवी ॥ कुरुते शांतिं नमतां,
नमो नम शांतये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरि
दर्शित, मंत्रपदविदर्भित· स्तवः शाते ॥ स
लिलादिभय विनाशी, शात्यादिकरश्च नक्ति
मताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोति
नावयति वा यथायोग्यम्॥ स हि शांतिपद या
यात्, सूरि श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ उपसर्गाः
क्षय यांति, छिद्यंते विघ्नवल्लय ॥ मन प्रसन्न
तामेति, पूज्यमाने जिनेश्वर ॥ १८ ॥ सर्वमंगल
मांगल्य,सर्व कल्याण कारणम् ॥ प्रधानं सर्व ध
र्माणा, जैन जयति शासनम् ॥ १९ ॥ इति ॥
॥ पछि चीराककां अथवा वीजलीका चादणा

पडा होय तो इरियावहि० तस्सुत्तरी० अन्नत्थ० कहि कें, एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पीछे प्रगट लोगस्स कही पूर्वली परे सामायिक पारे पीछे एक स्तवन दादाजीको कहे ॥ इति देवसी पडिक्कमण विधि संपूर्ण ॥

॥ अथ कमलदलस्तुति ॥

॥ कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलगर्भसमगौरी ॥ कमले स्थिता भगवती, ददातु श्रुतदेवता सौख्यम् ॥१॥ ज्ञानादिगुणयुताना, स्वाध्यायध्यानसयमरतानाम् ॥ विदधातु भुवनदेवी, शिव सदा सर्वसाधूनाम् ॥ २ ॥ यस्या क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभि साध्यते क्रिया ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्य, भूयान्न सुखदायिनी ॥ ३ ॥ इति क्षेत्रदेवता स्तुति ॥

॥ कल्याणकमला गेह, नीलदेहं महासह ॥ नवखण्डानिधं पार्श्व, सदा ध्यायामि मानसे॥

॥ अथ लुटक चैत्यवंदनस्तुतिर्लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम श्रीपार्श्वजिन स्तुति ॥

॥ सकलकुशलवल्ली, पुष्करावर्त्तमेघो, दुरिततिमिरभानु कल्पवृक्षोपमान. ॥ भवजलनिधिपोत सर्वसंपत्तिहेतु, स भवतु सततं व, श्रेयसे पार्श्वदेव ॥ १ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन० ॥

॥ अथ जिनस्तुतिः ॥

॥दर्शनाद्दुरितध्वंसी,वंदनाद्वांछितप्रद ॥ पूजनात्पूरक श्रीणा, जिन साक्षात्सुरद्रुम ॥२॥ इति॥

॥ अथ आदिजिन स्तुति ॥

॥ सुवर्णवर्णं गजराजगामिन, प्रलंबबाहु सुविशाललोचनम् ॥ नरामरेंद्रै स्तुतपादपंकज, नमामि भक्त्या ऋषभं जिनोत्तमम् ॥३॥ इति आदिजिनस्तुति ॥

॥ अथ शांतिजिन स्तुति ॥

॥ सोलम जिनवर शांतिनाथ, सेवो शिर नामी ॥ कंचन वरण शरीर कांति, अतिशय

अभिरामी ॥ अचिरा अंगज विश्वसेन, नरप
ति कुलचंद ॥ मृगलंछन धर पद कमल, सेवे
सुरनरवृंद॥जुगमां अमृत जेहवी ए, जास अ
खंडित आण॥ एक मने आराधता, लहिये को
डि कल्याण ॥४॥ इति श्रीशांतिनाथस्तुतिः ॥

॥ अथ नेमिनाथस्तुति ॥

॥ प्रह सम प्रणमुं नेमिनाथ, जिनवर जयवं
त ॥ यादवकुल अवतंस हंस, उत्तम गुणवंत
॥ समुद्रविजय शिवा देवी जास, मति सहित
उदार ॥ सुंदर श्याम शरीर ज्योति, सोहे सु
खकार॥गढ गिरनारे जिण लह्यु ए, अमृत पद
अभिराम ॥ तास क्षमा कल्याण मुनि, निशि
दिन नमत कल्याण ॥ ५ ॥ इति श्रीनेमिनाथ०

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ स्तुति ॥

॥ पुरसादाणी पास नाह, नमियें मन रंग ॥
नील वरण अश्वसेन नंद, निरमल नि शंक ॥
कामित पूरण कलप साख, वामासुत सार ॥

श्रीगोडी पुर स्वामि नाम, जपियें निरधार ॥ त्रि
भुवन पति त्रेवीशमो ए, अमृत सम जसु वा
ण ॥ ध्यान धरता एहनुं, प्रगटे परम कल्याण
॥ ६ ॥ इति पार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुतिः ॥

॥ वंदू जगदाधार सार, शिव संपत्ति कार
ण ॥ जन्म जरा मरणादि रूप, भव ताप निवा
रण ॥ श्रीसिद्धारथ तात मात, त्रिशला
तनुजात ॥ सोवन वरण शरीर वीर, त्रिभुवन
विख्यात ॥ अमृतरूपे राजतो ए, चोवीशमो
जिनराय ॥ क्षमाप्रमुख कल्याण मुणि, आ
पो करि सुपसाय ॥ ७ ॥ इति श्री महावीर० ॥

॥ अथ पाक्षिकादि पडिक्कमणविधिर्लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम वंदित्तु सूत्र पर्यंत दैवसिक
पडिक्कमी ॥ १ ॥ खमासमण देई देवसी आलोइयं
पडिक्कता ॥ इछा० ॥ स० ॥ भ० ॥ पक्खिय मुह
पत्ती पडिलेहुं [1] चउमासीएं चउम्मासिय मुहप

अभिरामी ॥ अचिरा अंगज विश्वसेन, नरप ति कुलचद ॥ मृगलंछन धर पद कमल, सेवे सुरनरवृंद॥जुगमा अमृत जेहवी ए, जास अ खंडित आण॥ एक मने आराधता, लहियें को डि कल्याण ॥४॥ इति श्रीशांतिनाथस्तुतिः ॥

॥ अथ नेमिनाथस्तुति ॥

॥ प्रह सम प्रणमु नेमिनाथ, जिनवर जयवं त ॥ यादवकुल अवतंस हंस, उत्तम गुणवंत ॥ समुद्रविजय शिवा देवी जास, मति सहित उदार ॥ सुदर श्याम शरीर ज्योति, सोहे सु खकार॥गढ गिरनारें जिण लह्यु ए, अमृत पद अभिराम ॥ तास क्षमा कल्याण मुनि, निशि दिन नमत कल्याण ॥ ५ ॥ इति श्रीनेमिनाथ०

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ स्तुति ॥

॥ पुरसादाणी पास नाह, नमियें मन रंग ॥ नील वरण अश्वसेन नंद, निरमल नि शंक ॥ कामित पूरण कलप साख, वामासुत सार ॥

नरसह्नं दिवसाण पनरसह्न राईण ज किंचि अप्पत्तिय ॥ इत्यादि सर्व पाठ कहे चउमासें चउह्न मासाण अठह्न पस्काणं वीसोत्तरसो राइंदियाण ज किंचि अप्पत्तिय ॥ इत्यादि कहे संवछरीयें इवालसह्न मासाण चउवीसह्न पस्काणं तिन्निसयसठिराइंदियाण ॥ जं किंचि अप्पत्तिय इत्यादि कहे ॥ तेवारे गुरु पण मिछा मि डुक्कड कहे ॥ तिहा दोय साधु उचरता हुवे तो पाखिये तीन, चउमासीये पाच, संवछरीयें सात साधुने खमावे ॥ पछि उठी अवग्रहमाहि रह्यो कहे ॥ इछा० ॥ स०॥ न०॥ पस्किय आ लोउं ? गुरु कहे आलोएह ॥ पछि इछ आलोए मि, जो मे पस्किउ॥३॥ अइयारो कउ, इत्यादि सू त्र नणी॥ संक्षेपें अथवा विस्तारें पाखी चउमा सी संवछरी, अतिचार आलोवे,सो लिखते हैं॥

॥ अथ वृहदतिचारा लिख्यते ॥

॥ नाणमि दसणमिय, चरणमि तवेय तह य

त्ती, संवच्छरीये सवच्छरी मुहपत्ती पडिलेहुं ? एम कहे पीछें गुरु कहे, पडिलेहेह ॥ पीछे इच्छं कहे, दूजी खमासमण देइ, मुहपत्ती पडिलेही, वांदणा देई, तिहां पक्खीमें पक्खो वइक्कतो ॥ चउमासी पडि० ॥ चउमासीउ वइक्कंतो सवच्छरीमें सवच्छरो वइक्कतो एम यथायोगें कहे ॥ पीछे गुरु कहे पुण्यवतो देवसीने स्थानकें पाक्षिक ॥ चउमासिक सावच्छरिक जणजो छींक जयणा करजो मधुर स्वरे पडिक्कमजो, खासे सो विवरा शुद्ध खासजो. माण्डलमें सावचेत रहेजो. पीछें सघलाही तहत्ति कहे ॥ पीछें उठी ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ संबुद्धा खामणेण ॥ अब्भुट्ठिउमि अभिंतर पक्खिय ॥ ३ ॥ खामेउं ? गुरु कहे, खामेह ॥ पीछे मस्तके अजलि करतो थको, इच्छं खामेमि पक्खिय ॥ ३ ॥ कही, गोदालीये वेसी मस्तक नमावी दक्षिण हाथ गुरु साहामो करी, मुहपत्ती मुखे देइ ॥ पक्खियं ए

वीसाख्यो, तपोधन तणे धर्मे काजो अण ऊधरे दामी अणपडिलेही, वसती अणसोधी, अ सिझाई अणोका कालवेलामांहि दशवैकालि क प्रमुख सिद्धांत नएयो गुएयो, योग वह्या परखें नएयो ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकरवाली, सांपडा सांपडी वहीदस्तरी ठली या कागल प्रमुखप्रते आशातना हुई, पग ला गो थूक लागो ठसीसे मूक्यो कनें छता आहा र नीहार कीधो, ज्ञानद्रव्य भक्षण उपेक्षण की धो, प्रज्ञापराधें विणाश्यो विणसतो उवेख्यो, छती शक्तें सार सन्नाल न कीधी, ज्ञानवंत प्रतें मत्सर वह्यो, अवज्ञा आशातना कीधी, कोई प्र तें नणता गुणता प्रद्वेष मत्सर अंतराय अप घात कीधो मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, म न पर्यवज्ञान, केवलज्ञान ए पाच ज्ञानतणी अ सद्दहणा कीधी, कोई तोतलो बोबडो हस्यो, वि तर्क्यो आपणा जाणपणा तणो गर्व चिंतव्यो, अ

विरियम्मि ॥ आयरण आयारो,इअ एसो पचहा भणिउ ॥१॥ ज्ञानाचार १, दर्शनाचार २, चारित्राचार ३,तपाचार४,वीर्याचार ५ एव पाच विधि आचारमाहि जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म,बादर, जाणता अणजाणता हुउ होई,ते सहू मन,वचन, कायाइं करी मिछा मि डुकडं ॥

॥ अथ ज्ञानाचारना आठ अतिचार ॥

॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वजण अछ तदुभए, अठविहो नाण मायारो ॥ १ ॥ ज्ञान —कालवेलामाहि पढिउ गुणिउ नही, अकाले पढिउ, विनय हीन बहुमान हीन उपधान हीन श्री उपाध्यायकने नही पढिउ, अथवा अनेराकने पढिउ अनेरो गुरु कह्यो व्यजन अर्थ तदुभय कूडो पढ्यो, देव— वाटणे पडिकमणे सिजाय करता,पढता, गुणतां, कूडो अक्षर काने मात्रे अधिको उगो आगल पाछल भण्यो, सूत्र अर्थ कूडा ⸺प्या.

वीसाखो, तपोधन तणे धर्मे काजो अण ऊधरे दाम्भी अणपडिलेही, वसती अणसोधी, अ सिझाई अणोजा कालवेलामांहि दशवैकालि क प्रमुख सिद्धात भण्यो गुण्यो, योग वह्या पखें भण्यो ज्ञानोपगरण पाटी,पोथी,ठवणी,कवली, नवकरवाली,सापडा सापडी वहीदस्तरी ओली या कागल प्रमुखप्रते आशातना हुई, पग ला गो थूक लागो ओसीसे मूक्यो कनें छता आहा र नीहार कीधो, ज्ञानद्रव्य भक्षण उपेक्षण की धो, प्रज्ञापराधें विणाश्यो विणसतो उवेख्यो, छती शक्तें सार सभाल न कीधी, ज्ञानवत प्रतें मछर वह्यो, अवज्ञा आशातना कीधी, कोई प्र तें भणता गुणतां प्रद्वेष मत्सर अतराय अप घात कीधो मतिज्ञान,श्रुतज्ञान,अवधिज्ञान, म न पर्यवज्ञान,केवलज्ञान ए पाच ज्ञानतणी अ सद्दहणा कीधी, कोई तोतलो बोबडो हस्यो, वि तर्क्यो आपणा जाणपणा तणो गर्व चिंतव्यो, अ

टविध ज्ञानाचार विपईन्त जिको अतिचार पक्ष दिवसमाहे सूक्ष्म, बादर, जाणता, अजाणता, हुवो होय, ते सहु मन वचन कायाइ करी मि० ॥

॥ दर्शनाचारना आठ अतिचार ॥

॥ निस्सकिय निक्कखिअ, निव्वितिगिच्छा अ मूढदिठी अ॥ उववूह थिरीकरणे, वच्छल पभाव णे अठ ॥१॥ देव गुरु धर्म तणे विपे निःशंक पणो न कीधो, तथा एकात निश्चय धस्यो नहीं, सघलाइ मत भला छे, एहवी श्रद्धा कीधी, ध र्मसबधिया फलतणे विपे निःसंदेह बुद्धि धरी नही चारित्रिया साधु साधवी तणा मलमली न गात्र देखी दुगंछा उपजावी, मिथ्यात्वीतणी पूजा प्रभावना देखी, मूढदृष्टिपणो कीधो, सं घमाहे गुणवततणी अनुपबृहणा अस्थिरी करण अवात्सल्य अप्रीति अभक्ति चिंतवी सघमाहे थिरीकरण वात्सल्य शक्ति छते प्रभा वना न कीधी, देवद्रव्य विनाशिउ, विणसंतु

उवेखीउं, उती शक्ते सार संभाल न कीधी,सा धर्मिकशुं कलह कर्म कीधुं, जिन भवन तणी चोराशी आशातना कीधी, गुरुप्रतें तेत्रीश आशातना कीधी, अधौतवस्त्रे देवपूजा कीधी, तिहु ठाम पाखे देवपूजा, वासकूपी कलश तं णो ठवको लागो, मुखतणी वाफ लागी, ठवणा रिय हाथथकी पडीउं, पडिलेहवो वीसार्यो, नवकरवालीनें पग लागो, दर्शनाचार विषईउ जिको अतिचार० ॥ ३ ॥

॥ चारित्राचारना आठ अतिचार ॥

॥ पणिहाणजोगजुत्तो, पचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तीहिं ॥ एस चरित्तायारो, अठविहो होइ नाय वो ॥१॥ इरियासमिती १, भासासमिती २, एष णासमिती ३, आयाणभंमत्तनिखेवणासमि ती ४, उच्चारपासवणखेलजल्लसंघाणपारिठा वणीयासमिती ५ मनोगुप्ति १, वचनगुप्ति २, कायगुप्ति ३, ए पंच समिती तीन गुप्ति, रूडी परें

पाली नहीं॥ साधु तणे सदैव श्रावक तणे पोसह पडिकमणे लीये अष्टविध चारित्राचार विषईउ जिको अतिचार० ॥ ४ ॥

॥ विशेषत श्रावकतणें धर्मे श्रीसम्यक्तमूल बारह व्रत श्रीसम्यक्ततणा पाच अतिचार— सका कख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगी सु ॥ संकाः—श्रीअरिहंत तणी बल अतिशय ज्ञान लक्ष्मी गाम्भीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा चारित्रियाना चारित्र जिनवचन तणे संदेह कीधो आकाङ्क्षा —ब्रह्मा विष्णु महेश्वर क्षेत्रपाल गोगो गोत्रदेवता ग्रह पूज्या विणाइग हनुमत इत्येवमादिक ग्राम गोत्र देश नगर जूजूआ देव देहराना प्रभाव देखी रोगें आतकें इहलोक परलोकार्थें पूज्या मान्या, बौद्ध सांख्यादिक सन्यासी भरडा भगत लिंगिया योगी दरवेश अनेराई दर्शनियानो कष्ट मन्त्र चमत्कार देखी, परमार्थ जाण्या विण

अनुमोद्या, कुशास्त्र शीख्या, सांभल्या, शराध सवत्सरी होली वलेव मादीपूनिम अजापडि वो प्रेतबीज गोरत्रीज विणायगचोथ नागपा चम फूलणाछठ शीलसातम भ्रो आठम नउली नवम अहवदसम व्रत इग्यारस वत्सबारस ध नतेरस अनतचोदश आदित्यवार उत्तरायण नवोदक, जाग भोग उतारणा कीधा, पिंपल पाणी घाल्या घलाव्या घर बाहिर कूई तलाव नदीसमुद्र कुण्डमें पुण्य हेतु स्नान कीधा, दान दी धा, ग्रहण शनिश्चर माहमास नवरात्रि नाह्या, अजाणना थाप्या, अनेराई व्रत व्रतोला कीधां, कराव्या विचिकित्सा-धर्मसबधिया फल तणो सदेह कीधो, जिण अरिहत धर्मना आगर विश्वोपकार सागर मोक्षमार्ग दातार देवाधि देव बुद्धे शुद्ध भावें न पुज्या, न मान्या, महात्मा ना भात पाणी तणी दुगछा कीधी, कुचारित्रिया देखी चारित्रिया उपरें अभाव हुओ मिथ्यात्वी

तणी प्रभावना देखी प्रशंसा कीधी, प्रीति मा
मी, दाक्षिणलगें तेहनो धर्म मान्यो ॥ श्रीसम
कितविषे अनेरो जिको अतिचार पक्ष दिवस
माहि सूक्ष्म, बादर, जाणता अजाणता हुउ हो
य, ते सवू मन, वचन, कायाइं करी मिछामिण॥१॥

॥ पहिले प्राणातिपात विरमणव्रते पाच
अतिचार वह बध छविच्छेए, अइभारे भत्त
पाण वुछेए ॥ द्विपद चउपद प्रतें रीशवशें गा
ढो घाउ प्रहार घाल्यो, गाढे बंधन बांध्या, घ
णे भारे पीड्या, निर्लांछन कर्म कीधा चारा
पाणी तणी वेला सार सभार न कीधी, लहिणे
देणे किणहीप्रतें लंघाव्यु, तेणे भूखे आपण
जिम्या, अणगल पाणी वावर्युं, रूडे गल्युं
नही, गलाव्युं नही, अणगल पाणी झील्या
लूगडा धोया, इंधण अणसोध्युं जाल्युं सा
प कानखजूरा सुलहला माकड जूआ गीगी
डा साहता मूआ, दूखव्या, रूडे थानक न मू

क्या, कीडी मकोडी उदेही घीवेली कातरा चू डेली पतगिया मेम्का अलसिया ईली कृति मांस मसा वगतरा माखी प्रमुख जे कोई जीव विणठा चापिया दूहव्या माला हलावतां पंखी काग चि डकलाना इम्मां फूटां, अनेरा एकेंद्रियादिक जि के जीव विणठा चाप्या, दूहव्या, हालता चालतां अनेरु काइ काम काज करता विध्वंसपणुं कीधुं जीव रक्षा रूडे न कीधी, संखारो सूकव्यो, सुल्या धान तावडे दीधा, दलाव्या, नरडाव्यां, खाटला तावडे झाटक्या, मूक्या, मूकाव्या, जीवाकुल नूमि लीपावी, वाशी गार राखी रखावी, दलणे खाम्णे लीपणे रूडी जयणा न कीधी आठम चउदशाना नियम नाग्या, घूणी करावी ॥ पहि ला प्राणातिपात व्रत विषइउ अनेरो० ॥ १ ॥

॥ वीजुं स्थूल मृषावाद विरमणव्रते
पाच अतिचार ॥

॥ सहसा रहस्सदारे, मोसुवएसे य कूड

लेदे य ॥ सहसात्कार –किणहिक प्रतें अयुक्तो आल दीधो, किणहिक प्रते एकातें वात करतां देखी तुम्हें तो राजविरुध चिंतवो गे इत्यादि क कह्यु स्वदार मत्र नेद कीधो, अनेराई किणहीनो मत्र आलोच मर्म प्रकाश्यो, किण हीने कूडी बुद्धि दीधी, कूडो लेख लिख्यो, कूडी साख नरी, थापण मोसो कीधो, कन्या ढोर गाय नूमि सबधिया लेदणें देयणे व्यवसाय वाद वढावढि करता मोटकु कूठ बोल्युं, हाथ पग नणी गाल दीधी, करडका मोड्या, अध र्म्म वचन बोल्या ॥ बीजे मृषावाद व्रत विषइ० ॥

॥ त्रीजे अदत्तादानविरमण व्रतना पाच अतिचार ॥ तेनाहडप्पत्रगे, घर बाहिर क्षेत्र खले पराई वस्तु अणमोकलावी लीधी, दीधी, वावरी, चोरीनी वस्तु मोल लीधी, चोर प्रतें संबल दीधुं, संकेत कह्युं विरुध राज्या तिक्रम कीधो, नवा प्राणा सरस विरस सजी

व निर्जीव वस्तु तणा नेल सन्नेल कीधा, खोटे तोल मान माप वहोख्यां, दाणचोरी कीधी, साटे लाच लीधी, माता पिता पुत्र कलत्र परिवार वची जूदी गाठ कीधी, किणईनि लेखे प लेखे नुलव्युं, पडी वस्त उलवी लीधी, त्रीजे अदत्तादान व्रतविषइत्त० ॥

॥ चोथे स्वदार संतोष मैथुनव्रते पाच अतिचार ॥ अपरिग्गहिया इत्तर, अणंग वीवाह तिव्वअणुरागे ॥ अपरिगृहीतागमन, इत्वर परिगृहितागमन विधवा वेश्या स्त्री कुलाङ्गना स्वदार शोकतणे विषे दृष्टिविपर्यास कीधो, सराग वचन बोल्या, आठम चउदस अनेराई पर्व तिथि तणा नियम नागा, घरघरणा कीधां, कराव्या, अनुमोदीया, कुविकल्प चिंतव्या, अनङ्गक्रीडा कीधी, पराया विवाह जोड्या, काम नोगतणेविषे तीव्राभिलाष कीधो, कुस्वप्न लाधां, नट विट पुरुषशु हासु कीधु, चोथे मैथन व्रत वि०

॥ पाचमे परिग्रहपरिमाणव्रतें पाच अति चार ॥ धण धन्न खित्त वत्थू ॥ धन धान्य क्षेत्र व स्तु रूप्प सुवर्ण कुप्प द्विपद चतुष्पद नवविध परिग्रह तणा नियम उपरात वृद्धि देखी मूर्छा लगे सक्षेप न कीधो, माता पिता पुत्र कलत्रा दि तणे लेखें कीधो, परिग्रह परिमाण लेई पढ्यो नहीं पढी वीसारिउ, नियम वीसारिउ ॥ पाचमे परिग्रह परिमाण व्रतविषइउ०॥

॥ छठे दिग्विरमणव्रतें पाच अतिचार ॥ गमणस्सय परिमाणे ॥ ऊर्ध्वदिसि अधोदिसि तिर्यग्दिसि जायवा आयवा तणो नियम जे कोई अजाणे भागो, एक गमा सकोडी बीजी गमा वधारी,विस्मृति लगें अधिक भूमि गया,पा ठवणी आघी मोकली॥ छठे दिग्व्रत वि० ॥६॥

॥ सातमे भोगोपभोग परिमाण व्रत॥ जेहना भोजन आश्री पाच अतिचार अने करमहूंती पन्नरे, एव वीश अतिचार ॥ सचित्ते पडिबद्धे,

अपोल डुप्पोलय च आहारे० सच्चित्त तणे निय म लीधे अधिक सच्चित्त लीधु, तथा सच्चित्त मली वस्तु अपक्काहार डुपक्काहार तुछौषधि तणुं नक्कण कीधुं होला उबी पहुंक काकडी नख्यां कीधा, सुल्यां धान प्रमुख नक्कण कीधां ॥सच्चित्त दव विगई, पाणह तबोल वब्र कुसुमेसु॥ वाहण सयण विलेवण, बन दिसि एहाण नत्ते सु ॥ १ ॥ ए चवदे नियम दिन प्रते सन्नास्या संक्षेप्या नहिं, लेई नियम नाग्या बावीस अ नक्ष, वत्तीस अनतकायमाहि आडुं मूला गा जर पींमालू सूरण सेलरा काची आवली गो ल्हा खाधा, चोमासा प्रमुखमाहे वासी कठोल नी रोटी खाधी त्रिहुं दिवसनु दही लीधु, म धु महुडां माखण माटी वेंगण पीलू पीचूं पं पोटा पींपी विष हीम करहा घोलवडा अण जाण्या फल टींवरुं अथाणुं आमणबोर का चुं मीठुं, तिल खसखस काचां कोठिंवडा खाधां,

रात्रिभोजन कीधु, ऊगवगतीवेलायें व्यालू कीधुं, दिवस ऊग्या विण शिराव्या तथा पन्नरे कर्मादा न इंगालि कम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडी कम्मे, फोडीकम्मे, दंतवाणिज्ये, लस्क वाणिज्ये, रस वाणिज्ये, केशवाणिज्यें, विष वाणिज्ये, जंत पीलणकम्मे, निल्लंछण कम्मे, दवग्गिदावणया, सर दह तलाव सोसणया, असई पोसणया, ए पाच वाणिज्य पाच कम्र्मे, पाच सामान्य, महा रंभ लीहाला कराव्या ईंटवाह नीवाह पचा व्या, धाणी चणा पक्कान्न करी वेच्या वासी माखण तपाव्या, अगीठा कीधा कराव्या, तिला दिक संचीया, फागुण मास उपरात राख्या, कु कडा सूडा प्रमुख पोष्या, अनेरुं जे काई बहु सावद्य कठोर कर्मादिक समाचर्युं ॥ सातमा भोगोपभोग व्रत विषइउ० ॥

॥ आठमा अनर्थ दंड विरमणव्रतना पाच अतिचार ॥ कंदप्पे कुक्कुइए० ॥ कंदर्प्प लगें विट

नी परें हास्य कुतूहल मुखादि अंग कुचेष्टा कीधी, मूरखपणा लगे कुणहीने असबंध वाक्य बोल्या खांडा कटारी कुसि कुहाडा रथ ऊखल मूसल अगन घरटी आदिक सज करी मेल्या, माग्या आप्या, कणक वस्तु ढोर लेवराव्या, अनेरो काइ पापोपदेश दीधो, अंघोल नाहण, दातण, पगधोअण पाणी तेल अधिक आण्या, हींमोले हींच्या, राजकथा देशकथा भक्तकथा स्त्रीकथा पराइ वात कीधी, आर्त्त रौद्र ध्यान ध्याया, कर्कश वचन बोल्या, करडका मोड्या, सनेडा लाया, भेसा साढ कूकडा, मिंढा श्वानादि जूझता कलह करता जोया, खाधी लगें अदेखाई चिंतवी माटी मीठु कण कपासिया काजविण चाप्या, लेह उपर बयठा, आले वनस्पति खुदी, गस पाणी विरस तेल गुल आम्लवेतस बेरजादिक तणा भाजन उघाडां मक्या ते माहि कीडी कथुआ माखी उदर गि

रोली प्रमुख जीव विणाठा, सूडा प्रमुख जीव क्रीडा हेते वाधी राख्या, घणी निद्रा कीधी, राग द्वेष लगे एकने ऋद्धि परिवार वाछी एकनें मृत्युहाणि विमासी आठमा अनर्थ दण्डव्रतवि०

॥ नवमा सामायिकव्रतें पांच अतिचार॥ तिविहे डुप्पणिहाणे सामायिक लीधे मन आह ट दोहट चिंतव्युं, वचन सावद्य बोल्यु, काय अण पडिलेह्यु हलाव्युं, छती वेलाइ सामायिक न लीधुं, सामायिक लई उघाडे मुख बोल्या, ऊघ आवी कीधी, वीज दीवा तणी उजाही ला गी कण कपासीया माटी मीठुं नील फूल ह रिकायना संघट्ट हुआ, पुरुष तिर्यंचना संघट्ट हुआ, तथा स्त्री तिर्यंची आनडी, मुहपत्तीयो संघट्टी, सामायिक अण पूरुं पारिउं, पारउं वीसारिउं, नवमे सामायिक व्रतविषइयो० ॥

॥ दशमे देशावकाशिक व्रते पाच अतिचार ॥ आणवणे पेसवणे० ॥ आणवणप्पउगे पे

सवणप्पउगे सद्दाणुवाइ रूवाणुवाइ बहिया पु
ग्गल खेवे ॥ नियमित भूमिकामादि बाहिर थ
की कांई अणाव्युं, आप कन्दाथी बाहिर मोक
ल्या, साद करी रूप देखाडी काकरी नाखी
आपणपणु ब्तुं जणाव्यु ॥ दशमे देशावकासि
ग व्रतविषइयो० ॥ १० ॥

॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रते पाच अतिचा
र ॥ संथारुच्चार विही, पमाय तह चेव भोअ
णा भोए० ॥ पोसइ लीधे संथारा तणी भूमि
बाहिरला थण्डिला दिवसें शोध्या पडिलेह्यां
नहीं, मातरुं अणपडिलेह्यु वावरिउ, अणपुंजी
भूमिकाइ परठविउ, परठवता चिन्तवणा न की
धी, अणुजाणह जस्सुग्गहो न कह्यो परठव्या
पूठें वार त्रण वोसिरामि वोसिरामि न कह्यु
पोसहशालामादि पइसता नीसरता निस्स
ही आवस्सही कहेवी वीसारी, पृथ्वीकाय, अप्प
काय तेउकाय वाउकाय वनस्पतिकाय त्रस

काय तणा संघट्ट परिताप उपद्रव हुआ, संथा रा पोरसि तणी विधि जणत वीसारित पोरसि माहि उघ्या, अविधि सथारु पाथर्यु, काल वेलाये पडिक्कमणु न कीवउ, पारणादिक तणी चिंता निपजावी, कालवेला देव वादवा वीसा रिया, पोसह असूरो लीयो, सवारो पारीयो, पर्व तिथि आवी पोसह लीधो नही ॥ इग्या रमे पोषधोपवास व्रतविषइयो० ॥

॥ बारमे अतिथि संविभागव्रतें पाच अति चार ॥ सच्चित्ते निक्खवणे० ॥ सच्चित्तवस्तु हेठे ऊपरि थके महातमा प्रते असूझतु दान दीधुं, अदेवा तणी बुद्धे सूझतुं फेडी असूझतुं कीधुं, देवा तणी बुद्धे असूझतुं फेडी सूझतु कीधुं, आ पणु फेडी परायु कीधुं, विहरवावेला टलि गया असुर करी महातमा तेड्या, मच्छरलगें दान दीधुं, गुणवत आवे जगति न साचवी, छती शक्ति साधर्मिक वात्सल्य न की+

धर्म्म क्षेत्र सीदाता छती शक्तें उद्धर्या नही ॥ बारमे अतिथि सविभाग व्रतविषइयो० ॥

॥संलेहणा तणा पांच अतिचार इहलोए पर लोए०॥ इहलोका संसप्पउगे परलोगासंसप्पउ गे जीविआससप्पउगे मरणासंसप्पउगे कामभो गाससप्पउगे इहलोक मनुष्यभव मान महत्त्व लोक तणी सेवा ठकुराई बलदेव वासुदेव चक्र वर्त्ति पद वाछया परलोक इन्द्र अहमिंद्र देवा धिदेव पदवी वाछी, सुख आव्ये जीववा तणी वा छा कीधी,दुःख आव्ये मरवातणी वाछा कीधी,का मभोग तणी इछा कीधी ॥ संलेहणाव्रतवि० ॥

॥ तपाचार बारभेदें ॥ छ अभ्यतर, छ बा हिर, अणसणमूणोयरिया, अणसण कहीयें उपवास, ते पर्वतिथि छती शक्तें कीधु नही ऊणोदरी ते पाच सात कवल ऊणा रह्या नही, द्रव्य संक्षेप विगय प्रमुख परमाण कीधु नहीं आसनादिक काय किलेश न कीधो, संलीण

ता अंगोपांग संकोच्या नहीं, नवकारसी पोर
सी गठसी मूठसी साढपोरसि पुरिमढ एका
सणो बेआसणो नीवी आंबिल प्रमुख पच्चक्खा
ण पारवा वीसार्या बेसता नवकार न्नण्यो न
हीं, ऊठता दिवसचरिमं न कीधुं, नीवी आंबि
ल उपवासादिक तप करी काचुं पाणी पीधुं,
वमन थयुं ॥ बाह्य तपव्रत विषइयो० ॥
॥ अभ्यंतर तप ॥ पायच्छित विणओ० गुरु
कने मन सुद्धे आलोयणा लीधी नहीं, गुरुदत्त
प्रायच्छित तप लेखा शुद्ध पुहचाड्युं नहीं, देव
गुरु संघ साहम्मी प्रते विनय साचव्यो नहीं,
वाचना पृच्छना परावर्त्तना अनुप्रेक्षा धर्मकथा
लक्षण पंचविध सिज्झाय कीधी नहीं, धर्म्मध्या
न शुक्लध्यान ध्यायुं नहीं, कर्म क्षय निमित्त
लोगस्स दस वीसनो काउस्सग्ग न कीधो ॥ अ
भ्यंतर तप विषइयो० ॥
॥ वीर्याचारना तीन अतिचार ॥ अणगूहि

य वलविरीत्र,परिकमइ जो जहुंत गणेसु ॥ छुंजइ अ जहा थाम, नायवो वीरियायारो ॥ १ ॥ पडवे गुणवे विनय वेयावच्च देवपूजा सामायिक दान शील तप भावना प्रमुख धर्म्म कृत्यतणे विषे मन वचन कायतणु छतु बल वीर्य गोपव्युं,रूडा पचाङ्ग खमासमण न दीधा, बेठा पडिक्कमणुं कीधुं ॥ वीर्याचारव्रत विषइयो० ॥

॥ नाणाइ अठ अइ वय, समसलेहण पण पनर कम्मेसु॥बारस तवविरिअ तिग, चउवीसं सय अईयारा ॥१॥ पडिसिद्धाण करणे० ॥

॥ जिनप्रतिषिद्ध बावीस अभक्ष्य बत्तीस अनंत काय बहुबीज भक्षण महाआरम्भ महापरिग्रहादिक कीधा,नित्यकृत्य देवपूजा सामायिकादिक तथा तीर्थ यात्रादिक न कीधा,जीवाजीवादि विचार सद्दह्या नहीं,आपणी कुमति लगे उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी,प्राणातिपात १, मृषावाद २, अदत्तादान ३, मैथुन ४, परिग्रह ५,

क्रोध ६, मान ७, माया ८, लोभ ९, राग १०, द्वेष ११, कलह १२, अभ्याख्यान १३, पर परिवाद १४, पैशून्य १५, अरतिरति १६, मायामृषावाद १७, मिथ्यात्वशल्य १८ ए अढारह पापस्थानकमाहि जे काइ कीधो करा व्यो अनुमोद्यो ॥ एव प्रकारे श्रावक धर्मे श्री सम्यत्त्व मूल बारह व्रत चोवीसा सो अतिचा रमाहि जिको कोइ अतिचार पक्ष दिवसमाहि सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणता हुवो होय ते सहू मन वचन कायाये करी मिछामि डुक्कडं ॥ इति श्रीश्रावकोंके बारह व्रतका अतिचार स०

॥ पीछें सबस्सवि पक्खिय ॥ इत्यादि इछाकारे ण संदिस्सह पर्यंत कहे तेवारे गुरु कहे चउत्थे ण पडिक्कमह चउमासे छठेण पडिक्कमह संव छरीयें अट्ठमेण पडिक्कमह इछं तस्स मिछामि डुक्कड कही द्वादशावर्त्त वांदणा देवे पीछें इ छाकारेण संदिस्सह भगवन्,देवसियं

यं पडिक्कता ॥१॥ पत्तेयखामणेण, अप्नुठिउमि अप्निंतरपक्खिय ॥३॥ खामेऊं? गुरु कहे खा० ॥ पंछे इछं खामेमि पक्खिय ॥ ३ ॥ इत्यादि पाठ सर्व पूर्वे कह्यो, तिम कही मिछामि डुक्कडं देई खमावे, पंछे बे वादणा देई नगवन्! देवसियं आलोइय पडिकता पक्खिय ॥ ३ ॥ पडिकमा वह? गुरु कहे सम्म पडिक्कमह पंछे इछं कही करेमि नते सामाइयं ॥ इछामि ठामि काउस्स ग्गं जो मे पक्खिउ ॥ ३ ॥ इत्यादि कही, तस्सु त्तरी० अन्नहू० ॥कही॥ काउस्सग्ग करे, गुरु, पाखीसूत्र कहे, ते सानले अने गुरुथकी जू दा पडिक्कमता हुवे, तो एक श्रावक खमासमण देई कहे नगवन्! सूत्र नणु? गुरु कहे, नणेह एसो वचन मनमे धारी ॥ इछ कही, ऊनो थ को, हाथ जोडी मुहपत्ती मुखे देई तीन नवका र कही, मधुर स्वरें सूत्रार्थ मनमे चिंतवतो वंदि त्तू सूत्र गुणे बीजा श्रावक करेमि न ते० इछा

मि ठामि काउस्सग्ग तस्सुत्तरी० अन्नत्थू० कही काउस्सग्गमे रह्या सुणे. सूत्रप्राते णमो अरिहंताण कही काउस्सग्ग पारी, ऊना थका तीन नवकार गुणी बेसे पीछे ॥३॥ नवकार ॥३॥ करेमि भंते कही, इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे पक्खिउ ॥ ३ ॥ इत्यादि कही, वंदित्तु सूत्र गुणे, पडिक्कमे देवसिय सव ॥ एहने ठिकाणें पडिक्कमे पक्खिय, चउम्मासिय, संवछरियं सवं कहे पीछे ऊठी, अब्भुठिउमि आराहणाए इत्यादि पूर्ण भणी, खमासमण देई इच्छा० ॥ स० । भ० ॥ मूलगुण उत्तरगुण अतिचार विशुद्धि निमित्त,काउस्सग्ग करूं ? गुरु कहे करेह पीछे इछं कही, करेमि भंते सामा० इच्छामि ठामि काउस्सग्ग तस्सु० अन्नत्थू० इत्यादि कही, पाखीयें बार लोगस्स चउमासियें वीस लोगस्स संवछरीयें चालीस लोगस्सनो काउस्सग्ग करे, एक नवकार ऊपर, काउस्सग्ग करी. पारी लो

गस्स कहे वेसी मुहपत्ती पडिलेही, बे वांदणा देई इच्छा० ॥ स० ॥ ज० ॥ समाप्ति खामणे ए ॥ अब्भुठिओमि अभिंतर पक्खिय ॥ ३ ॥ खामेऊं ? गुरु कहे खामेह पछे इच्छ खामेमि पक्खियं ॥ इत्यादि पाठ पूर्वे कह्यो तिम कहे, पछें इच्छाका० ॥ स० ॥ ज० ॥ पाखी ॥ ३ ॥ खामणा खामू ? गुरु कहे, पुण्यवंतो चार वेर खमासमण देई. तीन तीन नवकार कही, पाखी ॥ ३ ॥ समाप्त खामणां खामेह पछे श्रावक एक खमासमण देई मस्तक नीचु नमावी, तीन नवकार गुणे, इम चार वार कहे, पछे गुरु कहे नित्थारग पारगाहोह पछे श्रावक कहे इच्छ इच्छामि अणुसठिं कही, गुरु कहे, पुण्यवतो पाखीने लेखे, एक उपवास अथवा दोय आंबिल अथवा तीन नीवी, अथवा चार एकासणां, अथवा बे हजार सज्काय करी, एक उपवास नी पेठे पूरज्यो, पाखीनें स्थानके देवसिक ज

एजो. एम चउमासे ए सर्व ड्गुणो कहणो, सवच्छरीयें त्रिगुणो कहणो. पीछे जिणें तप की धो हुवे ते पइठिय कहे, न कीधो हुवे ते त हत्ति कहे॥ पीछे वे वादणा देई, अभुठिउंमि अ ञ्जितर देवसिय खामेमि इत्यादि कहे पीछे वे वादणा देई आयरिय उवझाए० तीन गाथा कहे, इम आगें सर्व विधि देवसिक पडिकम णानी करे, पण इतरो विशेष है श्रुतदेवतानो काउस्सग्ग करी स्तुति कहे, पीछें नवण देवया ए करेमि काउस्सग्ग इत्यादि विधें नवनदेवता को काउस्सग्ग करी स्तुति कहे, सो लिखते हैं

॥ अथ नुवनदेवता स्तुति ॥

॥ चतुर्वर्णाय संघाय, देवी नुवनवासिनी ॥
निहत्य डरितान्येपा, करोतु सुखमक्षयम् ॥ १ ॥

॥ क्षेत्रदेवतानो काउस्सग्ग करे, तथा तीने पर्वे वडा स्तवन अजितशांति कहणी, लघु स्तवन उपसर्गहर स्तोत्र कहणो, तथा पक्खि

मणो पूरो हुवा पीछे एक श्रावक गुर्वाज्ञायें, नमोऽर्हत्सिद्धा० कही, वडी शातिका स्तोत्र कहे, बीजा सर्व सुणे, जिणनें रात्रि पोसह न हुवे, ते पोसह सामायिक पारी साम्भले ॥ इति पाक्खिकादि तीन पडिक्कमणविधि ॥

॥ अथ दस पच्चक्खाणविचार लिख्यते ॥

॥ तिहा प्रथम चउदे नियम सम्भारे,सो इस तरे पच्चक्खाण करे ॥ उग्गए सूरे नमुकार सहियं मुठसहिय पच्चक्खाइ चउविहंपि आहारं असणं पाण खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेण विगइउ पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेण गिहित्थसंसिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खिएण पारिठावणियागारेण महत्तरागारेण सव्वसमाहिवत्तियागारेणं देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेण सहसागारेण महत्तरागारेण सव्वस

माहिवत्तियागारेण वोसिरइ ॥ इति नवकार सी पच्चख्काण ॥ १ ॥

॥ तथा जो श्रावक नियम सभारे नहिं,सो विगइका उर देसावगासिकका आगार न पच्च ख्के निकेवल नवकारसी आदिक पच्चख्काण करे सो लिखते हैं ॥

॥ उग्गए सूरे नमुकार सहियं पच्चख्काइ ॥ चउविहपि आहार असणं पाण खाइमं साइ मं अन्न० ॥ सह० वोसिरामि ॥ इति नवकार सी पच्चख्काण ॥ आगार ॥ २ ॥

॥ पोरसी मुठसी पच्चख्कामि, उग्गए सूरे चउविहपि आहारं असणं पाणं खाइम साइ मं अणुन्न० ॥ सहसा० ॥ पच्छन्नकालेण दिसा मोहेणं ॥ साहुवयणेणं सव्व० विगइउ पच्चख्का मि इत्यादि पूर्वकी परें कहणा ॥ इति पोरिसी पच्चख्काण ॥ ७ ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ इस माफक साहु पोरसीका पच्चख्काण जा

णना. इतना विशेष है, पोरसिं पच्चख्खाइके ठि काने इहां साढपोरसिं पच्चख्खाइ कहणां ॥ इति साढ पोरसिपच्चख्खाण ॥ आगार ॥६॥

॥ सूरे उग्गए पुरिमढं अवढं वा पच्चख्खाइ, चउव्विहंपि आहारं असणं पाण खाइमं साइमं अस०॥ सह० ॥ पच्छ० ॥ दिसामो० ॥साहु॥ ॥ मह० ॥ सव्व० ॥ विगइउ पच्चख्खाइ इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति पुरिमढ्ढपच्चख्खाण ॥३॥आ०॥७॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं वा पच्चख्खाइ, उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असण पाण खाइमं साइमं अस० सह० पच्छ० दिसा० साहु० सव्व० एकासण बिआसणं वा पच्चख्खाइ. दुविहं तिविहंपि आहारं असण खाइम साइम अस० सह० सागारिआगारेणं आउट्टणपसारेणं गुरुअभ्भुठाणेण पारि० मह० सव्व० देसावगासियं० इत्यादि पूर्ववत् ॥४॥ इति एकासण बिआसण पच्चख्खाण ॥ आगार ॥ ८ ॥

॥ पोरसिं साढ्ढ पोरसिं वा पच्चस्काइ उग्ग ए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्र० सह० पच्छन्नका० दिसा० साहु० सव्व० एकासण एगठाण पच्चस्काइ. डुविह तिविह चउव्विहंपि आहार असण खाइम साइमं अस्र० सह० सागारिआगारेण गुरुअन्नु ठाणेण पारिठाव० मह० सव्व० देसाव० इत्यादि पूर्ववत् ॥ ५ ॥ इति एकलठाणा पच्चस्काण ॥ आगार ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साढ्ढ पोरसिं वा पच्चस्काइ उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहार असण पाणं खाइमं सा० अस्र० सह० पच्छ० दिसामो० साहु० सव्व० आयंबिलं पच्चस्काइ अस्रन्न० सह० लेवालेवेण गिहत्थसंसिठेण उक्खित्तविवेगेण पारिठा० मह० सव्व० एकासणं पच्चस्काइ तिविहंपि आहारं असणं खाइम साइम अस्र० सह० सागारिआगारेण आउंटणपसारेण गु

रुअप्पुठाणेणं पारिठा० मह० सव० वोसिरइ ॥६॥ इति आंबिल पच्चरकाण ॥ आगार ॥८॥

॥ पोरसिं साढ्ढ पोरसिं वा पच्चरकाइ उग्गए सूरे चउविहंपि आहार असणं पाणं खाइमं साइम असन्न० सह० पन्न० दिसा० साहु० सव० ॥ निविगइयं पच्चरकामि, अस० सह० लेवालेवेण गिहत्थससिठेणं उरिकत्तविवेगेण पडुच्चमरिकएण पारि० मह० सव० एकासणं पच्चरकाइ तिविहंपि आहार असणं खाइमं साइम अस० सह० सागा० आउट्ट० गुरु० पा० मह० सव० देसावगासियं भोगपरिभोग पच्चरकामि. अस० सह० मह० सव० वोसिरामि ॥ इति नीवी पच्चरकाण ॥ आगार ॥ ए ॥

॥ सूरे उग्गए अभत्तठं पच्चरकामि चउविहं पि आहार असण पाण खाइम साइम अस० सह० मह० सव० देसावगासिय भोगपरिभोग पच्चरकामि अस० सह० म० सव० वोसिरा

मि ॥ इति चउविहार उपवास पच्चक्काण ॥ ए॥

॥ सूरे उग्गए अभत्तठं पच्चक्कामि. तिविहं पि आहारं असणं खाइमं साइमं अस० स ह० पाणहार पोरसिं साढ पोरसिं पुरिमढ अ वढ वा पच्चक्काइ अस० सह० पच्छ० दिसा० साढु० सव देसावगासिय जोगपरिजोगं पच्च क्कामि अ० स० म० सव० वोसिरामि ॥ इति तिविहार उपवास पच्चक्काण ॥

॥ पोरसिं साढु पोरसिं पुरिमढ्ढ अवड्ढ वा प च्चक्कामि उग्गए सूरे चउविहंपि आहारं अस णं पाण खाइमं साइमं अस० सह० पच्छ० दिसा० साढु० सव० एकासणं एगठाणं दत्ति यं पच्चक्कामि तिविहं चउविहंपि आहार अस णं पाणं खाइम साइमं अस० सह० सागा० गुरु० मह० सव० विगइउ पच्चक्कामि इत्यादि पूर्ववत् देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति दत्तिपच्चक्काण ॥ ए ॥

॥ दिवसचरिम पच्चरकाइ चउविहंपि आहार असण पाण खाइमं साइम अस० सह० मह० ॥ सब० वोसिरइ ॥ इति दिवसचरिम पच्चरकाण ॥ १० ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चरकामि ज्डविहंपि आहारं असण खाइम अस० सह० मह० सब० वोसिरामि. देसावगासियं पूर्ववत् ॥ इति दिवसचरिम ज्डविहार पच्चरकाण ॥ ए ॥

॥ पाणहार दिवसचरिम पच्चरकामि अन्न० सह० मह० सब० वोसिरामि ॥ इति पाणहार उपवासरो पच्चरकाण ॥ ए ॥

॥ नवचरिमं पच्चरकाइ तिविहंपि चउविहंपि आहार असण पाण खाइमं साइम अन्न० सह० मह० सब० वोसिरइ ॥ आगार ॥ ४ ॥ नवचरिम, दो आगारकान्नी होय ॥ इति नवचरिम पच्चरकाण ॥

॥ तथा इमहिज गंठिसहि मुठिसहि अगुठ

सहि प्रमुख अभिग्रह पच्चरकाणकेनी ए चार आगार अस०सह०मह०सव०वोसिरइ॥ पा चमो चोलपट्टागारेण सो साधुकों होय ॥ इति अभिग्रह पच्चरकाण ॥

॥ अहस भंते तुम्हाणं समीवे देसावगासि य पच्चरकामि दवउ खित्तउ कालउ भावउ द वउण देसावगासियं खित्तउण उब वा असब वा कालउणं मुहुत्तधारणाप्रमाणे जावनियम पच्चरकामि भावउणं जावगहेणं न गहिजामि ब लेणं न बलिजामि असेणकेवि रायंकेण वा ए सो परिणामो न पडिवजइ ता अभिग्गह अस भणाभोगेणं सहस्सागारेण महत्तरागारेणं स वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरइ॥ इति देसाव गासी पच्चरकाण ॥

॥ तथा साधु पच्चरकाण करे तव देसावगा सी नहीं पच्चरके अरु तिविहार उपवासमे आ बिलमें नीवीमें एकास्पणा

ठ आगार पच्चरके सो दिखावे हे. पाणस्स लेवाडेण वा अलेवाडेण वा अच्छेणवा वहुलेण वा ससिच्छेण वा असिच्छेण वा वोसिरइ ॥

॥ अथ पच्चरकाण आगार सख्या ॥

॥ दोचेव नमुक्कारो आगार छच्च हुंति पो रसिए ॥ सत्तेवत्त पुरिमड्ढे, एगासणमि अठेव ॥ १ ॥ सत्ते गठाणस्सउ, अठेवय आयबिलं मि आगारा ॥ पंच वयत्नाठे, छप्पाणे चरिम चत्तारि ॥ २ ॥ पंच चउरो अनिगहे, निवीए अठनवय आगारा ॥ अप्पावरणे पचउ, हवं ति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥ इति आगार सख्या॥

॥ अथ सप्त स्मरणानि प्रारभ्यते ॥

॥ तत्र प्रथमं ॥

॥ श्री बृहदजितशांतिस्मरण लिख्यते ॥

॥ अजिअ जिअसवभयं, संतिं च पसंतस वगयपाव ॥ जय गुरु संति गुणकरे, दोवि जिण वरे पणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥ ववगय मंगुल

सहि प्रमुख अभिग्रह पच्चक्खाणकेभी ए चार आगार अस्र०सह०मह०सव०वोसिरइ॥ पाचमो चोलपट्टागारेण सो साधुकों होय ॥ भि अभिग्रह पच्चक्खाण ॥

॥ अहम् भंते तुम्हाणं समीवे देसावगासिय पच्चक्खामि दवउ खित्तउ कालउ भावउ दवउण देसावगासियं खित्तउण जब्ब वा अस्रब वा कालउणं मुहुत्तधारणाप्रमाणे जावनियम पच्चक्खामि भावउणं जावगहेणं न गहिज्जामि छलेण न छलिज्जामि असेणकेवि रायंकेण वा एसो परिणामो न पडिवज्जइ ता अभिग्गह अस्रणाभोगेणं सहस्सागारेण महत्तरागारेण सबसमाहिवत्तियागारेण वोसिरइ॥ इति देसावगासी पच्चक्खाण ॥

॥ तथा साधु पच्चक्खाण करे तब देसावगासी नही पच्चक्खे अरु तिविहार उपवासमे आयंबिलमें नीवीमें एकासणु [illegible] पाणस्सका

ठ आगार पच्चक्के सो दिखावे हे पाणस्स लेवाडेण वा अलेवाडेण वा अछेणवा बहुलेण वा ससिछेण वा असिछेण वा वोसिरइ ॥

॥ अथ पच्चक्काण आगार संख्या ॥

॥ दोचेव नमुक्कारो आगार ठच्च हुति पोरसिए ॥ सत्तेवत्त पुरिमड्ढे, एगासणमि अठेव ॥ १ ॥ सत्ते गठाणस्सउ, अठेवय आयविलंमि आगारा ॥ पंच वयत्नाठे, ठप्पाणे चरिम चत्तारि ॥ २ ॥ पंच चउरो अभिगहे, निवीए अठनवय आगारा ॥ अप्पावरणे पंचउ, हवंति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥ इति आगार सख्या॥

॥ अथ सप्त स्मरणानि प्रारभ्यते ॥

॥ तत्र प्रथमं ॥

॥ श्री वृहदजितशांतिस्मरण लिख्यते ॥

॥ अजिअ जिअसव्वभयं, संतिं च पसंतसव्वगयपाव ॥ जय गुरु संति गुणकरे, दोवि जिण वरे पणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥ ववगय मंगुल

सहि प्रमुख अभिग्रह पच्चखाणकेनी ए चार आगार अन्न०सह०मह०सव०वोसिरइ ॥ पाचमो चोलपट्टागारेणं सो साधुकों होय ॥ इति अभिग्रह पच्चखाण ॥

॥ अहस भंते तुम्हाण समीवे देसावगासियं पच्चखामि दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउण देसावगासिय खित्तउण उड वा असउ वा कालउणं मुहुत्तधारणाप्रमाणे जावनियम पच्चखामि भावउणं जावगहेणं न गहिज्जामि छलेण न छलिज्जामि असेणकेवि रायकेण वा एसो परिणामो न पडिवज्जइ ता अभिग्गह अन्नथणाभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेण सव्वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरइ ॥ इति देसावगासी पच्चखाण ॥

॥ तथा साधु पच्चखाण करे तब देसावगासी नही पच्चखे अरु तिविहार उपवासमे आचिलमें नीवीमें एकासण - पाणस्सका

अ मदमविअ सुनय नय निउणमनयकरं, स
रणमुवसरिअ नुवि दिविजमहिअ सयय मुव
णमे ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तं च जिणुत्तम मुत्तम नि
त्तम सत्तधरं, अज्जव मद्दव खंतिविमुत्ति समा
हि निहिं ॥ संतिअर पणमामि दमुत्तम तिढयरं,
संति मुणी मम सति समाहिवरं दिसउ ॥ ८ ॥
सोवाणयं ॥ सावत्थिपुबपत्थिवं च वरहत्थि मढय
पसत्त विच्छिन्न संथिअ थिर सरिछ वछ मयग
ल लीलायमाण वर गंध हत्थि पछाण पत्थिय
सथवारिहं हत्थिहछ बाहु धतकणग रुअग
निरुवहय पिंजरं पवर लरकणो वचिअ सोम्म
चारु रूव सुइ सुहमणाभिराम परम रमणिज्ज
वरदेव डुंडुहि निनाय महुरयर सुहगिरं ॥ ए ॥
वेढन ॥ अजिअं जिआरिगण, जिअ सबनयं
नवो हरिउ ॥ पणमामि अह पयउ, पाव पस
मेउ मे नयव ॥ १० ॥ रासालुद्धउ ॥ कुरु जण
वय हत्थिणाउर नरीसरो पढम तउ महाचक्कव

नावे, तेहं विउल तवनिम्मल सहावे ॥ निरुव म महप्पभावे, थोसामि सुदिठ सब्भावे ॥ २ ॥ गाहा ॥ सब्व दुक्ख प्पसंतीणं, सव्व पावप्पसंतिणं॥ सया अजिय संतीण, नमो अजिअ-संतिण ॥ ३ ॥ सिलोगो ॥ अजिय जिण सुहप्पवत्तण, तव पुरिसुत्तम नामकित्तण॥ तह य धिइ मइ प वत्तण, तवय जिणुत्तम संतिकित्तण ॥ ४ ॥ मा गहिआ ॥ किरिआविहि संचिअ कम्म किले सविमुक्कयर, अजिअ निचिअ च गुणेहिं म हामुणि सिद्धिगय ॥ अजिअस्स य संति महा मुणिणोवि अ संतिकर, सयय मम निव्वुइ कार णयं च नमसणय ॥ ५ ॥ आलिंगणय ॥ पुरि सा जइ दुक्खवारण, जइअ विमग्गह सुक्खका रण ॥ अजिअ संतिं च भावओ, अभयकरे स रण पवज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरइ रइ तिमिर विरहिअ मुवरय जरमरणं, सुर असु र गरुल भुयगवइ पयय पणिवइअं ॥ अजि

ञ मदमविञ सुनय नय निउणमनयकरं, स
रणमुवसरिञ नुवि दिविजमहिञं सयय मुव
णमे ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तं च जिणुत्तम मुत्तम नि
त्तम सत्तधरं, ञ्जव मत्तव खंतिविमुत्ति समा
हि निहिं ॥ संतिञरं पणमामि दमुत्तम तित्थयर,
संति मुणी मम सति समाहिवरं दिसउ ॥ ८ ॥
सोवाणय ॥ सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थि मत्थय
पसत्त वित्थिन्न संथिञं थिर सरित्थ वत्थ मयग
ल लीलायमाण वर गंध हत्थि पत्थाण पत्थिय
संथवारिह हत्थिहत्थ बाहुं धतकणग रुञग
निरुवहय पिंजर पवर लरकणो वचिञ सोम्म
चारु रूव सुइ सुहमणाभिराम परम रमणिज्ज
वरदेव उंउहि निनाय महुरयर सुहगिर ॥ ए ॥
वेहुउ ॥ अजिञं जिञारिगण, जिञ सव्वनयं
नवो हरिउ ॥ पणमामि अह पयउ, पाव पस
मेउ मे नयवं ॥ १० ॥ रासालुङ्उ ॥ कुरु जण
वय हत्थिणाउर नरीसरो पढम तउ महाचक्कव

नावे, तेदं विउल तवनिम्मल सहावे ॥ निरुव
म महप्पभावे, थोसामि सुदिठ सब्भावे ॥ २ ॥
गाहा ॥ सव्व दुक्ख प्पसंतीणं, सव्व पावप्पसतिणं॥
सया अजिय सतीण, नमो अजिअ-सतिणं
॥ ३ ॥ सिलोगो ॥ अजिय जिण सुहप्पवत्तण,
तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं॥ तह य धिइ मइ प्प
वत्तणं, तवय जिणुत्तम सतिकित्तण ॥ ४ ॥ मा
गहिआ ॥ किरिआविहि सचिअ कम्म किले
सविमुक्खयर, अजिअ निचिअ च गुणेहिं म
हामुणि सिद्धिगय ॥ अजिअस्स य सति महा
मुणिणोवि अ सतिकरं, सयय मम निव्वुइ कार
णयं च नमसणय ॥ ५ ॥ आलिंगणयं ॥ पुरि
सा जइ दुक्खवारणं, जइअ विमग्गह सुक्खका
रण ॥ अजिअ सतिं च भावओ, अभयकरे स
रण पवज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरइ रइ
तिमिर विरहिअ मुवरय जरमरणं, सुर असु
र गरुल भुयगवई पयय पणिवइअं ॥ अजि

गुत्ति पवर, दित्त तेअवदघेअ सवलोअ भावि अ प्पभावणे अ पइसमे समाहि ॥ १४ ॥ नारायउ ॥ विमल ससिकलाइरेअसोम्म, वितिमिरसूर कलाइरेअ तेअ ॥ तियसवइगणाइरेअ रूवं, धरणिधर प्पवराइरेअ सार ॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥ सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अबले अजिअ ॥ तव सजमेअ अजिअं, एस अहं थुणामि जिण अजिअं ॥ १६ ॥ भुअगपरिरिंगिअं ॥ सोम्मगुणेहिं पावइ न तं नवसरय ससी, तेअ गुणेहिं पावइ न त नवसरय रवी ॥ रूवगुणेहिं पावइ न त तिअस गणवइ, सार गुणेहिं पावइ न त धरणिधरवइ ॥१७॥ खिज्जिअयं ॥ तित्थवर पवत्तय तमरयरहिअ, धीरजण थुअच्चिअं चुअ कलिकलुस ॥ सतिसुहप्पवत्तय तिगरण पयउ, सतिमहं महा मुणिं सरण मुवणमे ॥ १८ ॥ ललिअयं ॥ विणउणय सिरि रइ अंजलि, रिसिगण सथुअं थिमिअं ॥ विबु

ट्ठिनोए महप्पभावो जो बाहत्तरि पुरवर सहस्स वर नगर णिगम जणवयवई बत्तीसारायवर स हस्साणुआय मग्गो चउदस वर रयण नव म हानिहि चउसट्ठि सहस्स पवर जुवईण सुंद र वइ चुलसी हय गय रह सय सहस्स सामी छन्नवइ गाम कोडि सामी आसिजो भारहंमि भयव ॥ ११ ॥ वेड्ढओ ॥ तं संतिं संतियरं, संति न्न सव्व भया ॥ संतिं थुणामि जिण, संतिं विहे उ मे ॥ १२ ॥ रासाणंदिअयं ॥ इक्काग विदेह नरीसर, नरवसहा मुणिवसहा ॥ नव सारय ससि सकलाणण, विगय तमा विहुअरया ॥ अजिउत्तम तेअ गुणेहिं महामुणि, अमिय बलाविउल कुला ॥ पणमामि ते भवभय मूर ण, जग सरणा मम सरणं ॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥ देव दाणविंद चद सूरवंद हठ तुठ जिठ पर म, लठ रूव धंत रुप्प पट सेअ सुद्ध निद्ध धवल ॥ दंतपंति संति सत्ति कित्ति मुत्ति जुत्ति

मा ॥ २३ ॥ रयणमाला ॥ वंदिऊण थोऊणतो
जिण, तिगुणमेवय पुणोपयाहिण ॥ पणमिऊ
णय जिण सुरासुरा, पमुइत्र्या सभवणाइत्तो ग
या ॥ २४ ॥ खित्तय ॥ तं महामुणिमहंपि पंज
लि, राग दोस नय मोह वज्जित्र्य ॥ देवदाणव
नरिंद वंदिश्रं,सति मुत्तम महातवं नमे ॥२५॥
खित्तयं ॥ अंबरंतरविश्रारणिश्राहिं, ललिञ
हंस वहुगामिणिश्राहिं ॥ पीण सोणियण सा
लणिश्राहिं, सकल कमल दललोश्रणिश्रा
हिं ॥ २६ ॥ दीवयं ॥ पीण निरतर थणनरवि
णमिय गायलयाहिं, मणिकचण पसिढिलमेह
ल सोहिश्र सोणितडाहिं ॥ वरखिखिणि नेजर
सतिलय वलय विजूसणियाहिं, रइकर चजर
मणोहर सुदर दंसणियाहिं ॥ २७ ॥ चित्तक्क
रा ॥ देवसुंदरीहिं पाय वंदिश्राहिं वंदिश्राय
जस्स ते सुविक्कमाकमा अप्पणो निमालएहिं
मम्णोक्कुणप्पगारएहिं केहिं केहिं वीश्रवग ति

दादिव धणवइ नरवइ, थुअ महिअच्चिअं ब
हुसो ॥ अइ रुग्गय सरय दिवायर, समहिअ
सप्पभ तवसा ॥ गयणंगण वियरण समुइअ,
चारण वंदिअ सिरसा ॥२९॥ किसलयमाला ॥
असुर गरुल परिवंदिअं, किन्नरोरग णमंसि
अ ॥ देव कोडिसयसथुय, समणसघ परिवंदि
अ ॥ ३० ॥ सुमुह ॥ अभय अणह अरयं अ
रुय ॥ अजिअ अजिअ पयत पणमे ॥ ३१ ॥
विज्जुविलसिअ ॥ आगयावर विमाण, दिव
कणग रह तुरय पहकर सएहिं हुलिअ ॥ ससं
भमो अरण खुभिअ लुलिअ चल कुण्डलं
गय तिरीड सोहत मउलिमाला ॥ ३२ ॥ वेढ्ढ
ओ ॥ ज सुरसंघा सासुर सघा वेर विउत्ता भ
त्ति सुजुत्ता,आयर भूसिअ सभमपिण्डिअ सुट्ठु
सुविम्हिअ सव्वबलोघा ॥ उत्तम कचण रयण
परूविअ भासुर भूसण भासुरिअगा, गाय स
मोणय भत्तिवसागय पंजलिपेसियसीस पणा

मेसहं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ नारा
यऊ ॥ छत्त चामर पडागजूअ जव मंडिआ, झ
यवर मगर तुरय सिरिवछ सुलंछणा ॥ दीव
समुद्द मंदरदिसागयसोहिआ, सत्थिअ वसह
सीहसिरिवछसुलंछणा ॥ ३२ ॥ ललिअयं ॥ स
हावलठा समप्पइठा, अदोस दुठा गुणेहिं जिठा
॥ पसायसिठा तवेण पुठा, सिरीहिं इठा रिसी
हीं जुठा ॥३३॥ वाणवासिआ ॥ ते तवेण धुअ
सवपावया, सवलोअहिअ मूल पावया ॥ सं
थुआ अजिअ संति पायया, हुतु मे सिव सुहा
णदायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिया ॥ एव तव बल
विउल, थुअं मए अजिअ संति जिणजुयलं ॥
ववगय कम्म रयमल, गइ गय सासया विमलां
॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं बहुगुणप्पसायं, मुक्ख सु
हेण परमेण अविसाय ॥ नासेउ मे विसाय, कु
णउअ परिसाविअ पसाय ॥ ३६ ॥ गाहा ॥
त मोएउ अनंदिं,पावेउअ नंदिसेणमभिनंदिं ॥

लय पत्तलेह नामएहिं चिह्नएहिं संगयं गया
हिं नत्ति सन्निविठ वदणागयाहिं हुंति ते वदि
आ पुणो पुणो ॥ २८ ॥ नारायत ॥ तमहं जि
णचंदं, अजिअ जिअमोहं ॥ धुअसवकिलेसं
पयत पणमामि ॥ २९ ॥ नंदिअयं ॥ थुअवं
दिअस्सारिसिगण देवगणेहिं, तो देव वहूहिं
पयत पणमिअस्सा ॥ जस्स जगुत्तमसासणय
स्सा, नत्तिवसागयपिंडिअआहिं ॥ देव वर
च्छरसा वहुआहिं, सुरवर रइगुण पंडिअआ
हिं ॥ ३०॥ नासुरय ॥ वंस सद्द तति ताल मे
लिए तिउक्खरानिराम सद्द मीसएकए अ,
सुइसमाणणेअ सुद्ध सज्ज गीअ पाय जालघं
टिआहिं ॥ वलय मेहला कलावनेउराभिरा
म सद्द मीसए कए अ देवनट्टिआहिं ॥ हाव
भाव विब्भमप्पगारएहिं नच्चिऊण अंग हारएहिं
वंदिआय जस्स ते सुविक्कमाकमा ॥ तयं तिलो
अ सव्व सत्त सतिकारयं पसंत सव्व पाव दोस

णेज्जा गईए ॥ सद्दल नद्दय लंवा लघए
पएर्दि, अजिअ मद्दव संतिं सो समद्धो ज
॥ २ ॥ तद्दविद्दु वद्धुमाणु ल्लासन्नत्तिघ्नरे
गुणकणमिवकित्ती द्दामि चिंतामणि व ॥ अ
द्दव अचिंता णंतसामद्धउसिं, फलद्दइ
सव वग्गिअं णिच्छिअं मे ॥ ३ ॥ सयलज
आणं नाममित्तेण जाण, विद्दडइ लहु
निठदोघट्टयठं ॥ नमिरसुर किरीडू ग्गिठ
ारविंदि, समय मजिअ सती ते जिणिंदे
दे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकित्ती वद्धए देद्ददित्ती,
सइ नुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती ॥ फु
परमतित्ती द्दोइ ससारछित्ती, जिणजुअ
त्ती द्दीअ चिंतोरुसत्ती ॥ ५ ॥ ललियप
ारं नूरिदिवंगद्दारं, फुडगणरसनावो
सिंगारसार ॥ अणमिसरमणीज द्दसणछे
तीया, इव पुणमणि वंधा कास नठोवयारं
॥ थुणद्द अजिअसती ते कया सेस सती,

परिसाइवि सुहनर्दि, मम य दिसउ सजमे नर्दि ॥३७॥ गाहा ॥ पक्खिअ चाउम्मासिय,स वछरिए अवस्स नणिअवो ॥ सोअवो सवेर्हि, उवसग्ग निवारणो एसो॥३७॥जो पढइ जोअ निसुणइ, उनउ कालपि अजिअ सतिथयं ॥ न हु हुति तस्स रोगा, पुवुप्पन्ना विनासति ॥ ॥ ३ए ॥ जइ इछह परम पय, अहवा कित्ति सुविछडा नुवणे ॥ ता तेलुकुध्दरणे, जिणवयणे आयर कुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥ इति श्रीबृहद जितशातिस्तवन प्रथमस्मरणम् ॥१॥

॥ अथ धितीय लघुअजितशातिस्मरणम् ॥

॥ उल्लासिक मनक्क निग्गयपहा दरूछलेण गिए, वदारूण दिसंत इव पयड निवाणम ग्गावर्लि ॥ कुर्दिडुज्जल दतकति मिसउ नी त नाणकुरु, केरे दोविडु इक्क से थोसामि खेमकरे

जणिज्जा गईए ॥ सहल नइय लवा लंघए जो पएर्हि, अजिअ महव संतिं सो समहो व पेउं ॥ २ ॥ तहविहु वहुमाए ल्लासभत्तिभ्भरे ण, गुणकणमिवकित्ती हामि चिंतामणि व ॥ अ लमहव अचिंता णंतसामत्थउसिं, फलहइ लहु सव्व वंछिअं णिछिअ मे ॥ ३ ॥ सयलज यहिआणं नाममित्तेण जाणं, विहडइ लहु उठा निठदोघट्टथठ ॥ नमिरसुर किरीडू ग्गिठ पायारविंदे, समय मजिअ संती ते जिणिंदे भिवदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकित्ती वहृए देहदित्ती, विलसइ भुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती ॥ फु रइ परमतित्ती होइ ससारछित्ती, जिणजुअ पयभत्ती हीअ चिंतोरुसत्ती ॥ ५ ॥ ललियप यपयारं भूरिदिव्वगहारं, फुडगणरसभावो धारसिंगारसार ॥ अणमिसरमणीज हसणहे अजोया, इव पुणमणि वधा कास नट्टोवयारं ॥ ६ ॥ थणाह अजिअसती ते कया सेस संती,

परिसाइवि सुहनदिं, मम य दिसउ सजमे नदिं ॥३७॥ गाहा ॥ पक्खिञ्च चाउम्मासिय, संवछरिए अवस्स नणिअवो ॥ सोअवो सवेहिं, उवसग्ग निवारणो एसो॥३८॥जो पढइ जोअ निसुणइ, उनउ कालंपि अजिअ सतिथयं ॥ न हु हुति तस्स रोगा, पुवुप्पन्ना विनासति ॥ ॥ ३९ ॥ जइ इछह परम पय, अहवा कित्ति सुविछडा नुवणे ॥ ता तेलुकुरणे, जिणवयणे आयर कुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥ इति श्रीबृहद जितशातिस्तवन प्रथमस्मरणम् ॥१॥

॥ अथ द्वितीय लघुअजितशातिस्मरणम् ॥

॥ उल्लासिक मनक्क निग्गयपहा दरूछलेणं गिणं, वदारूण दिसंत इव पयड निवाणम ग्गावलिं ॥ कुंदिछजाल दतकति मिसउ नीह त नाणकुरु, केरे दोविछ इक्क सोलस जिणे थोसामि खेमंकरे ॥ १ ॥ चरम जलहिनीर जोमिणिक्कं जलीहिं, खय समय समीरं जो

ह जहिं गाढसंथंनिअव ॥ ११ ॥ अडविनिव
डिआणं पहिवुत्तासिआण, जलहि लहरि
हीरं ताण गुत्ति छियाण ॥ जलिअ जलण
जाला लिंगिआण च झाण, जणयइ लहु
संति संतिनाहा जिआण ॥ १२ ॥ हरि करि
परिकिंसं पक्क पाइक्कपुणं, सयलपुहवि रक्कं
वज्झिअ आण सक्कं ॥ तण मिव पडिलग्ग जेजि
णासुत्तिमग्ग, चरण मणुपवन्ना हुंतु ते मे पस
न्ना ॥ १३ ॥ वणससिवयणाहिं फुल्लनित्तुप्पला
हिं, थणजरनमिरीहिं मुठिगिज्झोदरीहिं ॥
ललिअ भुअलयाहिं पीण सोणित्थणीहिं,
सयसुर रमणीहिं वंदिआ जेसि पाया ॥ १४ ॥
अरिस किडि भकुठ गठि कासाइसार, खय
जर वण लूआ साससोसोदराणि ॥ नहमुह
दसणच्छी कुच्छिकन्नाइरोगे, मह जिणजुअ
पाया सुप्पसाया हरतु ॥ १५ ॥ इय गुरुदुहता
से पक्खिए चाउमासे, जिणवर दुगथुत्तं व

कणयरयपसगा वज्जए जाणिमुत्ती ॥
परिंन्ना रंजनिवाणलद्धी, घणथणघुसि
कु प्पकपिंगीकयच ॥ ७ ॥ वु
वज्जणिच्चं अणिच्चं, सदसदणभिलप्पा
अणेग ॥ इय कुनय विरुद्धं सुप्पसिद्ध तु
वयण मवय णिज्ज ते जिणे संजरामि ॥ ८
पसरइ तिअ लोए ताव मोहधयारं,
य मसस तावमिच्छत्तगस ॥ फुरइ
णंतणाणं सुपूरो, पयड मजिअसती जाण
रो न जाव ॥ ए ॥ अरि करि हरि तिण्हु
चोरा हिवाही, समर डमर मारी रुद्द
वसग्गा ॥ पलय मजिअसती कित्तणे
ती, निविडतरत मोहा नक्कराखुखिअ ध ॥१०
निचिअडरिअदारु दित्तझाणग्गिजाला, पा
गय मिव गोर, चिंतिअं जाण रूव ॥ ११
निहमरेहा कंतिचोरं करिज्ज,

म्भड कल्लोल भीसणारावे ॥ संभंत भय विसतु
ल, निघामय मुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अविदलिअ
जाणवत्ता, खणेण पावति इच्छिअं कूल ॥ पा
स जिण चलण जुअलं, निच्चचिअ जे नमंति
नरा ॥ ५ ॥ खर पवणुध्धुअ वणदव, जालाव
लि मिलिय सयल दुम गहणे ॥ मझत मुध्धमि
य वहु, भीसरणरव भीसणमि वणे ॥ ६ ॥ जग
गुरुणो कमजुअल, निवाविअ सयल तिहुअ
णाभोअ ॥ जे संभरति मणुआ, न कुणइ ज
लणो भयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसत भोग भीस
ण, फुरिआरुण नयण तरल जीहालं ॥ उग्ग
भुअग नवजल य, सच्छह भीसणायारं ॥ ८ ॥
मन्नत कीड सरिस, दूर परिछुढ विसम विस
वेगा ॥ तुह नामक्कर फुडसि ध्ध, मंत गुरुआ न
रा लोए ॥ ए ॥ अडवीसु भिल्ल तक्कर, पुलिंद
सद्दल सद्दभीमासु ॥ भयविहुर वुन्नकायर, उ
ल्लूरिअ पहिअ सछासु ॥ १० ॥ अविलुत्तविह

ह्वरे वा पवित्त ॥ पढइ सुणइ सिवा एह
चित्ते, कुणइ सुणइ विग्घं जेण धाएइ
॥ १६ ॥ इय विजयाजियसत्तुपुत्त
अ जिणेसर, तह अइराविससेण तणइ
चक्कीसर ॥ तित्थंकर सोलसम संति
सथुअ, कुरु मंगल मम हर सुड
पि थुणंतह ॥१७॥ इति श्रीलघुअ
स्तवन द्वितीयं स्मरणम् ॥ २ ॥

॥ अथ नमिऊणनामक तृतीय स्मरणम् ॥

॥ नमिऊण पणय सुरगण, चूडामणि
एरजिअ मुणिणो ॥ चलणजुअल
पणासण संथव वुच्छ ॥ १ ॥ सडिय कर
नह मुह, निबुड्ड नासा विवन्न लावन्ना ॥
महारोगानल, फुलिंग निद्दड्ढ सव्वंगा ॥ २
ते तुह चलणा राहण, सलिलजलिमेय
य छाया ॥ वण दवदड्ढा गिरिपा यव
पुणो लहिं ॥३॥ उत्राय खुभिय जलनिहि

न्नड कल्लोल न्नीसणारावे ॥ संन्नत न्नय विसवु ल, निरामय मुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अविदलिअ जाणवत्ता, खणेण पावति इछिअं कूल ॥ पास जिण चलण जुअलं, निच्चंचिअ जे नमंति नरा ॥ ५ ॥ खर पवणुधुअ वणदव, जालावलि मिलिय सयल डुम गहणे ॥ रुन्नत मुध्धमिय वहु, न्नीसरणरव न्नीसणमि वणे ॥ ६ ॥ जग गुरुणो कमजुअल, निवाविअ सयल तिहुअणान्नोअ ॥ जे संन्नरति मणुआ, न कुणइ जलणो न्नयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसत न्नोग न्नीसण, फुरिआरुण नयण तरल जीहालं ॥ उग्ग नुअग नवजलय, सछहं न्नीसणायारं ॥ ८ ॥ मन्नत कीड सरिसं, दूर परिछुढ विसम विस वेगा ॥ तुह नामरकर फुडसि ध्ध, मत गुरुआ नरा लोए ॥ ए ॥ अडवीसु निल्ल तक्कर, पुलिंद सद्दल सद्दन्नीमासु ॥ न्नयविहुर वुन्नकायर, उल्लूरिअ पहिअ सवासु ॥ १० ॥ अविलुत्तविह

हरे वा पवित्त ॥ पढइ सुणइ सिद्या एद चित्ते, कुणद सुणद विग्घ जेण धाएद ॥ १६ ॥ इय विजयाजियसत्तुपुत्त ञ्च जिऐसर, तद ञ्चइराविससेण तणइ चक्कीसर ॥ तिछकर सोळसम सति जिण सघुञ्च, कुरु मंगल मम हर सुर्ङ्ग पि घुणंतद ॥१७॥ इति श्रीलघुञ्जित स्तवनं द्वितीयं स्मरणम् ॥ २ ॥

॥ ञ्चथ नमिऊणनामक तृतीय स्मरणम् ॥

॥ नमिऊण पणय सुरगण, चूडामणि किरण रंजिञ्चं मुणिणो ॥ चलणजुञ्चलं महाभय पणासण सथव वुच्छं ॥ १ ॥ सडिय कर चरण नद मुद, निबुड्ड नासा विवन्न लावन्ना ॥ कुट्ठ महारोगानल, फुलिग निद्दड्ड सब्बंगा ॥ २ ॥ ते तुह चलणा राहण, सलिलंजलिसेय वु ढ्ढ य छाया ॥ वण दवदद्धा गिरिपा यव ब्व पुणो लहिं ॥३॥ दुवाय खुभिय जलनिहि,

प्रड कल्लोल नीसणारावे ॥ संनत नय विसतु ल, निम्रामय मुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अविदलिअ जाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूल ॥ पा स जिण चलण जुअलं, निच्चंचिअ जे नमंति नरा ॥ ५ ॥ खर पवणुद्धुअ वणदव, जालाव लि मिलिय सयल डुम गहणे ॥ म्नत मुद्धमि य वहु, नीसरणरव नीसणमि वणे ॥ ६ ॥ जग गुरुणो कमजुअल, निव्वाविअ सयल तिहुअ णान्नोअ ॥ जे संनरति मणुआ, न कुणइ ज लणो नयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंत नोग नीस ण, फुरिआरुण नयण तरल जीहाल ॥ उग्ग नुअग नवजल य, सत्थह नीसणायारं ॥ ८ ॥ मन्नत कीड सरिस, दूर परिछुद्ध विसम विस वेगा ॥ तुह नामक्कर फुडसिद्ध, मंत गुरुआ न रा लोए ॥ ए ॥ अडवीसु निल्ल तक्कर, पुलिंद सद्दल सद्दनीमासु ॥ नयविहुर वुन्नकायर, उ ल्लुरिअ पहिअ सत्थासु ॥ १० ॥ अविलुत्तविह

वसारा, तुह नाह पणाम मत्तवावारा ॥
विग्घा सिग्घ, पत्ता हिय इच्छिय ठाण ॥ ११
पज्जलिआनलनयण, दूरवियारियमुहं
काय ॥ नह कुलिसघायविअलिअ, गइंद
कुंभत्थलाभोअं ॥ १२ ॥ पणय ससंभम पत्थिव,
नहमणिमाणिक्क पडिअ पडिमस्स ॥ तुह
वयण पहरणधरा, सीहं कुद्धंपि न गणंति ॥ १३
ससिधवल दंतमुसलं, दीहकरुल्लाल वढि
उच्छाहं ॥ महुपिंग नयणजुअलं, ससलिल
नवजलहरारावं ॥ १४ ॥ भीम महागइंद,
सन्नपि ते नवि गिणंति ॥ जे तुम्ह चलण
जुअल, मुणिवइ तुंग समल्लीणा ॥ १५ ॥ समरम्मि
तिक्ख खग्गा, भिग्घाय पविद्ध उद्धुय कबंधे
कुंतविणिभिन्न करि कलह, मुक्कसिक्कार
पउरंमि ॥ १६ ॥ निज्जिय दप्पुद्धर रिउ, नरिंद नि
वहा भडा जस धवलं ॥ पावंति पाव पसमिण
पासजिण तुह प्पभावेण ॥ १७ ॥ रोग ज

जलण विसहर, चोरारि मइंद गय रण नयाइं ॥ पास जिणनाम सकि, त्तणेण पसमति सवा इ ॥ १८ ॥ एवं महा जयहरं, पास जिणिंदस्स सथवमुब्भार ॥ नविय जणाणदयर, कल्लाण परपरनिहाण ॥ १९ ॥ राय नय जक्क रक्कस, कुसुमिण डुस्सउण रिक्क पीडासु ॥ सझासु दो सु पंथे, उवसग्गे तहय रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, ताण कइणो य माणतुं गस्स ॥ पासा पाव पसमिउ, सयल नुवणच्चि अ चलणो ॥ २१ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं तृतीयस्मरणं संपूर्णम् ॥ ३ ॥

॥अथ गणधर देवस्तुति चतुर्थ स्मरण प्रारम्न ॥

॥ त जयउ जय तिछ, जमिह तिछाहि वेण वीरिण ॥ सम्मं पवत्तिअन्न, व सत्त संताणसुह जणय ॥ १ ॥ नासिअ सयलकिलेसा, निहय कुलेसा पसछ सुहलेसा ॥ सिरिवद्धमाण तिछ, स्स मगल दिंतु ते अरिहा ॥ २ ॥ निद्दह्वकम्म

वीआ, वीआपरमिट्ठिणो गुणसमिद्धा ॥ सिद्ध
तिजय पसिद्धा, हणंतु दुहाणि तित्थस्स ॥ ३ ॥
आयार मायरता, पचपयार सया पयासता ॥
आयरिआ तह तित्थ, निहय कुतित्थं पयासंतु
॥ ४ ॥ सम्मसुअ वायगावा, यगाय सिअवा
य वायगा वाए ॥ पवयण पडिणीय कए, वंति
तु सवस्स सघस्स ॥५ ॥ निवाणसाहुणिकिअ,
साहूण जणिअ सव साहज्जा ॥ तित्थप्पभावगा
ते, हवतु परमिट्ठिणो जइणो ॥ ६ ॥ जेणाणुग
यं नाण, निवाणफल च चरणमविहवइ ॥ ति
त्थस्स दसण त, मगलमुवणेउ सिद्धियर॥ ७ ॥
निच्छउमो सुअधम्मो, समग्ग भवगि वग्ग क
य सम्मो ॥ गुणसुट्ठिअस्स सघस्स, मगल
सम्ममिह दिसउ ॥ ८ ॥ रम्मो चरित्त ,
सपाविअ भवसत्त सिवसम्मो ॥ नीसेस
लेसहरो, हवउ सया सयल सघस्स ॥
॥९॥ गुणगण गुरुणो गुरुणे गावसुद ।२।

कुणंतु तित्थस्स॥सिरिवद्धमाण पहुपय, डिअस्स
कुसलं समग्गस्स ॥१०॥ जियपडिवक्खाजक्खा,
गोमुह मायग गयमुह पमुक्खा ॥ सिरि बम्भ सं
ति सहिआ, कय मयरक्खा सिवं दितु ॥ ११ ॥
अवा पडिहयरिवा, सिद्धा सिद्धाइआ पवयण
स्स ॥ चक्केसरि वइरुट्टा, सति सुरा दिसउ सु
क्खाणि ॥ १२ ॥ सोलस विज्जा देवी, ददितु
संघस्स मगलं विउल ॥ अच्चुत्ता सहिआउ,
वैस्सुअ सुयदेवयाउ सम ॥ १३ ॥ जिण सास
ण कय रक्खा, जक्खा चउवीस सासण सुरावि ॥
सुहभावा सतावं, तित्थस्स सया पणासतु ॥
॥ १४ ॥ जिणपवयणंमि निरया, विरहा कुप
हाउ सव्व हासवे ॥ वेयावच्च गराविअ, तित्थस्स
हवतु सतिकरा ॥ १६ ॥ जिणसमय सुद्धसम
ग्ग, विहिअ भवाण जणिअ साहज्जो ॥
गीयरई गीयजसो, सपरिवारो सुह दिसउ
॥ १६ ॥ गिहगुत्त खित्त जलयल, वण पव्वय

वासि देव देवीउ ॥ जिण सासण ठिआणं,
दाणि सवाणि निहणतु ॥ १७ ॥ ५
लासक्कि, त्तवालया नवग्गहा सनक्कता ॥
इणि राहुग्गहका,लपास कुलिअइ पहरेहिं
॥१८॥ सहकाल कटएहिं, सविठिवणेहिं
लवेलाहिं ॥ सवे सवउ सुह, दिसतु
संघस्स ॥ १९ ॥ नवणवइ वाणमतर,
वेमाणिआ य जे देवा ॥ धरणिंद सक्क
दलंतु डरिआइं तिठस्स ॥ २० ॥ चक्क
जलंत, गछइ पुरउपणासिअ तमोहं ॥ त
स्स नगवउ, नमो नमो वद्धमाणस्स ॥ २१
सो जयउ जिणो वीरो, जस्स ज्ञविसासणं
ए जयइ ॥ सिद्धिपह सासणं कुप, ह नासणं
ब्व नय महण ॥ २२ ॥ सिरि उसननसेण
दयनय निवहा दिसंतु तिठस्स ॥ सव जि
णिदा, रिणो एह वठिअं सवं ॥ २३ ॥
वद्धमाण तिठा, हिवेण तिठं समप्पिअं जस्स

म्म सुहम्म सामी, दिसउ सुहं सयल सं
घस्स ॥ २४ ॥ पयइएज्जहिआ जे, ज्हाण दि
संतु सयल सघस्स ॥ इयरसुरा विहु सम्मं, जि
णगणहर कहिय कारिस्स ॥ २५ ॥ इय जो
पढइ तिसऊ, छुस्सव तस्स नत्थि किंपि जए ॥
जिणदत्ताणाएठिउ,सुनिठिअठा सुही होई २६
इति श्रीगणधरदेवस्तुतिनामक चतुर्थ स्मरणं
॥ अथ गुरुपारतन्त्र्यनामक पंचम स्मरणम् ॥
॥ मयरहिअं गुणगण रयण, सायरं सायरं
पणमिऊणं ॥ सुगुरुजण पारतंत,उवहिव थुणा
मि त चेव ॥ १ ॥ निम्महिय मोह जोहा, निह
य विरोहा पणठ संदेहा ॥ पणयगि वग्ग हा
विअ, सुह संदोहा सुगुण गेहा ॥ २ ॥ पत्तसु
जइत्त सोहा, समत्त परतित्त जणिय सखोहा
॥ पडिभग्ग मोह जोहा, दसिअ सुमहत्थ सत्थो
हा ॥ ३ ॥ परिहरिअ सत्तवाहा, हय दुह दा
हा सिवव तरुसाहा ॥ सपाविअ सुहलाहा,

वासि देव देवीउ ॥ जिण सासण
हाणि सवाणि निहणतु ॥ १७ ॥
लासक्कि, त्तवालया नवग्गहा सनस्कता ॥
इणि राहुग्गहका,लपास कुलिअ्रद्द
॥१८॥ सहकाल कटणर्हि, सविछिवर्ठेहिं
लवेलाहिं ॥ सवे सवउ सुह, दिसतु
सघस्स ॥ १९ ॥ नवणवइ वाणमतर,
वेमाणिआ य जे देवा ॥ धरणिंद सक्क
दलंतु डरिआइं तिञस्स ॥ २० ॥ चक्क
जलंत, गछइ पुरउपणासिअ तमोहं ॥
स्स नगवउ, नमो नमो वद्धमाणस्स ॥ २१
सो जयउ जिणो वीरो, जस्स ज्जविसासणं
ए जयइ ॥ सिद्धिपहसासणं कुप, ह नासणं
व नय महणं ॥ २२ ॥ सिरि उसनसेण
हयनय निवहा दिसतु तिञस्स ॥ सव
गणिहा, रिणो एह वग्गिअं सवं ॥ २३ ॥ सि
वद्धमाण तिञ्ञा, हिवेण तिञ्ञ समप्पिअं जस्स

सेण ॥ ११ ॥ सुकइत्त पत्त कित्ती, पयडिअ
गुत्ती पसत सुदमुत्ती ॥ पढ्य परवाइ दित्ती,
जिणचद जईसरो मंती ॥ १२ ॥ पयडिअ नवं
ग सुत्तह, रयणुक्कोसो पणासिअ पउसो ॥ भ
वभीअ मविअ जणमण, कयसंतो सो विगय
दोसो ॥ १३ ॥ जुग पवरागम सार, प्परूवणा
करणबंधु रोघणिअ ॥ सिरि अभयदेव सूरी,
मुणिपवरो परम पसमधरो ॥ १४ ॥ कय सा
वय संतासो, हरि व सारग भग्ग संदेहो ॥ ग
य समय दप्प दलणो, आसाइअ पवर कव्वर
सो ॥ १५ ॥ भीमभव काणणमिअ, दसिअ
गुरुवयण रयण संदेहो ॥ नीसेस सत्त गुरुउ,सू
री जिणवल्लहो जयइ ॥ १६ ॥ उवरठिअ सच्च
रणो, चउरणुउग पढाण सच्चरणो ॥ असम
मयराय महणो, उद्धमुहो सहइ जस्स करो ॥
॥ १७ ॥ दसिअ निम्मल निच्चल, दतगणो
गणिअ सावउह भउ ॥ गुरुगिरि गरुउ सरहि

खीरोदहिणुव अग्गाहा ॥ ४॥ सुगुणजण
अ पुजा, सजो निरुवज्ज गहिअ पव्वज्ज ॥ सि
वसुह साहण सज्जा, जयगिरि गुरु चूरणे वज्ज
॥ ५ ॥ अज्जसुहम्म पमुहा, गुणगण निवह
सुरिंद विहिय महा ॥ ताण तिसऊ नामं, नाम
न पणासइ जिणाण ॥ ६ ॥ पडिवज्जिअ
देवो, देवायरित्त डुरत जवहारी ॥ सिरि नेमि
चद सूरी, उज्जोयण सूरिणो सुगुरु ॥ ७ ॥
रि वध्दमाण सूरी, पयडीकय सूरि मत माह
॥ पडिहय कसाय पसरो, सरय ससक्कव
जणउ ॥ ८ ॥ सुदसीतु चोर चप्पर, ए
निच्चलो जिणमयमि ॥ जुगपवर सिध्दसिध्द,
जाणउ पणय सुगुणजणउ ॥ ए ॥ पुरउ
महिव, ल्लहस्स अणहिल्ल वाडए पयर्ड ॥
वि आरिऊण, सीहिणव दव्वलिंगि गया ॥१०
टसमछेरय निसिवि, प्फुरंतु सछंद सूरिमय
मिर ॥ सूरेणव सूरि जिणे, सरेण

॥ ३ ॥ सिरि थंभणय ठिअ पा, ससामि पय
पउम पणय पाणीण ॥ निद्दलिअ डुरिअ विं
दो, धरणिंदो हरउ डुरिआइ ॥ ४ ॥ गोमुह
पमुक्ख जक्खा, पडिहय पडिवक्ख पक्ख लक्खा
ते ॥ कयसुगुण संघ रक्खा, हवंतु संपत्त सिव
सुक्खा ॥ ५ ॥ अप्पडिचक्का पमुहा, जिण सास
ण देवयाउ जिण पणिआ ॥ सिद्धाइआ समे
या, हवतु सघस्स विग्घहरा ॥ ६ ॥ सक्काए
सासणउ र, पुरठिउ वद्धमाण जिण नत्तो ॥ सि
रि बंभ सति जक्खो, रक्खउ संघं पयत्तेण ॥ ७॥
खित्तगिह गुत्त संता,ण देस देवाहि देवया ता
उ ॥ निवुइ पुर पहियाण, नवाण कुणतु सुक्खा
णि ॥ ८ ॥ चक्केसरि चक्कधरा, विहिपहरि उहि
स्र कंधरा धणिअ ॥ सिवसरण लग्ग संघस्स,
सवहा हरउ विग्घाणि ॥ ए ॥ तिहुवइ वद्धमा
णो, जिणेसरो सगउ सुसघेण ॥ जिणचदो न
अन्नेवो रक्खउ जिणवल्लहो पहुमं ॥ १० ॥ सो

य, सूरि जिणवल्लहो होत्था ॥ १० ॥ सुग पव
रागम पीऊ, सपाणि पीणय मणाकया जा ॥
जेण जिणवल्लहेणं, गुरुणा तं सव्वहा वंदे ॥ १९ ॥
विप्फुरिअ पवर पवयण, सिरोमणी वूढ दुव्वर
खमोया ॥ जो सेसाण सेसु, व सहइ सत्ताणत्ता
णकरो ॥ २० ॥ सच्चरिआण महीण, सुगुरूणं
पारतत सुवहइ ॥ जयइ जिणदत्त सूरी, सिरि
निलओ पणय मुणितिलओ ॥ २१ ॥ इति श्रीगु
रुपारतन्त्र्यनामक पंचमस्मरणम् ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीषष्ठम्स्मरणम् ॥

॥ सिग्घमवहरउ विग्घ, जिणवीर
गामि संघस्स ॥सिरि पासजिणो थंभण, पुरडि
ओ निट्ठिआनिट्ठो ॥१ ॥ गोयम सुहम्म पमुहा,
गणवइणो विहिअ भव सत्तसुहा ॥ सिरि
माण जिणति, ओ सुवयते कुणतु सया ॥ २
सक्काइणो सुराजे,जिण वेयावच्च कारिणो ..
अवहरिअ विग्घ संघा, हवंत ते संघ

॥ अथ भक्तामरस्तोत्रं प्रारभ्यते ॥

॥ भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा, मुद्यो
,कं दलितपापतमोवितानम्॥ सम्यक् प्रणम्य
तेनपादयुगं युगादा, वालवनं भवजले पत
ा जनानाम्॥ १ ॥ य संस्तुत सकलवाङ्म
तत्त्वबोधा, उभूतबुद्धिपटुभि सुरलोकनाथै ॥
तोत्रैर्जगत्रितयचित्तहरैरुदारै , स्तोष्ये किलाह
ापि त प्रथम जिनेन्द्रम्॥२॥युग्मं॥ बुद्ध्या विना
,पे विबुधार्चितपादपीठ, स्तोतुं समुद्यतमतिर्वि
गतत्रपोऽहम्॥ वालं विहाय जलसस्थितमिन्दु
विंव, मन्य क इच्छति जन सहसा ग्रहीतुम्॥
॥ ३ ॥ वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र शशांककातान्,
कस्ते क्षम सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ॥ कल्पां
तकालपवनोद्धतनक्रचक्रं, को वा तरीतुमलमंबु
निधिं भुजाभ्याम्॥४॥ सोऽहं तथापि तव भ
क्तिवशान्मुनीश, कर्तुं स्तव विगतशक्तिरपि प्र
" पीत्यात्मवीर्य [illegible]चार्य मृगोमृगेंद्र, ना

जयउ वद्धमाणो, जिणेसरो णेस रुव हयतिमि
रो ॥ जिणचंदा नयदेवा, पहुणो जिणवल्लहा
जेय ॥ ११ ॥ गुरु जिणवल्लह पाए, नयदेव
पहुत्त दायगे वंदे ॥ जिणचद जिणेसरव, रुमा
ण तिहस्स वुद्धिकए ॥ १२ ॥ जिणदत्ताणं स
म्म, मन्नति कुणति जेय कारति ॥ मणसा व
यसा वउसा, जयंतु साहम्मिआ तेवि ॥ १३ ॥
जिणदत्त गुणे नाणाइणो, सया जे धरति धारिं
ति ॥ दंसिअसिय वायपए, नमामि साहम्मि
आ तेवि ॥ १४ ॥ इति षष्ठ स्मरणम् ॥ ६ ॥

॥ अथ उवसग्गहर नामकं सप्तमस्मरणम् ॥

॥ उवसग्गहरं पास, पासं वंदामि कम्मघण
मुक्क ॥ विसहरविसनिणासं, मंगलकल्लाण आ
वासं॥१॥ इत्यादि ॥ नवेनवेपासजिणचंद
संपूर्ण कहना ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन ...
सप्तम स्मरणम्॥७॥इति सप्तस्मरणं ...

१० ॥ दृष्ट्वा नवतमनिमेषविलोकनीय, ना
यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षु ॥ पीत्वा पय
शिकरद्युति दुग्धसिंधो, क्षारं जल जलनि
रशितु क इच्छेत् ॥ ११ ॥ ये शांतरागरुचि
न परमाणुभिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिभुवनैकलल
ामभूत ॥ तावंत एव खलु तेप्यणव पृथिव्यां,
त्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्त्रं
क ते सुरनरोरगनेत्रहारि, नि शेषनिर्जितजग
त्त्रितयोपमानम् ॥ विंबं कलंकमलिनं क्व निशा
करस्य, यद्वासरे भवति पांडुपलाशकल्पम् ॥
॥ १३ ॥ सपूर्णमंडलशशांककलाकलाप, शु
भ्रा गुणास्त्रिभुवन तव लंघयति ॥ ये संश्रिता
स्त्रिजगदीश्वरनाथमेक, कस्तान्निवारयति सच
रतो यथेष्टम् ॥१४॥ चित्र किमत्र यदि ते त्रि
दशांगनाभि, नीत मनागपि मनो न विकार
मार्गम् ॥ कल्पांतकालमरुता चलिताचलेन,
किं मंदराद्रिशिखर चलित कदाचित् ॥ १५ ॥

ध्येति किं निजशिशो परिपालनार्थम् ॥
अल्पश्रुत श्रुतवता परिहासधाम, ˎ
रेव मुखरीकुरुते बलान्माम् ॥ यत्कोकिल
मधौ मधुरं विरौति, तच्चारुचाम्रक
कहेतु ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन ˎ ˎ
पाप क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ॥ ।
लोकमलिनीलमशेषमाशु, सूर्यांशु
शार्वरमधकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति नाथ तव
स्तवन मयेद, मारभ्यते तनुधियापि तव
वात्॥ चेतो हरिष्यति सता नलिनीदलेषु,
फलद्युतिमुपैति ननूदबिंदु ॥ ८ ॥ आस्ता
स्तवनमस्तसमस्तदोष, त्वत्सकथापि
दुरितानि हति ॥ दूरे-सहस्त्रकिरणः कुरुते
व, पद्माकरेषु जलजानि विकाशभाजि ॥ ९
नात्यद्भुत भुवनभूषणभूत नाथ,
भर्वतमभिष्टुवत ॥ तुल्या भवति भवतो ननु
न किं वा, भूत्याश्रित य इह नात्मसमं करोति

१० ॥ दृष्ट्वा भवतमनिमेषविलोकनीयं, ना
त्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षु ॥ पीत्वा पय
शिकरद्युति दुग्धसिंधो, क्षारं जल जलनि
रशितु क इच्छेत् ॥ ११ ॥ ये शातरागरुचि
परमाणुभिरुत्व, निर्मापितस्त्रिभुवनैकल
ामभूत ॥ तावत एव खलु तेप्यणव पृथिव्यां,
ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्त्रं
ते सुरनरोरगनेत्रहारि, नि शेषनिर्जितजग
ितयोपमानम् ॥ विंब कलंकमलिन क्व निशा
रस्य, यद्वासरे भवति पाडुपलाशकल्पम् ॥
१३ ॥ संपूर्णमण्डलशशाककलाकलाप, शु
ा गुणास्त्रिभुवन तव लघयति ॥ ये संश्रिता
त्रिजगदीश्वरनाथमेक, कस्तान्निवारयति सच
तो यथेष्टम् ॥१४॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रि
शांगनाभि, नीत मनागपि मनो न विकार
ार्गम् ॥ कल्पातकालमरुता चलिताचलेन,
किं मंदराद्रिशिखर चलित कदाचित् ॥ १५ ॥

निर्धूमवर्त्तिरपवर्जिततैलपूर, कृत्स्नं जगत्त्रयमि
द प्रकटीकरोषि ॥ गम्यो न जातु मरुतां चलि
ताचलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रका
श ॥ १६ ॥ नास्त कदाचिदुपयासि न राहुग
म्य, स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगंति ॥ नां
भोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभाव, सूर्यातिशायिम
हिमासि मुनींद्र ! लोके ॥१७॥ नित्योदयं दलि
तमोहमहांधकारं, गम्यं न राहुवदनस्य न
वारिदानाम् ॥ विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकां
ति, विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिंबम् ॥ १८ ॥
किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा, युष्मन्मु
खेंदुदलितेषु तमस्सु नाथ ॥ निष्पन्नशालिवन
शालिनि जीवलोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जलभा
रनम्रै ॥ १९ ॥ ज्ञान यथा त्वयि विभाति कृ
तावकाश, नैव तथा हरिहरादिषु नायकेषु ॥
तेज स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु
काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं

हरिहरादय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदय त्वयि तो
पमेति ॥ किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्य.,
कश्चिन्मनो हरति नाथ भवातरेपि ॥२१॥ स्त्री
णां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्, नान्या
सुत त्वदुपमं जननी प्रसूता ॥ सर्वा दिशो दध
ति भानि सहस्त्ररश्मिं, प्राच्येव दिग्जनयति
स्फुरदंशुजालम् ॥ २२ ॥ त्वामामनंति मुनय
परम पुमास, मादित्यवर्णममल तमस. परस्ता
त् ॥ त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयति मृत्यु, ना
न्य शिव शिवपदस्य मुनींद्रपथा ॥२३॥ त्वा
मव्यय विभुमचिंत्यमसख्यमाद्य, ब्रह्माणमीश्व
रमनतमनंगकेतुम् ॥ योगीश्वरं विदितयोगमने
कमेक, ज्ञानस्वरूपममल प्रवदति सत ॥२४॥
बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्, त्व शकरो
ऽसि भुवनत्रयशकरत्वात् ॥ धातासि धीर शिव
मार्गविधेर्विधानात्, व्यक्त त्वमेव भगवन् पुरु
षोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥ तुभ्य नमस्त्रिभुवनार्त्तिहरा

य नाथ, तुभ्य नम क्षितितलामलभूषणाय
तुभ्य नमस्त्रिजगत परमेश्वराय, तुभ्यं नमोजि
नभवोदधिशोषणाय ॥ २६ ॥ को विस्मयोऽत्र
यदि नाम गुणैरशेषै, स्त्व संश्रितो निरवकाश
तया मुनीश ॥ दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः,
स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥२७॥ उ
च्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख, माभाति रूपमम
ल भवतो नितातम् ॥ स्पष्टोल्लसत्किरणमस्तत
मोवितान, बिंब रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्त्ति ॥२८॥
सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे, विभ्राजते
तव वपु कनकावदातम् ॥ बिंब वियद्विलसद
शुलतावितानं, तुगोदयाद्रिशिरसीव सहस्त्रर
श्मे ॥ २९ ॥ कुंदावदातचलचामरचारुशोभं,
विभ्राजते तव वपु कलधौतकातम् ॥ उद्यच्छ
शाकशुचिनिर्झरवारिधार, मुच्चैस्तट सुरगिरेरि
व शातकौंभम् ॥ ३० ॥ छत्रत्रय तव विभाति
शशांककात,मुच्चै स्थितं स्था

पम् ॥ मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं, प्रख्यापयन्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥ ३१ ॥ उन्निद्रहेमनवपंकजपुंजकांती, पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाभिरामौ ॥ पादौ पदानि तव यत्र जिनेंद्र धत्त, पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयंति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेंद्र, धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥ यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतांधकारा, तादृक्कुतोग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि ॥ ३३ ॥ श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल, मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥ ऐरावताभमिभमुद्धतमापतंतं, दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥ ३४ ॥ भिन्नेभकुंभगलदुज्ज्वलशोणिताक्त, मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभागः ॥ बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३५ ॥ कल्पांतकालपवनोद्धतवह्निकल्प, दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगम् ॥ विश्वं जिघत्सुमिव संमुखमापतं

त, त्वन्नामकीर्तनजल शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥
रक्तेक्षणं समदकोकिलकण्ठनील, क्रोधोद्धतं फ
णिनमुत्फणमापतन्तम् ॥ आक्रामति क्रमयुगेन
निरस्तशंक, स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य
पुंस ॥ ३७ ॥ वल्गत्तुरंगगजगर्जितभीमनाद,
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम् ॥ उद्यदिव
करमयूखशिखापविद्धं, त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु
भिदामुपैति ॥ ३८ ॥ कुन्ताग्रभिन्नगजशोणित
वारिवाह, वेगावतारतरणातुरयोधभीमे ॥ यु
द्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा, स्त्वत्पादपंकज
वनाश्रयिणो लभन्ते ॥ ३९ ॥ अम्भोनिधौ क्षुभि
तभीषणनक्रचक्र, पाठीनपीठभयदोल्बणवा
डवाग्नौ ॥ रंगत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रा, स्त्रा
सं विहाय भवत स्मरणाद्व्रजंति ॥ ४० ॥
उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्ना, शोच्यां दशा
मुपगताश्च्युतजीविताशा ॥ त्वत्पादपंकजरजो
मृतदिग्धदेहा, मर्त्या भवंति

पा ॥ ४१ ॥ आपादकंठमुरुशृंखलवेष्टितांगा, गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजंघा ॥ त्वन्नाममंत्र मनिशं मनुजा स्मरंतः, सद्यः स्वयं विगतबं धभया भवंति ॥ ४२ ॥ मत्तद्विपेंद्रमृगराजदवा नलाहि, संग्रामवारिधिमहोदरबंधनोत्थम् ॥ त स्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्रजं त व जिनेंद्र गुणैर्निबद्धां, भक्त्या मया रुचिरवर्ण विचित्रपुष्पाम् ॥ धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं, तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥ ॥ इति भक्तामरस्तोत्र संपूर्णम् ॥

॥ अथ बृहच्छांतिर्लिख्यते ॥

॥ भो भो भव्याः शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्व मेतत्, ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हता भक्तिभा जः ॥ तेषां शांतिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभा वा, दारोग्यश्रीधृतिमतिकरी क्लेशविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥ भो भो भव्यलोका इह हि भरतैरावत

विदेहसम्भवाना, समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासन प्रकपानन्तर अवधिना विज्ञाय सौधर्माधिप ति सुघोपाघएटाचालनानन्तर सकलसुरा सुरेंद्रे सह समागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं ग्ह्रीत्वा, गत्वा कनकाद्रिशृंगे, विहितजन्माभि षेक , शान्तिमुद्घोषयति, ततोऽहकृतानुकारमि ति कृत्वा, महाजनो येन गतस्स पंथा ॥ इति भव्यजनै सह समागत्य, स्नात्रपीठे स्नात्रं विधा य, शान्तिमुद्घोपयामि ॥ तत्पूजायात्रास्नात्रादि महोत्सवानन्तरं ॥ इति कृत्वा कर्णं दत्वा निश म्यता स्वाहा ॥ ॐ पुण्याह २, प्रीयतां २, भ गवन्तोऽर्हन्त , सर्वज्ञा सर्वदर्शिन ॥ त्रैलोक्य नाथा , त्रैलोक्यमहिता त्रैलोक्यपूज्या त्रैलो क्येश्वरा ,त्रैलोक्योद्योतकरा ॥ ॐ श्रीकेवलज्ञा नी १, निर्वाणी २, सागर ३, महायश ४, वि मल ५, सर्वानुभूति ६, श्रीधर ७, दत्त ८, दामो दर ९, सुतेजा १०, स्वामी ११, मनिसुव्रत १२,

सुमति १३, शिवगति १४, अस्ताग १५, नमीश्वर १६, अनिल १७, यशोधर १८, कृतार्थ १९, जिनेश्वर २०, शुद्धमति २१, शिवकर २२, स्यन्दन २३, सम्प्रति २४, एते अतीत॰

॥ चतुर्विंशातितिर्थंकरा॰ ॥

॥ ॐ श्रीऋषभ १, अजित २, संभव ३, अभिनंदन ४, सुमति ५, पद्मप्रभ ६, सुपार्श्व ७, चंद्रप्रभ ८, सुविधि ९, शीतल १०, श्रेयांस ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५, शान्ति १६, कुंथु १७, अर १८, मल्लि १९, मुनिसुव्रत २०, नमि २१, नेमि २२, पार्श्व २३, वर्द्धमान २४, एते वर्त्तमानजिना॰

- ॥ ॐ श्रीपद्मनाभ १, सुरदेव २, सुपार्श्व ३, स्वयंप्रभ ४, सर्वानुभूति ५, देवश्रुत ६, उदय ७, पेढाल ८, पोट्टिल ९, शतकीर्त्ति १०, सुव्रत ११, अमम १२, निष्कषाय १३, निष्पुलाक १४, निर्मम १५, चित्रगुप्ति १६, समाधि

१७, सवर १८, यशोधर १९, विजय २०, मल्लि
२१, देव २२, अनन्तवीर्य २३, भद्रकर २४
॥ एते भावितीर्थकरा जिना ॥ शान्ता·
शान्तिकरा भवतु मुनयो मुनिप्रवरा, रिपु
विजयदुर्भिक्षकान्तारेषु दुर्गमार्ग्गेषु रक्षंतु
वो नित्य ॥ ॐ श्रीनाभि १, जितशत्रु
२, जितारि ३, सवर ४, मेघ ५, धर ६, प्र
तिष्ठ ७, महसेन नरेश्वर ८, सुग्रीव ९, दृढरथ
१०, विष्णु ११, वासुपूज्य १२, कृतवर्म १३,
सिंहसेन १४, भानु १५, विश्वसेन १६, सूर
१७, सुदर्शन १८, कुंभ १९, सुमित्र २०, विज
य २१, समुद्रविजय २२, अश्वसेन२३, सिद्धा
र्थ २४॥इति वर्त्तमान चतुर्विंशतिजिनजनकाः ॥
॥ ॐ श्रीमरुदेवा १, विजया २, सेना ३,
सिद्धार्था ४, सुमगला ५, सुसीमा ६, पृथि
वीमाता ७, लक्ष्मणा ८, रामा ९, नंदा १०,
विष्णु ११, जया १२, श्यामा

ा, सुव्रता १५, अचिरा १६, श्री १७, देवी
ा, प्रभावती १९, पद्मा २०, वप्रा २१, शि
२२, वामा२३, त्रिशला २४॥ इति वर्त्तमान
ानजनन्य ॥

॥ ॐ गोमुख १, महायक्ष २, त्रिमुख ३,
क्षनायक ४, तुबुरु ५, कुसुम ६, मातग ७,
ाजय ८, अजित ९, ब्रह्मा १०, यक्षराज
११, कुमार १२, षण्मुख १३, पाताल १४, कि
ार १५, गरुड १६, गधर्व १७, यक्षराज
१८, कुबेर १९, वरुण २०, भृकुटि २१, गोमे
ध २२, पार्श्व २३, ब्रह्मशाति २४ ॥ इति वर्त्त
मानजिनयक्षा ॥

॥ ॐ चक्रेश्वरी १, अजितबला २, दुरिता
रि ३, काली ४, महाकाली ५, श्यामा ६,
शाता ७, भृकुटि ८,सुतारका ९, अशोका १०,
मानवी ११, चण्डा १२, विदिता १३, अकुशा
१४ कन्दर्पा १५,निर्वाणी१६, बला१७, धारिणी

१८, धरणप्रिया १९, नरदत्ता २०, गाधारी २१, अंबिका२२, पद्मावती२३, सिद्धायिका २४. एते वर्त्तमानचतुर्विंशति तीर्थंकरशासनदेव्य ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं धृति, कीर्त्ति, काति, बुद्धि, लक्ष्मी, मेधा, विद्या, साधन, प्रवेशनिवेशनेषु, सुगृहीतनामानो जयति ते जिनेंद्रा ॥ ॐ रोहिणी १, प्रज्ञप्ति २, वज्रशृखला ३, वज्रांकुशा ४, चक्रेश्वरी ५, पुरुषदत्ता ६, काली ७, महाकाली ८, गौरी ९, गाधारी १०, सर्वास्त्रमहाज्वाला ११, मानवी १२, वैरोट्या १३, अछुप्ता १४, मानसी १५, महामानसी १६, एता षोडश विद्यादेव्यो रक्षंतु मे स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमणसघस्य शांतिर्भवतु, ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॐ ग्रहाश्चन्द्रसूर्यांगारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतुसहिता सलोकपाला सोमयमवरुणकुबेरवासवादित्यस्कन्दविनायक ये

ड्यस्ते सर्वे प्रीयतां ॥ २ ॥ अक्षीणको
ष्ठागारा नरपतयश्च भवतु स्वाहा ॥ ॐ
त्रभ्रातृकलत्रसुहृत्स्वजनसवंधिवंधुवर्गस
नित्य चामोदप्रमोदकारिणो भवतु ॥ अ
थ भूमंरूले आयतननिवासिना साधुसा
श्रावकश्राविकाणां, रोगोपसर्गव्याधिड ख
नस्योपशमनाय शान्तिर्भवतु ॥ ॐ तुष्टि
ऋद्धिवृद्धिमाङ्गल्योत्सवा भवतु ॥ सदा
र्भूतानि डुरितानि पापानि शाम्यंतु श
पराङ्मुखा भवंतु स्वाहा ॥ श्रीमते शा
नाथाय, नम शान्तिविधायिने ॥ त्रैलोक्य
मराधीश, मुकुटाभ्यर्चिताङ्घ्रये ॥ १ ॥ शा
शान्तिकर श्रीमान्, शान्ति दिशतु मे
॥ शान्तिरेव सदा तेषा, येषा शातिर्गृहे
॥२॥ ॐ उन्मृष्टरिष्टडुष्ट, ग्रहगतिड स्वप्नड
मित्तादि॥ संपादितहितसंपत्, नामग्रहणं ज
ते शांते ॥ ३ ॥ श्रीसगपौरजनपद, राजाधि

पराजसंनिवेशानाम्॥गोष्ठीपुरमुख्याना, व्याह
रणैर्व्याहरेच्छातिम् ॥४॥ श्रीश्रमणसंघस्य शांति
र्भवतु, श्रीपौरलोकस्य शातिर्भवतु ॥ श्रीजन
पदानां शातिर्भवतु, श्रीराजाधिपाना शांतिर्भ
वतु, श्रीराजसनिवेशाना शांतिर्भवतु, श्रीगो
ष्ठिकाना शातिर्भवतु, ॐ स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ
ह्रीँ श्रीँ पार्श्वनाथाय स्वाहा ॥ एषा शाति प्र
तिष्ठायात्रास्नात्रावसानेषु, शातिकलशं ग्र
हीत्वा कुकुमचदनकर्पूरागरुधूपवासकुसुमां
जलिसमेत, स्नात्रपठि श्रीसघसमेत, शुचि
शुचिवपु पुष्पवस्त्रचंदनाभरणालंकृत, चंदन
तिलकं विधाय पुष्पमाला कठे कृत्वा, शातिमु
द्घोषयित्वा शातिपानीयं मस्तके दातव्यमि
ति ॥ नृत्यति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजति गाय
ति च मगलानि ॥ स्तोत्राणि गोत्राणि पठ
ति मत्रान्, कल्याणभाजोहि जिनाभिषेके
॥ २ ॥ अहं तित्थयरमाया शवा तुम्ह

नयरनिवासिनी ॥ अम्ह शिवं तुम्ह शिवं, अ
सुहोवसमं शिव जवतु स्वाहा ॥ १ ॥ शिवम
स्तु सर्वजगत , परहितनिरता जवंतु जूतग
णा ॥ दोषा प्रयातु नाशं, सर्वत्र सुखी जवतु
लोक ॥ २ ॥ उपसर्गा क्षय याति, छिद्यते वि
घ्नवल्लय ॥ मन प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिने
श्वरे ॥ ३ ॥ इति श्रीवृद्धशाति समाप्ता ॥

॥ अथ जिनपंजरस्तोत्र लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्ह अर्हद्भ्यो नमोनम , ॐ ह्रीं
श्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमोनम ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्ह
आचार्य्येभ्यो नमोनम ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उ
पाध्यायेभ्यो नमोनम ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीगो
तमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुभ्यो नमोनम ॥ १ ॥
एप पच नमस्कार , सर्व पापक्षयंकर ॥ मग
लाना च सर्वेपा, प्रथमं जवति मंगलं ॥२॥ ॐ
ह्रीं श्रीं जयविजये, अर्हं परमात्मने नम ॥ क
मलप्रजसूरींद्रो, जापते जिनपजरम् ॥ ३ ॥ ए

पराजसंनिवेशानाम्॥ गोठीपुरमुख्यानां, व्याह
रणैर्व्याहरेच्छांतिम् ॥४॥ श्रीश्रमणसंघस्य शांति
र्भवतु, श्रीपौरलोकस्य शांतिर्भवतु ॥ श्रीजन
पदाना शांतिर्भवतु, श्रीराजाधिपाना शांतिर्भ
वतु, श्रीराजसनिवेशाना शांतिर्भवतु, श्रीगो
ष्ठिकानां शांतिर्भवतु, ॐ स्वाहा ॥ ? ॥ ॐ
ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय स्वाहा ॥ एषा शांति प्र
तिष्ठायात्रास्नात्रावसानेषु, शांतिकलशं ग्र
हीत्वा कुंकुमचदनकर्पूरागरुधूपवासकुसुमां
जलिसमेत, स्नात्रपीठे श्रीसंघसमेत, शुचि
शुचिवपु पुष्पवस्त्रचंदनाभरणालंकृत, चंदन
तिलकं विधाय पुष्पमाला कंठे कृत्वा, शांतिमु
द्घोषयित्वा शांतिपानीय मस्तके दातव्यमि
ति ॥ नृत्यति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजति गा
ति च मंगलानि ॥ स्तोत्राणि गोत्राणि पठं
ति मंत्रान्, कल्याणभाजोहि जिनाभिषेके
॥ २ ॥ अहं तित्थयरमाया शिवा देवी, तुम्ह

व कर्णयुगल, नासिका चाभिनंदनः ॥१२॥ ड
ष्ठौश्रीसुमती रक्षेत्, दतान्पद्मप्रभो विभु ॥ जि
ह्वा सुपार्श्वदेवीयं, तालु चंद्रप्रभो विभु ॥१३॥
कंठं श्रीसुविधीरक्षेत, हृदयं श्रीसुशीतलः ॥ श्रे
यांसो बाहुयुगलं, वासुपूज्य करद्वय ॥ १४ ॥
अंगुलीर्विमलो रक्षे,दनंतोऽसौ स्तनावपि ॥ सु
धर्मोप्युदरास्थीनि, श्रीशांतिर्नाभिमंडलं ॥१५॥
श्रीकुंथुर्गुह्यकं रक्षे, दरो रोमकटीतट॥ मल्लिरूरू
पृष्ठिवंशं, जंघे च मुनिसुव्रत ॥१६॥ पादांगुली
र्नमी रक्षेत्, श्रीनेमिश्चरणद्वयं॥ श्रीपार्श्वनाथ
सर्वांग, वर्द्धमानश्चिदात्मक ॥ १७ ॥ पृथिवी
जलतेजस्क, वाय्वाकाशमयं जगत् ॥ रक्षेदश
षपापेभ्यो, वीतरागो निरंजनः ॥ १८ ॥ राजद्वा
रे श्मशाने वा, संग्रामे शत्रुसंकटे ॥ व्याघ्रचौरा
ग्निसर्पादि, भूतप्रेतभयाश्रिते ॥ १९ ॥ अका
लमरणे प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते॥ अपुत्रत्वे
महादोषे, मूर्खत्वे रोगपीडिते ॥ २० ॥ डाकिनी

कभक्तोपवासेन, त्रिकाल य पठेदिदं ॥ मनोभि
लषित सर्वं, फल स लभते ध्रुवं ॥ ४ ॥ भूश
य्या ब्रह्मचर्येण, क्रोधलोभविवर्जित ॥ देवा
ग्रे पवित्रात्मा, षण्मासैर्लभते फल ॥ ५ ॥
र्हंतं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षुर्ललाटके ॥
चार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये,उपाध्याय तु घ्राणके ॥ ६ ॥
साधुवृन्दं मुखस्याग्रे, मन शुद्धं विधाय च ॥ सू
र्यचन्द्रनिरोधेन, सुधी सर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥ द
क्षिणे मदनद्वेषी, वामपार्श्वे स्थितोजिन ॥
गसन्धिषु सर्वज्ञ, परमेष्ठी शिवंकर ॥८ ॥ पूर्वा
शा श्रीजिनो रक्षे, दाग्नेयीं विजितेंद्रिय ॥ द
क्षिणाशा पर ब्रह्म, नैर्ऋतिं च त्रिकालवित् ॥ ९ ॥
पश्चिमाशा जगन्नाथो, वायवीं परमेश्वर ॥ उत्त
रा तीर्थकृत् सर्वा, मीशानीं च निरजन ॥१०॥
पाताल भगवानर्हं, आकाश पुरुषोत्तम ॥
णीप्रमुखा देव्यो, रक्षंतु सकल कुलं ॥ ११ ॥
ऋषभो मस्तक रक्षे, दजितोपि विलोचने॥ सम

व कर्णयुगल, नासिका चाभिनंदन ॥१२॥ उ
ष्ठौश्रीसुमती रक्षेत, दंतान्पद्मप्रभो विभु॥ जि
व्हा सुपार्श्वदेवीयं, तालु चंद्रप्रभो विभु ॥१३॥
कंठं श्रीसुविधीरक्षेत, हृदयं श्रीसुशीतल॥ श्रे
यासो वाहुयुगलं, वासुपूज्य करद्वय ॥ १४ ॥
अंगुलीर्विमलो रक्षे,दनंतोऽसौ स्तनावपि ॥ सु
धर्मोप्युदरास्थीनि, श्रीशांतिर्नाभिमंडलं ॥१५॥
श्रीकुंथुर्गुह्यक रक्षे, दरो रोमकटीतट॥ मल्लिरूरू
पृष्ठिवंश, जंघे च मुनिसुव्रत ॥१६॥ पादांगुली
र्नमी रक्षेत, श्रीनेमिश्चरणद्वयं॥श्रीपार्श्वनाथ
सर्वांगं, वर्द्धमानश्चिदात्मक ॥ १७ ॥ पृथिवी
जलतेजस्क, वाय्वाकाशमय जगत् ॥ रक्षेदश
षपापेभ्यो, वीतरागो निरंजनः ॥ १८ ॥ राजद्वा
रे श्मशाने वा, संग्रामे शत्रुसंकटे॥ व्याघ्रचौरा
ग्निसर्पादि, भूतप्रेतभयाश्रिते ॥ १९ ॥ अका
लमरणे प्राप्ते,दारिद्र्यापत्समाश्रिते॥ अपुत्रत्वे
महादोषे, मूर्खत्वे रोगपीडिते ॥ २० ॥ शाकिनी

शाकिनीग्रस्ते, महाग्रहगणार्दिते॥ नधुत्तारेऽ
वैपम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥२१॥ प्रातरे
समुत्थाय, य स्मरेज्जिनपजर ॥ तस्य किंचि
य नास्ति, लन्नते सुखसपद ॥ २२ ॥ जिनप
जरनामेदं, य स्मरंत्यनुवासर ॥ कमलप्रन
जेंद्र, श्रियस लन्नते नर ॥२३॥ प्रातः समुत्था
पठेत् कृतज्ञो, य स्तोत्रमेतज्जिनपंजराख्य ॥ स
सादयेत्स कमलप्रन्नाख्या, लक्ष्मीं मनोवांछि
पूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरुद्रपल्लीयवरेण्यगछे, देव
प्रन्नाचार्य्यपदाब्जहंस ॥ वादींद्रचूडामणिरेष
जैनो, जीयाद् गुरु श्रीकमलप्रन्नाख्य ॥२५॥
इति श्रीजिनपजरस्तोत्र सपूर्णम् ॥

॥ अथ श्री श्रावक करणीनी सज्झाय ॥

॥ चोपाई ॥ श्रावक तु ऊठे परन्नात, चार
घडी ले पाछली रात ॥ मनमा समरे श्री नव
कार, जेम पामे नव सायर पार ॥ १ ॥ कवण
देव कवण गुरुधर्म, कवण अमारु छे कुलकर्म,

कवण अमारो छे व्यवसाय, एवु चिंतवजे मन
माय ॥ २ ॥ सामायिक लेजे मन शुद्ध, धर्मनी
हैडे धरजे बुद्ध ॥ पडिक्कमणु करे रयणी तणुं, पा
तक आलोई आपणुं ॥ ३ ॥ कायाशक्तें करे प
च्चरकाण, सूधि पाले जिननी आण ॥ नणजे
गणजे स्तवन सझाय, जिणहूंती निस्तारो
थाय ॥ ४ ॥ चितारे नित्य चउदे नीम, पाले
दया जीवतां सीम ॥ देहरे जाइ जुहारे देव,
द्रव्यनावथी करजे सेव ॥ ५ ॥ पोषाले गुरु
वंदन जाय, सुणो वखाण सदा चित्त लाय ॥
निर्दूपण सूजंतो आहार, साधुने देजे सुविचार
॥६॥ साहम्मिवत्सल करजे घणां,सगपण महो
टा साहम्मीतणां ॥ ड खीया हीणा दीना देखि,
करजे तास दया सुविशेष ॥ ७ ॥ घर अनुसा
रें देजे दान, महोटाशु म करे अनिमान ॥
गुरुने मुखे लेजे आखडी, धर्म न मूकीश एके
घडी ॥ ८ ॥ वारु शुद्ध करे व्यापार, ढंग अ

धिकानो परिहार ॥ म भरिश केनी कूडी साख कूडा जनशुं कथन म भाख ॥ ए ॥ अनंतकाय कहीये वत्रीश, अभक्ष्य बाविशे विश्वावीश ॥ ते भक्षण नवि कीजें किमे, काचा कवला फल मत जिमे ॥१०॥ रात्रिभोजनना बहु दोष जाणीने करजे संतोष ॥ साजी साबू लोह ने गुली, मधु धावडी मत वेचो वली ॥ ११ ॥ वली म करावे रगण पास, दूषण घणा कह्यां छे तास ॥ पाणी गलजे बे बे वार, अणगल पीता दोष अपार ॥ १२ ॥ जीवाणीनां करजे यत्न, पातक छंडी करजे पुण्य ॥ गणा इंधण चूले जोय, वावरजे जिम पाप न होय ॥१३॥ घृतनी परें वावरजे नीर, अणगल नीर म धो इशा चीर ॥ ब्रह्मव्रत सूधुं पालजे, अतिचार सघला टालजे ॥ १४ ॥ कह्या पन्नरे कर्मादान, पापतणी परहरजे खाण ॥ किशुं म लेजे अनरथ दंड, मिथ्या मेल म भरजे पिंड ॥ १५ ॥

समकित शुद्ध हैडे राखजे, बोल विचारीने नांखजे ॥ पाच तिथि म करो आरंभ, पालो शीयल तजो मन दंभ ॥ १६ ॥ तेल तक्र घृत दूध ने दहिं,ऊघाडा मत मेलो सही ॥ उत्तम ठामें खरचो वित्त, पर उपगार करो शुभचित्त ॥ ॥ १७ ॥ दिवस चरिम करजे चोविहार, चारे आहार तणों परिहार । दिवस तणां आलोए पाप, जिम भांजे सघला संताप ॥ १८ ॥ सध्यायें आवश्यक साचवे, जिनवर चरण शरण भव भवे ॥ चारे शरण करी दृढ होय,सागारी अणसण ले सोय ॥ १९ ॥ करे मनोरथ मन एहवा, तीरथ शत्रुंजे जायवा ॥ समेतशिखर आबू गिरनार, भेटीश हुं धन धन अवतार ॥ २० ॥ श्रावकनी करणी छे एह, एहथी थाये भवनो छेह ॥ आठे कर्म पडे पातला, पाप तणा छूटे आमला ॥ २१ ॥ वारु लहियें अमर विमान, अनुक्रमे पामे शिवपुर धाम ॥ कहे

धिकानो परिहार ॥ म नरिशा केनी कूडी साख, कूडा जनशु कथन म नांख ॥ ए ॥ अनंतकाय कहीये बत्रीश, अभक्ष्य बाविशे विश्वावीश ॥ ते नक्षण नवि कीजे किमे, काचा कवला फल मत जिमे ॥१०॥ रात्रिनोजनना बहु दोष, जाणीने करजे सतोष ॥ साजी साबू लोह ने गुली, मधु धावडी मत वेचो वली ॥ ११ ॥ वली म करावे रंगण पास, दूषण घणा कह्यां ने तास ॥ पाणी गलजे बे बे वार, अणगल पीता दोष अपार ॥ १२ ॥ जीवाणीना करजे यत्न, पातक छंडी करजे पुण्य ॥ गणा ईंधण चूले जोय, वावरजे जिम पाप न होय ॥१३॥ घृतनी परें वावरजे नीर, अणगल नीर म धो इश चीर ॥ ब्रह्मव्रत सूधुं पालजे, अतिचार सघला टालजे ॥ १४ ॥ कह्या पन्नरे कर्मादान, पापतणी परहरजे खाण ॥ किशुं म लेजे अनरथ्य दंड, मिथ्या मेल म नरजे पिंम ॥ १५ ॥

गुरु कहे गएह, पीछे इछ कही खमासमण देई उभो थई, आधो शरीर नमावी मुखें मुहपत्ती देई, मधुरस्वरे तीन नवकार गुणी कहे इछकार भगवन् पसाउ करी, पोसह दंमक उच्चरावो ? गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीछे करेमि भते पोसह ॥ इहासे ले के अप्पाणं वोसिरामि॥ तक कहे अब पोसहका पच्चरकाण लीये, सो लिखते हैं

॥ अथ पोसहका पच्चरकाण प्रारंभ ॥

करेमि भं ते पोसहं, आहार पोसहं, देसउ सवउ वा, सरीरसक्कार पोसहं, सवउ बम्भचेर पोसहं, सवउ अवावार पोसहं, सवउ चउविहे पोसहे, सावज्जं जोगं पच्चरकामि, जावदिवस अहोरत्तिं वा पज्जुवासामि, डुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स भं ते पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाण वोसिरामि

जिनदर्प घणे ससनेह, करणी दुःखहरणी रे एह ॥ ११ ॥ इति श्री श्रावकनी करणीनी स०॥

॥ अथ अठपुहरी पोसह विधि लिख्यते ॥

॥ रात्रिनी पाछली घडिये निद्रा दूर करी ने, पंचपरमेष्ठि स्मरण करी, गृहचिंता परिहरी, पर्व दिवसथकी प्रथम दिवसें पडिलेही राख्या, जे पोसहना उपगरण, ते लेई, पोसहशालाये थापनाचार्य समीपे, अथवा गुरुनो संयोग हुवे तो गुरुनी पासें आवी, भूमि प्रमार्जी एक खमासमण देई, इरियावहि पडिकमि पछें खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पोसह मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेह इछं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे. पछि उभो थई, खमासमण देई इछाका० ॥ स० ॥ भ० ॥ पोसह संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह, पछि इछं कही, खमासमण देई इछाका० ॥ सं० ॥ भ

छे, तेमाटें इहां सामायिक दंमक उच्चर्यां पीछें इरियावही नही पडिक्कमीजें ॥ पीछे चैत्यवंदन, जयवीयराय सूधी करी कुसुमिण डुस्समिण काउस्सग्ग करे, पीछें पडिक्कमणवेलासीम सिझाय ध्यान करे पीछे पूर्वोक्त रीतें पडिक्कमण करे, पण इतरो विशेष के चारे थुईयें देव वांदी पीछे खमासमण देई कहे ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज०॥ बहुवेलं संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह पीछें इछ कही, खमासमण देई कहे इछाका० ॥सं०॥ज०॥ बहुवेलं करुं ? गुरु कहे, करेह॥ पीछें इछं कही, तीन खमासमणें श्री आचार्यजी मिश्र १, श्रीउपाध्यायजी मिश्र २, त्रीजे सर्वसाधु वांदी, कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं इत्यादि नमस्कार जणे,जो पडिलेहणवेला नहिं हुवे, तो सीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदनादि करी, सिझाय करे हवे पडिलेहण वेला पडिलेहण

॥ ए पाठ तीन वार गुरुवचन अनुजाण करतो उच्चरे ॥ पछि एक खमासमणें ॥ इच्छाका स० ॥ भ० ॥ सामायिक मुहपत्ती, पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह. बीजी खमासमण दे मुहपत्ती पडिलेहे. पछिं दोय खमासमणें सामायिक संदिस्साउं ? सामायिक ठाउं ? कही, खमासमण देई अर्धावनतगात्र ऊभो थको तीन नवकार, पुनी तीन करेमि भंते उच्चरी दोय खमासमणें वेसणो संदिस्साउं ? वेसणो ठाउं ! कही, पछिं दोय खमासमणें सिझाय संदिस्साउं ? सिझाय करुं ? कही खमासमण देई ऊभो थको, आठ नवकारनो सिंघाय करे शीतादि परिसहे दोय खमासमणें, पागरणुं संदिस्साउ ? पागरणु पडिग्घाउं ? कहे ए सर्व सामायिकविधि पूर्वे कह्यो छे तिमहीज करवो, पण इतनो विशेष छे पहिल

ठे, तेमाटें इहां सामायिक दंमक उच्चयां पीठें इरियावही नही पडिक्कमीजें ॥ पीठे चैत्यवंदन, जयवीयराय सूधी करी कुसुमिण डुस्समिण काउस्सग्ग करे, पीठें पडिक्कमणवेलासीम सिझाय ध्यान करे पीठें पूर्वोक्त रीतें पडिक्कमण करे, पण इतरो विशेष के चारे थुईयें देव वांद्या पीठे खमासमण देई कहे ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज०॥ बहुवेलं संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह पीठें इछ कही, खमासमण देई कहे इछाका० ॥सं०॥ज०॥ बहुवेलं करुं ? गुरु कहे, करेह॥ पीठें इछं कही, तीन खमासमणें श्री आचार्यजी मिश्र १, श्रीउपाध्यायजी मिश्र २, त्रीजे सर्वसाधु वांदी, कम्मन्नूमिहिं कम्मन्नूमिहिं इत्यादि नमस्कार नणे,जो पडिलेहणवेला नहिं हुवे, तो सीमधरस्वामीनुं चैत्यवंदनादि करी, सिझाय करे हवे पडिलेहण वेला पडिलेहण

॥ ए पाठ तीन वार गुरुवचन अनुजाण
करतो उच्चरे ॥ पछि एक खमासमणे॥ इच्छा
स० ॥ भ० ॥ सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं ?
गुरु कहे, पडिलेहेह बीजी खमासमण दे
मुहपत्ती पडिलेहे पछि दोय खमासमणे सामा
यिक संदिस्साउं ? सामायिक ठाउं ? कही,
खमासमण देई अर्धावनतगात्र ऊभो थको
तीन नवकार, गुनी तीन करेमि भंते उच्चरी दोय
खमासमणें बेसणो संदिस्साउं ? बेसणो ठाउं ?
कही, पछिं दोय खमासमणें सिज्झाय संदिस्सा
उं ? सिज्झाय करुं ? कही खमासमण देई ऊभो
थको, आठ नवकारनो सिज्झाय करे शीतादि
परिसहें दोय खमासमणें, पागरणुं संदिस्सा
उं ? पागरणु पडिग्घाउं ? कहे ए सर्व सामायि
कविधि पूर्वे कह्यो छे तिमहीज करवो, पण इ
तनो विशेष छे पडिक्क

छे, तेमाटें इहां सामायिक दंमक उच्चर्यां पीछें इरियावही नही पडिक्कमीजें ॥ पीछें चैत्यवंदन, जयवीयराय सूधी करी कुसुमिण डुस्समिण काउस्सग्ग करे, पीछें पडिक्कमणवेलासीम सिज्झाय ध्यान करे पीछे पूर्वोक्त रीतें पडिक्कमण करे, पण इतरो विशेष के चारे थुईयें देव वांद्या पीछे खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ न०॥ बहुवेलं संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह पीछें इच्छ कही, खमासमण देई कहे इच्छाका० ॥सं०॥न०॥ बहुवेलं करुं ? गुरु कहे, करेह॥ पीछें इच्छं कही, तीन खमासमणें श्री आचार्यजी मिश्र १, श्रीउपाध्यायजी मिश्र २, त्रीजे सर्वसाधु वादी, कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं इत्यादि नमस्कार भणे,जो पडिलेहणवेला नहिं हुवे, तो सीमधरस्वामीनुं चैत्यवंदनादि करी, सिज्झाय करे हवे पडिलेहण वेला पडिलेहण

॥ ए पाठ तीन वार गुरुवचन अनुजाणन करतो उच्चरे ॥ पछि एक खमासमणो ॥ इच्छाका० स० ॥ भ० ॥ सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं ! गुरु कहे, पडिलेहेह बीजी खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे पछि दोय खमासमणें सामायिक संदिस्साउं ? सामायिक ठाउं ? कही, खमासमण देई अर्धावनतगात्र ऊभो थको तीन नवकार, पुनी तीन करेमि भंते उच्चरी दोय खमासमणें बेसणो संदिस्साउं ? बेसणो ठाउं ! कही, पछि दोय खमासमणें सिझाय संदिस्साउं ? सिझाय करुं ? कही खमासमण देई ऊभो थको, आठ नवकारनो सिचाय करे शीतादि परिसहे दोय खमासमणें, पांगरणुं संदिस्साउं ? पागरणु पडिग्घाउ ? कहे ए सर्व सामायिकविधि पूर्वे कह्यो छे तिमहीज करवो, पण ए तनो विशेष छे पछिवाडे

छे, तेमाटें इहां सामायिक दंमक कह्यां पीछे इरियावही नही पडिक्कमीजें ॥ पीछे चैत्यवंदन, जयवीयराय सूधी करी कुसुमिण डुस्समिण काउस्सग्ग करे, पीछें पडिक्कमणवेलासीम सिज्झाय ध्यान करे पीछें पूर्वोक्त रीतें पडिक्कमण करे, पण इतरो विशेष के चारे थुईयें देव वांद्या पीछें खमासमण देई कहे ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज०॥ बहुवेलं संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह पीछें इछ कही, खमासमण देई कहे इछाका० ॥सं०॥ज०॥ बहुवेलं करुं ? गुरु कहे, करेह॥ पीछें इछं कही, तीन खमासमणें श्री आचार्यजी मिश्र १, श्रीउपाध्यायजी मिश्र २, त्रीजे सर्वसाधु वांदी, कम्मजूमिहिं कम्मजूमिहिं इत्यादि नमस्कार जणे,जो पडिलेहणवेला नहिं हुवे, तो सीमधरस्वामीनुं चैत्यवंदनादि करी, सिज्झाय करे हवे पडिलेहण वेला पडिलेहण

॥ ए पाठ तीन वार गुरुवचन अनुजाषण करतो उच्चरे ॥ पछि एक खमासमणे॥ इच्छाकारेण स० ॥ ज० ॥ सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं ! गुरु कहे, पडिलेहेह बीजी खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे पछि दोय खमासमणें सामायिक संदिस्साउ ? सामायिक ठाउं ? कही, खमासमण देई अर्धावनतगात्र ऊनो थको तीन नवकार, गुनी तीन करेमि जंते उच्चरी दोय खमासमणें बेसणो संदिस्साउ? बेसणो ठाउं ! कही, पछिं दोय खमासमणें सिझाय संदिस्साउं ? सिझाय करुं ? कहीखमासमण देई ऊनो थको, आठ नवकारनो सिचाय करे शीतादि परिसहें दोय खमासमणें, पागरणु संदिस्साउं ? पागरणु पडिग्घाउ ? कहे ए सर्व सामायिकविधि पूर्वे कह्यो छे तिमहीज करवो, पण

छे, तेमाटें इहां सामायिक दंमक कह्यां पीछें इरियावही नही पडिक्कमीजें ॥ पीछे चैत्यवंदन, जयवीयराय सूधी करी कुसुमिण डुस्समिण काउस्सग्ग करे, पीछें पडिक्कमणवेलासीम सिझाय ध्यान करे पीछे पूर्वोक्त रीतें पडिक्कमण करे, पण इतरो विशेष के चारे थुईयें देव वांद्या पीछें खमासमण देई कहे ॥ इडाका० ॥ सं० ॥ ज०॥ बहुवेलं संदिस्साउ ? गुरु कहे, संदिस्सावेह पीछे इछं कही, खमासमण देई कहे इडाका० ॥सं०॥ज०॥ बहुवेलं करुं ? गुरु कहे, करेह॥ पीछे इछं कही, तीन खमासमणें श्री आचार्यजी मिश्र १, श्रीउपाध्यायजी मिश्र २, त्रीजे सर्वसाधु वांदी, कम्मनूमिहिं कम्मनूमिहिं इत्यादि नमस्कार जणे,जो पडिलेहणवेला नहिं हुवे, तो सीमधरस्वामीनुं चैत्यवंदनादि करी, सिझाय करे हवे पडिलेहण वेला पडिलेहण

॥ ए पाठ तीन वार गुरुवचन अनुभाष करतो उच्चरे ॥ पछि एक खमासमणे॥ इच्छा स० ॥ भ० ॥ सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं ! गुरु कहे, पडिलेहेह. वीजी खमासमण दे मुहपत्ती पडिलेहे. पछि दोय खमासमणे सामायिक संदिस्साउं ? सामायिक ठाउं ? कही, खमासमण देई अर्धावनतगात्र ऊभो थको तीन नवकार, पछी तीन करेमि भंते उच्चरी दोय खमासमणें बेसणे संदिस्साउं? बेसणे ठाउं ! कही, पछि दोय खमासमणें सिझाय संदिस्साउं ? सिझाय करुं ? कही खमासमण देई ऊभो थको, आठ नवकारनो सिझाय करे शीतादि परिसहे दोय खमासमणें, पागरणुं संदिस्साउ ? पागरणु पडिग्घाउं ? कहे ए सर्व कविधि पूर्वे कह्यो छे तिमहीज करवो, पण तनो विशेष छे पहिलां

॥ अथ २४ थन्डिला पडिलेहण पाठ लिख्यते ॥

॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अण हियासे ॥ १ ॥ आगाढे मझे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥२॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ ३ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ ४ ॥ आगाढे मझे पासवणे अ णहियासे ॥५॥ आगाढे दूरे पासवणे अणहि यासे ॥ ६ ॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥७॥ आगाढे मझे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ८ ॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥९॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अ हियासे ॥१०॥ आगाढे मझे पासवणे अहिया से ॥११॥ आगाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ ॥१२॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अण हियासे ॥ १३ ॥ अणागाढे मझे उच्चारे पासव णे अणहियासे ॥ १४ ॥ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥१५॥ अणागाढे आस

करे,ते विधिपूर्वं आग्रयना ४७ पृष्ठमां लिख्योछे तो पण संक्षेपें फेर लखीयें छैयें. दोय खमासमणें, इच्छा का०॥स०॥न०॥ पडिलेहण करुं? कही मुहप त्ती पडिलेहे पीछे दोय खमासमणे अंग पडिले हण संदिस्साउं? अंग पडिलेहण करुं? कहे. पीछें गुरुवचने इच्छ कही धोतियो कणदोरो पडि लेही वस्त्र पहेरी, खमासमण देई इच्छकार नगवन्! पसाउ करी, पडिलेहण करावो जी॥ एम कही, स्थापनाचार्य पडिलेही स्थापे, अ ने जो गुर्वादिक स्थापनाचार्य पडिलेहे, तो प ण खमासमण देई उक्त रीतें आग्या मागे पी छें खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ स० ॥ न० ॥ उपधि मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह. पीछें इच्छं कही, मुहपत्ती पडिलेही दोय खमा समणे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ उपधि हण संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह पडिलेहण करु ? गुरु कहे,

होवे, ते दोनुं तरफ पडिलेहे ॥ इति १४ थगि
ला पडिलेहणविधि सपूर्ण ॥

पीछें इछं कही, कवल वस्त्रादि पडिलेही पोसह
शाला प्रमार्जी काजो विधिशुं परठवी, एक ख
मासमण देई इरियावही पडिक्कमे. इहां आचा
र दिनकरमें कह्यो छे दोय खमासमणें इछाका०॥
सं० ॥ न०॥ वसती संदिस्साउं ? वसती पडिले
हुं ? कही वसती मात्रो प्रमुख प्रमार्जे इत्यादि
पण विधिप्रपा प्रमुखमें न कह्यो ॥

॥ हवे एक खमासमणें॥ इछाका० ॥ सं०न०
॥ सिझाय संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह.
बीजे खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ न० ॥
सिझाय करु ? गुरु कहे करेह पछिं इछं कही
नवकार एक कथन पूर्वक उपदेशमाला प्रमुख
सिझाय करी, नवकार एक कही धर्मध्यान क
रे, भणे, गुणे, वखाण सुणे इम करता पूर्ण
पहुर दिन चढ्या. उग्घाडा पोरिसी अथ

न्ने पासवणे अणहियासे ॥ २६ ॥ अणागाढे म
ध्ये पासवणे अणहियासे ॥ १७ ॥ अणागाढे दू
रे पासवणे अणहियासे ॥१८॥ अणागाढे आ
सन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ १९ ॥ अणा
गाढे मध्ये उच्चारे पासवणे अहियासे ॥२०॥ अ
णागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥२१॥
अणागाढे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ २२ ॥
अणागाढे मध्ये पासवणे अहियासे ॥२३॥ अ
णागाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ २४ ॥ एवं
थंडिलपडिलेहण पाठ कह्या ॥

॥ यह चोवीस थंडिला कहा कहा करनां?
सो लिखते हैं

॥ ६ थंडिला शय्याके दोनु तरफ दहिणे
पासे ३, वामपासे ३, पडिलेहे ॥ ६
दरवजेके भीतर पासें दहिणे ३, वामें ३
लेहे ॥६ थंडिला दरवजेके बाहर दोनु पासे
लेहे ॥६ थंडिला जिहां

होवे, ते दोनु तरफ पडिलेहे ॥ इति २४ थन्डि
ला पडिलेहणविधि. संपूर्ण ॥

पीछें इछं कही, कबल वस्त्रादि पडिलेही पोसह
शाला प्रमार्जी काजो विधिशु परठवी, एक ख
मासमण देई इरियावही पडिकमे इहा आचा
र दिनकरमें कह्यो छे दोय खमासमणे इछाका०॥
सं० ॥ न०॥ वसती संदिस्साउ ? वसती पडिले
हुं ? कही वसती मात्रो प्रमुख प्रमार्जे इत्यादि
पण विधिप्रपा प्रमुखमें न कह्यो ॥

॥ हवे एक खमासमणें॥ इछाका० ॥ स० न०
॥ सिचाय सदिस्साउ ? गुरु कहे, संदिस्सावेह.
बीजे खमासमणे ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ न० ॥
सिझाय करु ? गुरु कहे करेह पीछें इछं कही
नवकार एक कथन पूर्वक उपदेशमाला प्रमुख
सिझाय करी, नवकार एक कही धर्मध्यान क
रे, नणे, गुणे, वखाण सुणे इम करता पूर्ण
पहुर दिन चढ्या उग्घाडा पोरिसी अथ

वा, बहुपडिपुन्ना पोरिसी कही, खमासमण देई इरियावही पडिकमी दोय खमासमणें ॥ इछाका० ॥ स० ॥ न० ॥ पडिलेहण करु ? गु रु वचने इछ कही, मुहपत्ती पडिलेही पान भोजन पात्र पडिलेही राखे पीछे सिभाय ध्यान करे ॥

॥ हवे कालवेलाये आवस्सही पूर्वक देहरे जई पाचे शक्रस्तवें देववांदण विधि दो प्रकारसें लिखते हैं ॥

॥ तीन प्रदक्षिणा देई तीन वार नमस्कार करी, भूमि प्रमार्जी, पुरुष हुवे तो प्रभुजीके दक्षिण पासें बेसे, स्त्री हुवे ते वाम पासें बेसे. पीछे ॥इछाका०॥स०॥न०॥ चैत्यवदन करुं ? इछ कही, चैत्यवदन कहे पीछें नमोथुण कहे ... मण देई इरियावही पडिकमे एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करे मुखें लोगस्स कहे ... जीं बेसे तीन तथा चार ... पांच

कार कहे "ज किंचि नाम तिछं" इत्यादि
पीछे नमोत्थुणं कहे. उनो थई अरिहंत
ाणं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्ती० अन्न
कही, एक नवकारनो काउस्सग्ग करे पारी
थुईकी गाथा कहे ॥ पीछें लोगस्स० स
ोए अरि० वदणव० अन्नत्थू कही एक न
पारी दूसरी थुईकी गाथा कहे. पीछें पुस्कर
र्दी० सुअस्स नग० वदण० अन्नत्थू कही
क नवकार०पारी तीसरी थुईकी गा०पीछें सि
शाण बुश्शाण० वेयावच्च गराण०अन्नत्थू०इत्यादि
कथन पूर्वक चोथी थुइकी गाथा कह कर वैठकें
नमोत्थूण कहे फेर अरिहंतचेई० कहे इसीतरे
चार थुइयें देव वादी वेसे ॥ नमोत्थूण कहे न
मोऽर्हत्सिशाचार्योपाध्याय इत्यादि कही पीछें
स्तवन कहे पीछे जयवीयराय कही नमोत्थू
ण सव्वे तिविहेण वंदामि पर्यंत कहे ॥ एम पा
चे शक्रस्तवें देववदन विधि जाणवो ॥

॥ ए विधि प्रवचनसारोध्दार
ह्यो छे तथा चैत्यवदन वृहभाष्यमे एम .
नमस्कार कथन पूर्वक शक्रस्तव कही,
चही प्रतिक्रमणादि करे; वली नमस्कार
नपूर्वक शक्रस्तव कही दोय वार चार
से देव वादे फेर शक्रस्तव कही "जावति
याइं" गाथा नणी खमासमण पूर्वक ज
के० बीजी गाथा कही, स्तवन कहे वली
मोत्थूणं कही, जयवीयराय कहे ॥ इति
न विधि ॥

॥ पछिं निस्सही पूर्वक पोसहशाला
आवी, इरियावही पडिक्कमे पछिं सिघाय
न करे, जो तिविहार उपवास कियो हुवे,
पच्चख्काण वेला पूर्ण हुवा जल पीणेकूं
ण पारे ॥

॥ हवे पच्चख्काण पारणेका विधि लिखते हैं ॥
॥ खमासमण देई इरियावही फिर

क खमासमण ॥ इच्छा० ॥ स० ॥ न० ॥ पच्च
काण पारवा मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, प
डिलेहेह ॥ पछि इच्छ कही खमासमण देई, मुह
त्ती पडिलेहे फेर एक खमासमण देई, इ
ाका० ॥ स० ॥ न० ॥ पाणहार अमुक पच्च
काण पारुं ? गुरु कहे, पुणोवि कायवो पछिय
ाशक्ति कही, खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥
० ॥ न० ॥ पाणहार पारु ? गुरु कहे, आया
ो न मोत्तवो पछि तहत्ति कही, अमुक पच्च
काण चउविहार कर्यो, एम कही एक नव
ार गुणी पच्चक्खाण फासिय, पालिय, सोहि
, तीरिय, किट्टिय, आराहियं, जं च न आ
ाहिय, तस्स मिछा मि डुक्कड, कही ॥ चैत्यवद
 करे क्षणमात्र सिष्भाय करी यथासंनवें
अतिथिसविनाग करी पाणी पीवे ॥

॥ तथा उपधानवाही हुवे, तो पोरिसी प्र
मुख पच्चक्खाण पारी आहार करे पछि आ

सण बेठो थकोदीज दिवस चरिम पच्चक्खे,
ठे इरियावही पडिक्कमी चैत्यवंदन करे.
त्यवंदन आहार संवरण निमित्ते छे ॥
पच्चक्खाण पारणेका विधि ॥

॥ पीछे जो वहिर्भूमि जावणो हुवे, तो आव
स्सही कही उपयोगी थको, निर्जीव
जई, अणुजाणह जस्सुग्गहो कही पूर्व,
त्तर, सूर्य, ग्रामादिकने पूठि अण देई, मलमूत्र
परिठवे, प्राशुकजले शुद्ध थई तीन वार वो
सिरामि, एहवुं कहिवे करी मल मूत्र वो
सिरावी, पोसहशालायें निस्सही पूर्वक पेसी
इरियावही पडिक्कमे खमासमण देई कहे ॥
इच्छाका० ॥ स० ॥ भ० ॥ गमणागमण आलो
यहं ? गुरु कहे, आलोएह पीछें इछ कही।
णागमण आलोवे ॥ ते इम आवस्सही करी,
प्राशुक देशें जई, सण्मासा पूंजी, थण्डिलो प
डिलेही, उच्चार प्रश्रवण

करी, पोसहशालायें आव्यो ॥ आवंति जतेहिं जं खम्मियं, ज विराहियं, तस्स मिछा मि डुकडं, एम कही वेसे पछि पडिलेहण वेला सीम सिझाय ध्यान करे ॥

॥ हवे पाछले पहुरे इरियावही पडिक्कमी खमासमण देई कहे इछाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ पडिलेहण करुं ? गुरु कहे करेह इछं कही दूजे खमासमणे इछाका० ॥ स० ॥ न० ॥ ॥ पोसहशाला प्रमार्जुं ? गुरु कहे, प्रमार्जेह. पछि इछं कही, मुहपत्ती पडिलेही दोय खमासमणें अंग पडिलेहण सदिस्साउं ? अंग पडिलेहण करु ? कहे. पछि गुरु वचनें इछं कही मुहपत्ती पडिलेही दंमासणो पूजणी प्रमुखसें प्रमार्जी पोसहशाला प्रमार्जे. पछिं काजो शुद्ध करी, उद्धरी, एकाते विखरतो परठवी इरियावही पडिक्कमी, खमासमण पूर्वक कहे ॥ इछकार नगवन् पसाउ करी पडिलेहणां पडि

लेहावोजी ॥ पीछे स्थापनाचार्य स्थापे गुरुसमीपे अथवा थापनाचार्य एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ मु- मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह इच्छ कही खमासमण देई, मुहपत्ती प- पछिं दोय खमासमणे ॥ इच्छाका० ॥ स० ॥ ज० सिझाय सदिस्साउं ? सिझाय करुं ? उक्त क्षणमात्र सिझाय करी तिविहार उपवास घो हुवे तो गुरु साखे पाणिहार पच्चक्खे ॥ पधानवाही प्रमुख आहार कीधो हुवे, तो वां दणां दोय देई, पच्चक्खाण करे पीछें एक खमा समण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि थंडिला पडिलेहण संदिस्साउं ? बीजे खमास मणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि थंडि ला पडिलेहुं ? गुरुवचनें इच्छ कही, दोय खमास मणें ॥ इच्छाका० ॥ स० ॥ ज० ॥ बेसणो संदि स्साउं बेसणो ठाउं ? कही . वस्त्र

पडिलेहे पुजणी हुवे, तो ते पण मुहपत्तीशु पडिलेहे उपवासी तो बे तेमाटे सर्व पाबे कडिपट्टो धोतीयो कणदोरो पडिलेहे, उपधानवाही प्रमुख भोजन कीधो हुवे तो कडिपट्टादि पडिलेह्या. पीबे वस्त्र कबलादि पडिलेहे ए विशेष बे ॥ पीबें कालवेला सीम सिद्याय ध्यान करे पीबें उच्चार प्रश्रवण २४ थण्डिला पडिलेहे, जो चउदश हुवे, तो पाखी चउमासी पडिक्कमणो करे, सवच्छरीये सवच्छरी पडिक्कमणो करे तिहा देवसी पडिक्कमणो पूर्वे लिख्यो बे, तिमहज करे, पण इतरो विशेष बे ॥ इच्छा० ॥ देवसिय आलोएमि इत्यादि देवसी आलोयां पीबें "ठाणे कमणे चकमणे" इत्यादि पाठ कहे खुद्दोवद्दव काउस्सग्ग किया पीबे दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ स० ॥ भ० ॥ सिद्याय संदिस्साउ ? सिद्याय करु ? कही बेठो थको तीन नवकार प्रमुख सिद्याय करे ॥ इति ॥

॥ पाक्षिकादि तीन पडिक्कमणविधि एही पुस्तकमे लिख गये हे. वहांसें
॥ हवे पडिक्कमणो हुवा पीछें
वच्च करी पोरसी सीम सिद्याय ध्यान करे. लघुनीति प्रमुख करवी हुवे, तो आसन्न तो थको, नूमि प्रमार्जे थण्डिल स्यानकें देहशका निवारे, प्रश्रवण वोसिरावी,. के श्रावे नगवन् ! बहु पडिपुन्ना पोरसी कही खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे छें राईसथारा विधि करे ॥

॥ हवे राई सथारा विधि कहे छे ॥

॥ खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ स० ॥ न० ॥ राइ संथारा मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह पीछें इछ कही, खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे एक खमासमणें ॥ इछाका० ॥ स० ॥ न० ॥ राइ संथारो सदिस्साउं ? बीजे खमास मणें ॥ इछाका० ॥ स० ॥ न० ॥ राई सथारो

गावुं ? पछिं गुरु वचने इच्छं कही, चउक्कसाय प
डिमल्लुल्लूरण इत्यादि नमस्कार कथन पूर्वक
जयवीयराय सूधी चैत्यवंदन करे. नूमि प्रमा
र्जी, संथारो उत्तर पट्टो पाथरे पछि शरीर प्र
मार्जी निस्सही निस्सही एम कही संथारे बे
सी,तीन नवकार तीन करेमि नं ते उच्चरी॥णमो
खमासमणाणं, गोयमाईणं महामुणीणं, 'अणु
जाणह जिठिज्जा अणुजाणह परम गुरु' इत्या
दि राइ सथारा गाथा नणी, वाम हाथ सिरा
णें देई सोवे निद्रा नावे जा सीम मुनिवर चरि
त्र चिंतवे, पसवाडो फेरे तो शरीर संथारो प्र
मार्जी फेरे, जो देह शाकायें उठे, तो पूर्वोक्त
विधें देहशंका निवारी, इरियावही पडिक्कमे ॥
पछिं जघन्ये पण तीन गाथानी सिचाय करी
सोवे ॥ इति राइ सथारा विधि कह्यो ॥

॥ हवे रात्रिनें पाछिले पहोर उठी, नवका
रादि गुणी, इरियावही पडिक्कमे खमासमण दे

॥ पाक्षिकादि तीन पडिक्कमणविधि एही पुस्तकमे लिखगये है वहासें ॥ हवे पडिक्कमणो हुवा पीछें साधुको वस्त्र करी पोरसी सीम सिवाय ध्यान करे. लघुनीति प्रमुख करवी हुवे, तो तो थको, जूमि प्रमार्जे थण्डिल स्थानकें देहशका निवारे, प्रश्रवण वोसिरावी, कें आवे जगवन् ! बहु पडिपुन्ना पोरसी कही खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे. ठें राईसथारा विधि करे ॥

॥ हवे राई संथारा विधि कहे ठे ॥

॥ खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ स० ॥ज० ॥ राइ संथारा मुहपत्ती पडिलेहु ? गुरु कहे, पडिलेहेह पीछें इछ कही, खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे एक खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ राइ संथारो संदिस्सार्ज ? बीजे खमास मणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ राई संथारो

का० ॥ सं० ॥ न्न०॥ पोसह पाखुं ? गुरु कहे, आयारो न मोत्तवो पीछे तहत्ति कहे, खमासमण देई अर्धावनत गात्रे उनो थको तीन नवकार गुणी, खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे, पीछें खमासमण देई कहे ॥ इछाका० ॥ स० ॥ न्न० ॥ सामायिक पारुं ? गुरु कहे पुणोवि कायवो पीछे यथाशक्ति कही, खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ न्न० ॥ सामायिक पाखु ? गुरु कहे आयारो न मोत्तवो पीछें तहत्ति कही खमासमण देई अर्धावनत गात्रें उनो थको हाथ जोड्या- मुहपत्ती मुखें दिया थकां तीन नवकार गुणी संमासा पडिलेहे गोमालीयें वेसी मस्तक नमावी, "नयवं दसन्नन्हो" इत्यादि नावनारूप गाथा कहे पीछे पोसहना उपगरण संवरी, देहरे जई देव जुहारे घरे आवी आहार निष्पन्न हुवो देखी साधु समीपे आवे, अतिथि सविन्नागव्रत साचवण निमित्ते साधु न

ई कुसुमिण डुस्सुमिण काउस्सग्ग करी,
क्त विधे सामायिक लेवे, इहां २
डिक्कमे पीछे दोय खमासमणें ि
ची आठ नवकार गुणी, पडिक्कमण वेला
सिद्धाय करे पडिक्कमण वेला हुवा
णो पूर्वली परे करे, पण इतरो विशेष छे, के
आलोया पीछे संथारा उवट्टणकी इत्यादि
व कहे एम संपूर्ण पडिक्कमणो करी
ण वेलायें पूर्वोक्त विधे पडिलेहण करी,
शाला पूजी काजो कच्चरी इरियावही पडिक्क
दोय खमासमणें सिद्धाय सदिस्सावी, उपवे
शमाला प्रमुख सिद्धाय करे पीछे पोसह

॥ अथ पोसहपारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे फेर ख
मासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥
पोसह पारु ? गुरु कहे, पुणोवि कायवो पीछे य
थाशक्ति कही, खमासमण देई कहे ॥ इच्छा

का० ॥ स० ॥ ज०॥ पोसह पारुं ? गुरु कहे, आयारो न मोत्तवो पीछें तहत्ति कहे खमासमण देई अर्धावनत गात्रे ऊनो थको तीन नवकार गुणी, खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे, पीछे खमासमण देई कहे ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक पारु ? गुरु कहे पुणोवि कायवो पीछें यथाशक्ति कही, खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ स० ॥ ज० ॥ सामायिक पारुं ? गुरु कहे आयारो न मोत्तवो पीछें तहत्ति कही खमासमण देई अर्धावनत गात्रे ऊनो थको हाथ जोड्या- मुहपत्ती मुखें दिया थका तीन नवकार गुणी समासा पडिलेहे गोमालीयें वेसी मस्तक नमावी, "भयवं दसम्नद्दो" इत्यादि नावनारूप गाथा कहे पीछे पोसहना उपगरण संवरी, देहरे जई देव जुहारे घरे आवी आहार निष्पन्न हुवो देखी साधु समीपें आवे, अतिथि सविभागव्रत साचवण निमित्ते साधु न

मासमणें वहुवेल सदिस्सावे ॥ ए तीन प्रका
रका विकल्प जाणनां हवे पडिलेहण तो पू-
र्वे करी वे, तो पण आदेश मागवो ते एम ख
मासमण देई ॥ इछाका० ॥ स० ॥ ज० ॥ पडि
लेहण संदिस्साउं ? बीजे खमासमणें पडिलेह
ण करु ? कही मुहपत्ती पडिलेहे पछिं इमरीज
दोय खमासमणें अग पडिलेहण संदिस्सावी
मुहपत्ती पडिलेहे पछि वली खमासमण देई
इछकार नगवन् ! पसाउ करी पडिलेहण पडि
लेहावो जी. एम कहे, पछि एक खमासमण दे
ई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि मुहपति
पडिलेहुं ? कही कोई वस्त्र अणपडिलेह्यो र
ह्यो हुवे, तो पडिलेहे नहीं तो वली आसण
पडिलेहे दोय खमासमणें [illegible] संदिस्सावी

ावली रातें वली सामायिक न लेवे जिणें दि
ास संबंधी चउ पुहरी पोसह लीधो हुवे, ते
ागले पुहर पच्चरकाण किया, पीछे दोय खमा
मणे उंही पडिलेहण संदिस्साउ? उंही पडि
लेहण करुं ? कहे,पण थम्भिला पद न कहे. अ
ने थंम्भिला नहीं पडिलेहे यह नि केवल दिन
संबधी पोसह ग्रहण करणेमे विशेष विधि ही,
सो बताई॥इति दिनसबधी पोसह ग्रहणविधि

॥ अथ रात्रि संबंधि चउपुहरी पोसहनो
विधि कहे हैं ॥

॥ तिहां जिणे प्रथम चउ पुहरी दिवस पो
सो ऊच्चर्यो है पीछें संध्यानी पडिलेहण कर
ता रात्रि पोसहनो भाव थयो, तो पच्चरकाण
किया पीछें दोय खमासमणें पोसह मुहपत्ती प
डिलेही तीन नवकार गुणी तीन वार पोसह
दंम्डक उच्चरे तिहां जाव रत्तिं पज्जुवासामि एम
पाठ उच्चरे, पीछें सामायिक विधि पूर्वें लिख्यो

मासमणे वहुवेल संदिस्सावे ॥ ए तीन प्रका
रका विकल्प जाणनां हवे पडिलेहण तो पू
र्वे करी हे, तो पण आदेश मागवो ते एम ख
मासमण देई ॥ इडाका० ॥ स० ॥ न० ॥ पडि
लेहण संदिस्साउं? बीजे खमासमणें पडिलेह
ण करुं? कही मुहपत्ती पडिलेहे पीहे इमहीज
दोय खमासमणें अंग पडिलेहण संदिस्सावी
मुहपत्ती पडिलेहे पीहें वली खमासमण देई
इडकार जगवन्! पसाउ करी पडिलेहण पडि
लेहावो जी. एम कहे, पीहें एक खमासमण दे
ई ॥ इडाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ उपधि मुहपति
पडिलेहुं? कही कोई वस्त्र अणपडिलेह्यो र
ह्यो हुवे, तो पडिलेहे नहीं तो वली आसण
पडिलेहे दोय खमासमणें सिद्धाय संदिस्सावी
उपदेशमाला प्रमुख सिद्धाय करे आगें सर्व
क्रिया पूर्वे अव पुहरी पोसहमें लिखी है, तिम
हीज जाणवी, पण इहां

तो

रे तिहां दिवसेसंरत्तिं पज्जुवासामि कहे. सं
या हुवे, तो रत्तिं पज्जुवासामि कहे. पीछें बि
हुं खमासमणें सामायिक मुहपत्ती पडिलेहे.
दोय खमासमण देई, सामायिक संदिस्सावे
फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन
करेमि जं ते उच्चरे दोय खमासमण देई सिद्धा
य संदिस्सावी, आठ नवकार कहे. फेर दो
खमासमण देई, बेसणो सदिस्सावी सीता
दिके बे खमासमण देई, पांगरणुं सदिस्सावे.
पीछें बे खमासमण देई, अंग पडिलेहण संदि
स्सावी, मुहपत्ती पडिलेहे. फेर बे खमासमण
देई, उंही थण्डिलां पडिलेहण संदिस्सावी जो
अणपडिलेह्यो उपगरण हुवे तो पडिलेहे. जो
सर्व उपगरण पडिलेह्यां हुवे, तो पण थानक
शून्यता टालवा जणी वली आसण पडिले
ही, पडिक्कमण वेला सीम सिद्धाय ध्यान करे

दे, तिम करे पण सामायिक कर्यां
खमासमणे सिद्माय संदिस्सावी आठ
कही वेसणो संदिस्सावी, पागरणो
पीठे दोय खमासमणे ॥ इच्छाका० ॥ सं०
उंही थण्डिला पडिलेहण संदिस्साउं करी
ण्डिला पण्डिलेहण करु? गुरु कहे, करेह इ
ही उपधि पडिलेहे आगे सर्व क्रिया पूर्वे
खी तिम जाणवी तथा जे श्रावक उपवासी
व्यग्रपणे दिवसे पोसह न करी शक्यो, ते
त्रि पोसहनो भाव थये, पाछले पहुर
नके आवे जो वसती प्रमार्जी हुवे, तो सखो,
नही तो वसती प्रमार्जी, काजो परिठवी सर्व
उपगरण पडिलेही इरियावही पडिकमे पीछे
चउविहार पच्चक्खाण करी दोय खमासमणे
पोसह मुहपत्ती पडिलेही दोय खमासमण दे
ई पोसह संदिस्सावे फेर खमासमण देई,
तीन नवकार गुणी, तीन वार पोसह दंडक क

॥ अथ देववांदणमें अथवा प्रातःकाल सं
ध्याकालके प्रतिक्रमणमें कहनेकी स्तुति ॥

॥ तत्र प्रथम बीजकी स्तुति ॥

॥ महीमरूणं पुन्नसोवन्नदेह, जणाणदणं
केवलन्नाणगेहं ॥ महानद लच्छी बहु बुध्दिराय,
सुसेवामि सीमंधरं तिब्भराय ॥ १ ॥ पुरा ना
रगा जेह जीवाण जाया, भवस्सति ते सव्व भ
वाण ताया ॥ तहा सपयं जे जिणा वट्टमाणा,
सुह दिंतु ते मे तिलोयप्पहाणा ॥ २ ॥ दुरुत्ता
र ससार कुवार पोय, कलका वली पंकपक्खाल
तोयं ॥ मणोवछियछे सुमदारकप्पं, जिणदा
गम वंदिमो सुमहप्प ॥ ३ ॥ विकोसे जिणदा
णणभोजलीणा, कलारूव लावस सोहग्ग पी
णा ॥ वह तस्स चित्तमि णिच्च पि झाण, सिरी
भारई देहि मे सुध्दनाण ॥ ४ ॥ इति श्रीसीम
धरजीनी स्तुति ॥ १ ॥

पीठ उच्चार प्रश्रवणना २४ थंमिलां
हीं पडिक्कमणो करे तथा पाछली रातें
सामायिक न लेवे इतनां निकेवळ
पोसह लेवाना विकल्प जाणवा ॥ इति
पोसहविधि संपूर्ण ॥

॥ अथ गणेकमणे चंकमणे लिख्यते ॥

॥ गणेकमणे चंकमणे आउत्ते अणाउत्ते
हरिअकायसंघट्टे बीयकायसंघट्टे थावरकाय
संघट्टे छप्पइयासंघट्टे सव्वस्सवि देवसिअ,
चिंतिय भासिय चिट्ठिअ ॥ इच्छाकारेण
संदिस्सह, इच्छं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ १ ॥
संथाराउवट्टणकी, आउट्टणकी, परिअट्टणकी,
पसारणकी, छप्पइयासंघट्टणकी, अचक्खुविस
यकायकी, सव्वस्सविराइअ, दुचिंतिअ, दुब्भा
सिअ, दुच्चिठिय, इच्छाकारेण संदिस्सह, इच्छं
तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ २ ॥ इति ॥

लिका, पंचम्यादितपोवतां जवतु सा सिद्धायि का त्रायिका ॥ ४॥ इति श्रीज्ञानपंचमीस्तुति ॥

॥ अथ अष्टमीस्तुतिः ॥

चउवीसे जिनवर,प्रणमु हुं नितमेव ॥ आठम दिन करियें, चंद्रप्रजुनी सेव ॥ मूरति मन मोहे,जाणे पूनिम चंद ॥ दीठां दुःख जाये,पामे परमानंद ॥ १ ॥ मिलि चोसठ इंद्र, पूजे प्रजु जीना पाय ॥ इंद्राणी अपछर, कर जोडी गुण गाय ॥ नंदीश्वर दीपें मिलि सुरवरनी कोड ॥ अठाइ महोत्सव, करता होडा होड ॥ २ ॥ शेत्रुजा शिखरे, जाणी लाज अपार ॥ चउमासें रहिया, गणधर मुनि परिवार ॥ जवियणने तारे, देई धरम उपदेश ॥ दूध साकरथी पण, वाणी अधिक विशेष ॥ ३ ॥ पोसो पडिक्कमणुं, करियें व्रत पच्चरकाण ॥ आठम तप करतां, आठ करमनी हाण ॥ आठ मंगल थाये, दिन दिन

॥ अथ पंचमीस्तुति ॥

॥ पंचानंतकसुप्रपंचपरमानंदप्रदानक्षमं,
चानुत्तरसीमदिव्यपदवीवश्याय मन्त्रोत्तमम्॥ये
न प्रोज्ज्वलपचमीवरतपो व्याहारि तत्कारिणां,
श्रीपंचाननलाञ्छन स तनुता श्रीवर्द्धमान श्रि
यम् ॥ १ ॥ ये पचाश्रवरोधसाधनपरा पंचप्र
मादीद्दरा , पंचाणुव्रतपचसुव्रतविधिप्रज्ञाप
नासादराः ॥ कृत्वा पंचहृषीकनिर्जयमथो
प्राप्ता गतिं पचमीं,तेऽमी सतु सुपंचमीव्रतभृतां
तीर्थंकरा शंकरा ॥ २ ॥ पंचाचारधुरीणपंच
मगणाधेशेन संसूत्रितं, पंचज्ञानविचारसा
रकलितं पचेषुपंचत्वदम् ॥ दीपाभं गुरुपंचमा
रतिमिरेष्वेकादशी रोहिणी, पंचम्यादिफल
प्रकाशनपटुं ध्यायामि जैनागमम् ॥ ३ ॥ पंचा
नां परमेष्ठिना स्थिरतया श्रीपंचमेरुश्रियां,
भक्तानां भविनां गृहेपु बहुशो या पंचदिव्यं व्य
धात ॥ प्रह्वो पंचजने मनोमतकृतौ स्वारसपरा

॥ अथ पार्श्वजिनस्तुति ॥ हरिगीत छंद ॥

॥ डेडेकि धपमप, धुधुमि धोंधों, ध्रसकिधर, धपधोरवं॥ दोंदोंकि दों दों,दाग्डिदि दाग्डिदिकि, द्रमकि द्रण रण,ड्रेणवं॥ झझिंझेंकि झेझे,झणणर णरण,निजकि निजजन,रजनं॥ सुरशैल शिखरे, भवतु सुखदं, पार्श्वजिनपतिमज्जनं ॥ १ ॥ क टरेंगिनि थोंगिनि,किटति गिगडदा,धुधुकि धुट नट,पाटवं॥ गुणगुणण गुणगण,रणकि णेणे,गुण गुणगुणगण,गौरवं ॥ झझि झेंकि झेंझें,झणण रणर रण, निजकि निजजन, सज्जना॥ कलयंति कम ला,कलितकलमल, मुकलमीशा,महेजिना ॥२॥ वकि वूंकि वूंवूं,वर्ड्किक वर्ड्किक,वर्ड्किपट्टा,ताड्यते॥ तललोंकि लोंलो,त्रेंपि त्रेपिनि,भेंपिभेंपिनि,वाद्य ते॥ धें धें कि धें धें,थुगि थुगिनि,धोंगिधोंगिनि, कलरवे॥ जिनमतमनतं,महिम तनुता, नमति सु रनर,मुत्सवे ॥ ३ ॥ पुदाकि पुंदा, पुपुड्दि पुदां पुपुड्दि दोंदो,अवरे॥ चाचपट चचपट,रणकि णे

कोडि कल्याण ॥ जिन सुखसूरि कहे, इम
त जनम प्रमाण ॥ इति अष्टमी स्तुति ॥

॥ अथ मौनैकादशीस्तुति ॥

॥ अरस्य प्रव्रज्या नमिजिनपतेर्ज्ञानमतुलं
तथा मल्लेर्जन्म व्रतमपमलं केवलमलं॥ वलक्षै
कादश्या सहसि लसदुद्दाममहसि, क्षितौ क
ल्याणानां क्षपति विपद पंचकमद ॥ १ ॥सुप
र्वेंद्रश्रेण्यागमनगमनैर्भूमिवलय, सदा स्वर्गं
त्येवाहमहमिकया यत्र सलयं ॥ जिनानामप्या
पु क्षणमतिसुखं नारकसद, क्षितौ० ॥ २ ॥
जिना एव यानि प्रणिजगदुरात्मीयसमये,
फलं यत्कर्तॄणामिति च विदित शुद्धसमये ॥ च
निष्टारिष्टाना क्षितिरनुभवेयुर्बहुमुद, क्षि०
॥३॥ सुरा सेवा सर्वे सकलजिनचंद्रप्रमुदिता,
स्तया च ज्योतिष्काखिलभवननाथा समुदिताः
॥ तपो यत्कर्तॄणा विदधति सुखं विस्मितमय
क्षितौ० ॥ ४ ॥ इति ॥

थी करिये, नव आंबिल नव दिवसें जी ॥ तेर सहस वलि गुणिये गुणणुं, नवपद केरो सारो जी ॥ इण परि निर्मल तप आदरियें, आगम साख उदारो जी ॥ ३ ॥ विमल कमलदल लोयण सुंदर, श्रीचक्केसरि देवी जी॥नवपद सेवक नविजन केरां, विघ्न हरो सुर सेवी जी ॥ श्रीखरतर गछ नायक सद्गुरु, श्रीजिनन्नक्ति सुणिंदा जी॥ तासु पसायें इणपरि पनणे, श्री जिन लान्न सूरिंदा जी ॥ ४ ॥ इति श्रीनवपद०

॥ अथ पजूसणकी स्तुति ॥

॥ वलि वलि हुं ध्यावुं गाउं जिनवर वीर, जिनपर्व पजूसण, दाख्या धरमनी शीर ॥ आषाढ चौमासें हूंती दिन पचास, पडिक्कमण संवछरी करिये त्रण उपवास ॥ १ ॥ चउवीशे जिनवर पूजा सत्तर प्रकार, करियें नलें नावें नरियें पुण्य नंमार ॥ वलि चैत्य प्रवाडें फिरता लान्न अनंत, इम परव पजूसण सहुमे महि

णे, रुणण रुंरुंँ,रुवरे ॥ तिहां सरगमपधुनि,निध पमगरस,सस ससस सुर,सेवता ॥ जिननाथमं गे, कुशलमुनि शं, दिशतु शासन,देवता ॥४॥ इति श्रीजिनकुशलसूरिजीकृत पार्श्वजिन०

॥ अथ आंबिलकी स्तुति ॥

॥ निरुपम सुखदायक जगनायक लायक शिवगति गामी जी, करुणासागर निजगुण आगर शुभ समता रस धामी जी ॥ श्रीसिद्ध चक्र शिरोमणि जिनवर ध्यावे जे मन रंगें जी, ते मानव श्रीपालतणी परें पामे सुख सुर संगें जी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज पाठक,सा धु महा गुणवंता जी॥ दरिसण नाण चरण तप उत्तम, नवपद जग जयवंता जी ॥ एहनु ध्यान धरंता लहियें, अविचल पद अविनाशी जी, ते सघला जिननायक नमियें, जिणे ए नीति प्र काशी जी ॥ २ ॥ आसूमास मनोहर तिम व लि,चैत्रक मास जगीशें जी॥ उजवाली सातम

मुनिवरू, चउवीस जिणवर तेह वदू सयल स
घें सुखकरू ॥ २ ॥ इग्यार अंग उपाग बारे
दश पयन्ना जाणिये, ठ छेद ग्रंथ प्रसठ अठा
चार मूल वखाणिये ॥ अनुयोग घार उदार न
दीसूत्र जिनमत गाइये, एह वृत्ति चूर्णी ना
ष्य पेंतालीश आगम ध्याइये ॥ ३ ॥ उनु दि
सें बालक दोय जेहने सदा नवियण सुखकरू,
उख हरें अवा लुंब सुदर डुरिय दोहग अपह
रू ॥ गिरनार मरूण नेमि जिनवर चरणपकज
सेविये, श्रीसघ सहुनें सदा मगल करो अवा
देविये ॥४॥ इति गिरनारमरूण श्रीनेमि० ॥

॥ अथ दीपमालिकास्तुति ॥

॥ पापायां पुरि चारुषष्ठतपसा पर्यंकपर्या
सन , क्ष्मापालप्रनुहस्तपालविपुलश्रीशुल्क
शालामनु ॥ गोसे कार्त्तिकदर्शनागकरणे तू
र्यारकान्ते शुने, स्वातौ य शिवमाप पापरहि
त सस्तौमि वीरप्रनुम् ॥१॥ यज्जन्मागमनोत्सव

मावत ॥ २ ॥ पुस्तक पूजावी नव वाचनायें
चाय, श्रीकल्पसूत्र जिहां सुणता पाप पुलाय
॥ प्रतिदिन परभावना धूप अगर उस्केव, भ
भवियण प्राणी परव पजूसण सेव ॥ ३ ॥ वधि
साहम्मीवछल करियें वारं वार, केइ भावना
भावे केइ तपसी शिलधार ॥ अठ्ठदीह पूज
सण एम सेवत आणद, सुयदेवी सानिध करे
जिनलाभ सूरिंद ॥ ४ ॥ इति श्रीपर्यूषणप० ॥

॥ अथ नेमनाथजीकी स्तुति ॥

॥ सुर असुर वंदिय पाय पंकज मयणमल्ल
अक्षोभित, घनसघनश्याम शरीर सुंदर शं
ख लंछन शोभितं ॥ शिवादेवि नंदन त्रिजग
वंदन भविक कमल दिनेश्वरं, गिरनार गिरि
वर शिखर वंदु नेमिनाथ जिनेश्वरम् ॥१॥ अ
ष्टापदें श्रीआदिजिनवर वीर जिन पावा पुरें,
वासुपूज्य चंपापुरिय सीधा नेम रेवय गिरिवरे
समेतशिखरें वीस जिनवर पहुता

॥ पूरव विदेहें विजय नली पुष्कलावई नाम, जिहां विचरे जिनवरजी धन ते नयरी गाम ॥ ॥१॥ धन ते लोक सुणे जे जोजनगामिनी वाण, धन ते महियल चरण धरे जिहा जिनवर नाण ॥ धन ते नविजन जे रहे प्रनु ताहरे परसंग,वदनकमल निरखी नित्य माणे उत्सव अंग॥२॥ सुगुरु मुखें प्रनु सुजस तुम्हीणो सानल कान, मिलवाने उलसे मन माहरुं धरुं एक ध्यान ॥ नगति जुगति करवानी ठे मुज सघली जोड, पण प्रनु लग पहूंचीजें तेह नहिं पग दोड ॥ ३ ॥ आफा मूंगर अति घणा विच वहे नदियां पूर, किम मुजथी अवराये प्रनुजी एटली दूर ॥ आखडली उलजो करे जोयवा मुख जिनराज, पाखडली पाई नहि ते विन किम सरे काज ॥ ४ ॥ वाटडली वहतो कोई न मिले संगू साथ, कागलियो लिख आपूं हुं जिम तेहने हाथ ॥ जाणू शशाहर सार्थे कहुं

व्रतवरज्ञानाक्षरातिक्षणे, संनूयाशु सुपर्वसंत तिरहो चक्रे महस्तत् क्षणात् ॥ श्रीमन्नाजिन वादिवीरचरमास्ते श्रीजिनाधीश्वरा, संघास्म नघचेतसे विदधता श्रेयास्यनेनासि च ॥१॥ अर्थात्पर्वमिदं जगाद जिनप श्रीवर्द्धमानाभि ध, स्तत्पश्चाज्ञणनायका विरचयांचक्रुस्तरां सु व्रत ॥ श्रीमत्तीर्थसमर्थनैकसमये सम्यगृ शा नूस्पृशा, नूयान्नावुककारकप्रवचनं चेत श्चमत्कारि यत् ॥३॥ श्रीतीर्थाधिप तीर्थनाव नपरा सिद्धायिका देवता, चंचच्चक्रधरा सुरा सुरनता पायादपायादसौ ॥ अर्हन् श्रीजिन चन्द्रगीस्सुमतिनो नव्यात्मन प्राणिनो, या चक्रेऽवमकष्टहस्तिनिधने शार्दूलविक्रीडितम् ॥ ४ ॥ इति दीपमालिकास्तुतिः ॥

॥ अथ पञ्चतिर्थीका स्तवन ॥

॥ सुगुण सनेही साजण श्रीसीमंधरस्वाम, अरज सुणो एक जगगुरु मुक्त

जाणे हजूर ॥ए॥ शिव सुखदायक नायक लायक स्वामि सुरग, ध्यायक ध्येय स्वरूप लहे निज आत्म उमंग ॥ सहिजे एक पलक जो थाये प्रभु तुम संग, लाभ उदयजिन चड लहे नित प्रेम अनंग ॥ १० ॥ इति श्रीसीम धर स्वामी स्तवनं ॥

॥ अथ बीजो स्तवन ॥

॥ सफल संसार अवतार ए हु गणुं, सामि सीमधरा तुम्ह भगते भणुं ॥ भेटवा पायकम ल भाव हियडे घणो, करिय सुपसाय जे वीन वु ते सुणो ॥१॥ तुम्हशुं कूड अरिहंत शु रा खियें, जिस्यो अछे तिस्यो कर जोडि करि भाखि ये ॥ अति सबल मुफ हिये मोह माया घणी, एक मन भगति किम करू त्रिभुवन घणी ॥२॥ जीव आरति करे नव नवी परिगहे, रीश चट को चढे लोभ वयरी नडे ॥ नयण रस वयण रस काम रस रसीयो, तेम अरिहंत तूं हीयडे

सटेशा जेह, पण अलगो थई ऊपरि वाटे मि
कले तेह ॥ ५ ॥ जो कोई रीति प्रभुजी तुमची
एथ अवाय, तो इण भरतना वासी जविजन
पावन थाय ॥ साहिबनी तो सुनजर सघळे
सरिखी होय, पण पोतानी प्राप्ति सारू फळ
प्रति जोय ॥६॥ अलगो हु पण माहरे तुम
शु साची प्रीत, गुण गुणवतना आवे हियडे
खिण खिण चित्त ॥ हुं हुं सेवक तुं छे माहरो
आतमराम, नहिय विसारूं जीवुं ज्यां लगि
हरु नाम ॥ ७ ॥ साचे दिलथी मुझशु भ
धरम सनेह, करुणाकर प्रभु करजो मोप
हिर अछेह ॥ दूसम काल तणो दु स व
ीन दयाल, पालो विरुद संभालो निम
॥ ४ ॥ तुं कृपाल ॥ ८ ॥ आशाविलुद्धा अरज
ण करे अरदास, पण महोटानी महिर
॥ सुवे थाय निराश ॥ केई बसे प्रभु पासे
अरज सुं छे दूर, राजमहिरनी रीतें समजने

मरगिरि वेगलु ॥ ८ ॥ जोलिडा जगति तूं चित्त
हारे किस्ये, पुण्य संयोग प्रजु दृष्टिगोचर हु
स्ये ॥ जेहने नामें मन वयण तन उल्लसे, दूर
थी ढूकडा जेम हियडे वसे ॥ ए ॥ जल जलो
एणि संसार सहु ए अछे, सामि सीमंधरा ते
सहू तुम पछें ॥ ध्यान करता सुपनमाहि आ
वी मिले, देखियें नयण तो चित्त आरति टले
॥ १० ॥ साम सोहामणा नाम मन गहगहे,
तेहशु नेह जे वात तुम्ह जी कहे ॥ तुम्ह पय
जेटवा अति घणो टलवलुं, पख जो होय तो
सहिय आवी मिलुं ॥ ११ ॥ मेरुगिरि लेखणी
आज कागल करु, क्षीरसागर तणा दूध खडि
या जरुं ॥ तुम्ह मिलवा तणा सामि संदेशडा,
इंद पण लखिय न शाके अछे एवडा ॥ १२ ॥
आपणे रंग जरि वात सुख जेटली, ऊपजे
सामि न कहाय मुख तेटली ॥ सुणो सीमंधरा
राजराजेसरा, लाख ने कोड प्रजु पूर सवि

नवि वसीयो ॥३॥ दिवस ने राति हियडे धरे
रो धरू, मूढ मन रीझवा वलिय माया करूं ॥
तूंहि अरिहंत जाणे जिस्यो आचरूं, तेम क
र जेम ससार सागर तरूं ॥ ४ ॥ कम्मवसि
सुख ने दुःख जे हु सहुं, मन तणी वात अरिहं
त किणने कहू ॥ करि दया करि मया देव क
रुणा परा, दुःख हरि सुक्ख करि सामि सीमंध
रा ॥ ५ ॥ जाण संयोग आगम वयण पण सु
णु, धर्म न कराय प्रभु पाप पोतें घणुं ॥ एक
अरिहंत तू देव बीजो नहिं, एह आधार जग
जाणजो अम्ह सही ॥ ६ ॥ धण कणय माय
पिय पुत्त परियण सहू, हस्यो बोल्यो रम्यो
रग रातो बहू ॥ जयो जयो जगगुरु जीव जी
न धरा, तुम्ह समो वड नहिं अवर वाल्हेसरा
॥ ७ ॥ अमिय सम वाणि जाणु सदा साम्भलुं,
बारवर परपदामाहि आवी मिलु ॥ चित्त जा
णुं सदा सामि पाय उलगुं, किम करू ठाम पुं

रुगिरि वेगळु ॥ ८ ॥ जोलिडा जगति तूं चित्त हारे किस्ये, पुण्य सयोग प्रभु दृष्टिगोचर हु स्ये ॥ जेहने नामें मन वयण तन उल्लसे, दूर थी ढूकडा जेम हियडे वसे ॥ ए ॥ जल जलो एणि ससार सहु ए अछे, सामि सीमंधरा ते सहू तुम पछें ॥ ध्यान करता सुपनमाहि आ वी मिले, देखियें नयण तो चित्त आरति टले ॥ १० ॥ साम सोहामणा नाम मन गहगहे, तेहशु नेह जे वात तुम्ह जी कहे ॥ तुम्ह पय जेटवा अति घणो टलवलुं, पख जो होय तो सहिय आवी मिलु ॥ ११ ॥ मेरुगिरि लेखणी आज कागल करुं, क्षीरसागर तणा दूध खडि या जरु ॥ तुम्ह मिलवा तणा सामि सदेशडा, इंद्र पण लखिय न शके अछे एवडा ॥ १२ ॥ आपणे रग जरि वात सुख जेटली, ऊपजे सामि न कहाय सुख तेटली ॥ सुणो सीमंधरा राजराजेसरा, लारू ने कोड प्रभु पूर सवि

मादरा ॥ १३ ॥ पुव भवि मोर [illegible] जेहने, समरियें एणि ससार नि[illegible]या [illegible] हने मोर जिम कमल भमरो रमे[illegible] तेम [illegible] त तू चित्त मोरे गमे ॥ १४ ॥ ख[illegible] कम्मवसि ध्यान हियडे वस्यु, वापडु पाप हि[illegible]त अरिहं [illegible]रशे किस्यु ॥ गम जिम गरुडवर प[illegible] देव [illegible] वही, ततखिण सर्पनी जाति न श[illegible] सीमं[illegible] ॥ १५ ॥ पाप मे कळ सावळ सहु परिहरी, स[illegible] मि सीमधरा तुम्ह पय अणुसरी ॥ शुद्ध चा[illegible] रित्र कहियें प्रभु पालशु, दुख भणार संसार भय टालशु ॥ १६ ॥ तुम्ह हु दास हुं तुम्ह से वक सही, एह मे वात अरिहंत आगल कही ॥ एवडी माहरी भगति जाणी करी, आपजो वापजी सार केवल सही ॥१७॥ कलश ॥ एम ऋध्दि वृध्दि, समृध्दि कारण, दुरित वारण, सुख करो ॥ उवझाय वर श्री,भक्ति लाभे, थुण्यो श्री, सीमंधरो ॥ जय जयो जगगुरु,जीव जीवन [illegible]

मरगिरि वेगलुं ।भणी ॥ कर जोडि वलि वलि,
द्दारे किस्ये, पुर आशा, मन तणी ॥१८॥ इति
स्ये ॥ जेहने नी स्तुति सपूर्ण ॥
थी ढूकडा ज्अंचमी व्ह स्तवन प्रारन ॥
एणि ससारु श्रीगुरु पाय, निर्मल न्यान उपा
सहू तुम ।मे तप नणु ए, जन्म सफल गिणुं ए
वी मिल्वेधउवीसमो जिनचद, केवल न्यान दि
णद ॥ त्रिगडे गह गह्यो ए, नवियणने कह्यो
ए ॥ २ ॥ न्यान वडू ससार, न्यान सुगति दा
तार ॥ न्यान दीवो कह्यो ए, साचो सर्दह्यो
ए ॥ ३ ॥ नयन लोचन सुविलास, लोकालो
क प्रकाश ॥ न्यान विना पशु ए, नर जाणे कि
श्यु ए ॥ ४ ॥ अधिक आराधक जाण,नगवती
सूत्र प्रमाण ॥ न्यानी सर्वतु ए, किरिया देश
तु ए ॥ ५ ॥ न्यानी श्वासोच्छ्वास, करम करे जे
नास ॥ नारकीने सही ए, कोड वरस कही ए ॥
॥ ६ ॥ न्यान तणो अधिकार, बोल्या सूत्र मझा

र ॥ किरिया ठे सही ए, पण पाछें करी ए॥ ॥ ७ ॥ किरिया सहित जो ग्यान, हुवे तो ज ति परधान ॥ सोनो ने सूरो ए, शंख दूधें भर्यो ए ॥ ८ ॥ महानिशीथ मकार, पांचमि अ क्षर सार ॥ नगवत साखीयो ए, गणधर साखियो ए ॥ ए ॥

॥ ढाल दूजी ॥ कालहरानी देशी ॥

॥ पाचमि तप विधि सांजलो, जिम पामो नवपारो रे ॥ श्रीअरिहंत इम उपदिशे, नवि यणने हितकारो रे ॥ पा० ॥ १ ॥ मिगसर मा ह फागुण नला, जेठ आषाढ वैशाखो रे॥ इण षटमासें लीजिये, शुनदिन सद्गुरु साखो रे ॥ पा० ॥ २ ॥ देव जुहारी देहरें, गीतारथ गुरु वंदी रे ॥ पोथी पूजो ग्याननी, सगति हु वे तो नदी रे ॥ पां० ॥ ३ ॥ बे कर जोडी ना वशुं, गुरु मुख करो उपवासो रे ॥ पांचमि पडि कमणो करो, पढो पंकित गुरु ...

॥ ४ ॥ जिण दिन पांचमि तप करो, तिण दिन आरंभ टालो रे ॥ पाचमि स्तवन थुई कहो, ब्रह्मचरिज पिण पालो रे॥पां० ॥५॥ पाच मास लघुपंचमी, जावजीव उत्कृष्टी रे ॥ पाच वरस पाच मासनी,पाचमि करो शुभदृष्टि रे॥पा०॥६॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ उल्लालानी देशी ॥

॥ हिव भवियण रे पाचमी उजमणो सुणो, घर सारू रे वारू धन खरचो घणो ॥ ए अवसर रे आवंता वलि दोहिलो, पुण्यजोगें रे धन पामंता सोहिलो ॥ उल्लालो ॥ सोहिलो वलिय धन पामता पण धर्मकाज किहा वली, पाचमीदिन गुरु पास आवी कीजीयें काउस्सग्ग रली॥ त्रण ज्ञान दरिसण चरण टीकी देइ पुस्तक पूजिये, थापना पहिली पूज केसर सुगुरु सेवा कीजियें ॥१॥ ढाल ॥ सिध्धातनी रे पाच प्रति वींटागणा, पाच पूठा रे मखमल सूत्र प्रमुख तणा ॥ पाच डोरा रे लेखण पाच मजीसणा,

वागरूपा रे कांबी वारू वतरणा ॥ उल्लालो ॥ वतरणा वारू वली द् कमली पाच झिलमिल छति नली, स्थापनाचारिज पाच ठवणी दृ दृपत्ती पडपाटली ॥ पटसूत्र पाटी पंच कोथल पच नवकरवालिया, इण परे श्रावक करे पंचम ऊजमणुं उजवालिया ॥२॥ ढाल॥ वलि देहरे रे स्नात्र महोत्सव कीजियें, घर सारू रे दान वली तिहां दीजिये ॥ प्रतिमानी रे आगल ढोवणु ढोइयें, पूजाना रे जे जे उपगरण जोइयें ॥ उल्लालो ॥ जोइये उपगरण देवपूजा काजके लश भृंगार ए, आरति मङ्गलथाल दीवो धूपधाणु सार ए ॥ घनसार केशर अगर सुखड अगलूहणुं दीस ए, पच पंच सघली वस्तु ढोवो सगतिशुं पचवीश ए ॥३॥ ढाल ॥ पांचमिना रे सहाम्मी सर्व जिमाडिये, रात्रिजोगें रे गीत रसाल गवाडियें ॥ इण करणी रे करतां ज्ञान आराधियें, ज्ञान दरिसण रे

धिये ॥ उल्लालो ॥ साधियें मारग एह करणी ज्ञान लहियें निरमलो, सुर लोक नें नरलोक मांहे ज्ञानवत ते आगलो ॥ अनुक्रमे केवल ज्ञान पामी सासता सुख जे लहे, जे करे पांचमी तप अखन्डित वीर जिणवर इम कहे ॥

॥ ४ ॥ कलश ॥ एम पंचमी तप, फल प्ररूपक, वर्द्धमान, जिणेसरो॥में थूण्यो श्री, अरिहंत जगवंत, अतुल बल, अलवेसरो ॥ जयवंत श्री जिन,चंद सूरिज,सकल चद,नमसियो ॥ वाचना चारिज, समयसुंदर, जगति जाव, प्रकासियो ॥

॥ ३५ ॥ इति श्रीपचमीवृध्दस्तवन संपूर्णम् ॥

॥ अथ पार्श्वजिन अथवा लघुपंचमी स्तवन ॥

॥ पाचमि तप तुमे करो रे प्राणी, निर्मल पामो ज्ञान रे ॥ पहिलुं ज्ञान ने पछें किरिया, नहिं कोइ ज्ञान समान रे ॥ पा० ॥ १ ॥ नंदि सूत्रमें ज्ञान वखाण्यु, ज्ञानना पच प्रकार रे ॥ मति श्रुत अवधि अने मन पर्यव, केवल ज्ञा

न श्रीकार रे ॥ पा० ॥ २ ॥ मति अठावीश श्रु
त चवदे वीश, अवधि ठ असंख्य प्रकार रे॥
दोय नेद मन पर्यव दाख्यु, केवल एक प्रकार
रे ॥ पा० ॥ ३ ॥ चंद्र सूरज ग्रह नक्षत्र तारा,
तेशु तेज आकाश रे ॥ केवल ज्ञान समु न
हिं कोई, लोकालोक प्रकाश रे ॥ पा० ॥ ४ ॥
पार्श्वनाथ प्रसाद करीने, महारी पूरो उमेद
॥ समयसुंदर कहे हुं पण पामुं, ज्ञाननो पं
मो नेद रे ॥ पा० ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजि० ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ अमल कमल जिम धवल बिराजे, गाजे गोडी
पास ॥ सेवा सारे जेहनी, सुर नर मन धरिय
उल्लास ॥ १ ॥ सोनागी साहिब मेरा वे, अरिहा
सुग्यानी पास जिणंदा वे ॥ ए आंकणी ॥ सुंदर
सूरति मूरति सोहे, मोमन अधिक सुहाय ॥ पल
क पलक मे पेखता मानुं, नव नवि उबिय देखा
य ॥ २ ॥ सोना० ॥ अ० ॥ जब हुं ख नंजन ज

नमनरंजन, खंजन नयनशुं रंग ॥ श्रवण सु
णी गुण तादृश, मादृशं विकस्यां अगो अंग
॥३॥ सो० ॥ अ० ॥ दूरथकी हुं आयो वहिने,
देव लह्यो दीदार ॥ प्रारथिया पहिडे नहिं, सा
हिबा एह उत्तम आचार ॥४॥ सो० ॥ अ० ॥
प्रभु मुखचद विलोकित हरषित, नाचत नयन
चकोर ॥ कमल हसे रवि देखिने, जिम जलधर
आगम मोर ॥ ५ ॥ सो० ॥अ०॥ किसके हरि
हर किसके ब्रह्मा, किसके दिलमे राम ॥ मेरे
मनमे तुं वसे,साहिब शिवसुखनोही गम ॥सो०
॥अ०॥६॥ माता वामा धन्य पिता जसु, श्रीअ
श्वसेन नरेश ॥ जनमपुरी वणारसी, धन धन
काशीनो देश ॥सो०॥अ०॥७॥ सवत सतरेशें
बावीशें,वदि वैशाख वखाण ॥ आठम दिन भले
भावशु, मारी जात्र चढी परिमाण ॥ सो० ॥
अ० ॥ ८ ॥ सान्निध्यकारी विघ्ननिवारी, परउप
गारी पास ॥ श्रीजिनचद जुहारता, मोरी सफ

ल फली सहु आशा ॥ सो०॥ अ० ॥ए॥ इति

॥ अथ विमलजिनस्तवनम् ॥

॥ घर अगण सुरतरु फल्यो जी, कवण क
नक फल खाय ॥ गयवर बाध्यो बारणें जी, खं
र किम आवे दाय ॥१॥ विमलजिन महारी तु
म्हशु प्रीति, सुर सकलकितशुं मिल्यां जी,
हियडु हींसे केम ॥ वि० ॥ २ ॥ मन गमता मे
वा लही जी, कुण खल खावा जाय ॥ आदर
साहिबनो लही जी, कुण ल्ये राक मनाय ॥
वि० ॥ ३ ॥ रत्न छते कुण काचने जी, अलवे
पसारे हाथ ॥ कुण सुरतरुथी कठिनें जी, बाव
ल घाले बाथ ॥वि०॥४॥ देव अवर जो हुं करु
जी, तो प्रभु तुमची आण ॥ श्रीजिनराज नवो
नवें जी, तुहिज देव प्रमाण ॥वि०॥५॥ इति ॥

॥ अथ एकादशी वृ॰ह स्तवनं ॥

॥ समवसरण बेठा भगवत, धरम प्रकाशे
श्रीअरिहत ॥ बारे परषदा बेठी जी

र शुदि इग्यारश वडी ॥२॥ मल्लिनाथना तीन कल्याण, जनम दीक्षा ने केवल ज्ञान ॥ अर दीक्षा लीधी रूवडी ॥मा०॥३॥ नमिने ऊपनु केवल ज्ञान, पाच कल्याणक अति परधान ॥ ए तिथिनी महिमा एवडी ॥ मा० ॥ ३ ॥ पाच नरत ऐरवत इमहीज, पाच कल्याणिक हुवे तिमहीज ॥ पचासनी सख्या परगडी ॥ मा० ॥ ॥ ४ ॥ अतीत अनागत गणता एम, दोढशें कल्याणक थाये तेम ॥ कुण तिथ ठे ए तिथि जे वडी ॥ मा० ॥ ५ ॥ अनंत चोवीशी इण परें गिणो,लाज अनत उपवासा तणो ॥ ए तिथि सहु तिथि शिर राखडी ॥ मा० ॥ ६ ॥ मौनप णें रह्या श्रीमल्लिनाथ, एक दिवस संयम व्रत साथ ॥ मौन तणी परि व्रत इम पढी ॥ मा० ॥ ॥ ७ ॥ अठ पुहरी पोसो लीजियें, चोविहार वि धिशु कीजियें ॥ पण परमाद न कीजें घडी ॥ ॥ मा०॥८ ॥ वरस इग्यार कीजें उपवास, जाव

ल फली सद्गु आशा ॥ सो०॥ अ० ॥ए॥ इति॥

॥ अथ विमलजिनस्तवनम् ॥

॥ घर अगण सुरतरु फल्यो जी, कवण क नक फल खाय ॥ गयवर बाध्यो बारणें जी, ख र किम आवे दाय ॥१॥ विमलजिन महारी तु म्हशु प्रीति, सुर सकलकितशु मिल्यां जी, हियडु हींसे केम ॥ वि० ॥ २ ॥ मन गमता मे वा लही जी, कुण खल खावा जाय ॥ आदर साहिबनो लही जी, कुण ल्ये राक मनाय ॥ वि० ॥ ३ ॥ रत्न छते कुण काचने जी, अलखे पसारे हाथ ॥ कुण सुरतरुथी काढिनें जी, बाव ल घाले बाथ ॥वि०॥४॥ देव अवर जो हुं करुं जी, तो प्रभु तुमची आण ॥ श्रीजिनराज नवो नवें जी, तुंहिज देव प्रमाण ॥वि०॥५॥ इति ॥

॥ अथ एकादशी स्तवनं ॥

॥ समवसरण बेठा भगवत, धरम प्रकाशे श्रीअरिहंत ॥ बारे परषदा बेठी सही.

र शुदि इग्यारश वडी ॥२॥ मल्लिनाथना तीन कल्याण, जनम दीक्षा ने केवल ज्ञान ॥ अर दीक्षा लीधी रूवडी ॥मा०॥२॥ नमिने ऊपनु केवल ज्ञान, पाच कल्याणक अति परधान ॥ ए तिथिनी महिमा एवडी ॥ मा० ॥ ३ ॥ पांच भरत ऐरवत इमहीज, पाच कल्याणिक हुवे तिमहीज ॥ पचासनी सख्या परगडी ॥ मा० ॥ ॥ ४ ॥ अतीत अनागत गणता एम, दोढसों कल्याणक थाये तेम ॥ कुण तिथ छे ए तिथि जे वडी ॥ मा० ॥ ५ ॥ अनत चोवीशी इण परें गिणो,लाभ अनंत उपवासा तणो ॥ ए तिथि सहु तिथि शिर राखडी ॥ मा० ॥ ६ ॥ मौनपणें रह्या श्रीमल्लिनाथ, एक दिवस संयम व्रत साथ ॥ मौन तणी परि व्रत इम पडी ॥ मा० ॥ ॥ ७ ॥ अठ पुहरी पोसो लीजियें, चोविहार विधिशु कीजियें ॥ पण परमाद न कीजें घडी ॥ ॥ मा०॥८ ॥ वरस इग्यार कीजें उपवास, जाव

ल फली सहु आश ॥ सो०॥ अ० ॥१॥ इति

॥ अथ विमलजिनस्तवनम् ॥

॥ घर अगण सुरतरु फल्यो जी, कवण क
नक फल खाय ॥ गयवर बांध्यो बारणें जी, ख
र किम आवे दाय ॥१॥ विमलजिन महारी तु
म्हशु प्रीति, सुर सकलंकितशुं मिल्यां जी,
दियडु हींसे केम ॥ वि० ॥ २ ॥ मन गमता मे
वा लही जी, कुण खल खावा जाय ॥ आदर
साहिबनो लही जी, कुण ल्ये राक मनाय ॥
वि० ॥ ३ ॥ रत्न छते कुण काचने जी, अलवे
पसारे हाथ ॥ कुण सुरतरुथी कठिनें जी, बाव
ल घाले बाथ ॥वि०॥४॥ देव अवर जो हुं करुं
जी, तो प्रभु तुमची आण ॥ श्रीजिनराज जवो
भवें जी, तुहिज देव प्रमाण ॥वि०॥५॥ इति ॥

॥ अथ एकादशी वृद्ध स्तवनं ॥

॥ समवसरण बेठा भगवत, धरम प्रकाशे
श्रीअरिहंत ॥ बारे परपदा बैठी सुरी,

जीव पण अधिक उल्हास ॥ ए तिथि मोक्ष त
णी पावडी ॥ मा० ॥ ए ॥ ऊजमणुं कीजें श्री
कार, ज्ञानना उपगरण इग्यार इग्यार ॥ करो
काउसग्ग गुरु पाये पडी ॥ मा० ॥ १० ॥ देहरे
स्नात्र करीजे वली, पोथी पूजीजे मन रली ॥
मुगतिपुरी कीजें ढूकडी ॥ मा० ॥ ११ ॥ मौन
इग्यारस महोटु पर्व, आराध्या सुख लहियें
सर्व ॥ व्रत पच्चरकाण करो आखडी ॥ मा० ॥
॥ १२ ॥ जेसल शोल इक्याशी समे, कीधुं स्त
वन सहू मन गमे ॥ समयसुंदर कहे करो पा
वडी ॥ मा० ॥ १३ ॥ इति श्रीएकादशीस्त०॥

॥ अथ श्रीपार्श्वजिनस्तवन ॥

॥ तुं मेरे मनमे तु मेरे दिलमें, ध्यान धरुं
पल पलमें ॥ पास जिणेसर अन्तरजामी,
सेव करुं छिन छिनमें ॥ तु० ॥ १ ॥ काहूको मन
तरुणीशुं राच्यो, काहूको चित्त धनमें ॥ मेरो
मन प्रभु तुमहीशु राच्यो, ज्युं चातक चित्त घ

वन तिलो रे ॥ विमल वसइ वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेतशिखर सोहामणो, रलियामणो रे ॥ सिध्दा तीर्थंकर वीश ॥ती०॥ नयरी चंपा निरखीयें, हैये हरखीयें रे ॥ सिध्दा श्रीवासुपूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशों पावापुरी, ऋध्दें भरी रे ॥ मुक्ति गया महावीर ॥ ती० ॥ जेसलमे जुहारीयें, दुःख वारीयें रे ॥ अरिहंत बिंब अनेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ विकानेरज वंदीयें, चिर नंदीये रे ॥ अरिहंत देहरां आठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो सखेसरो, पंचासरो रे ॥ फलोधी थंभण पास ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरिक अजावरो, अमीझरो रे ॥ जीरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो, जात्रा करो रे ॥ राणपुरे रिसहेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ श्रीनाडुलाई जादवो, गोडी स्तवो रे ॥ श्रीवरकाणो पास ॥ ती० ॥ नंदीश्वरना देहरा, बावन भला रे ॥ रुचक कुंडल चाक चार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वती अशा

सठवाद ॥ ते परमेसर विण मिथ्या रे, किम वाधे उत्सादो रे ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीर थकां पण श्रुत तणो रे, हुतो परम आधार ॥ हमणां श्रुत आधार छे रे, ए जिन आगम सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इण कालें सवि जीवने रे, आगमथी आनद ॥ ध्यावो सेवो नविजना रे, जिनपडिमा सुखकदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आचारिज मुनि रे, सहुनें इण परसिद्ध ॥ नव नव आगम सगथी रे, देवचन्द्र पद लीधो रे ॥ वीर० ॥ ए ॥ इति निर्वाणकल्याणक स्तव०॥

॥ अथ श्रीतीर्थमालास्तवनम्॥

॥ शत्रुजय ऋषन्न समोसस्या, नला गुण नस्या रे ॥ सिद्धा साधु अनत, तीरथ ते नमुं रे ॥ तीन कल्याणक तिहां थया, मुगते गया रे ॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो, गिरिसेहरो रे ॥ नरतें नराव्यां विंव ॥ ती० ॥ आबु चौमुख अति नलो

नीरजनशुं नेह धरीने, आगे उछग करस्यां॥ अभुत आदि जिनेसर निरखी, प्रेम सुधारस पीस्या रे॥ आ० ॥ ५ ॥ पुहप सुगंधा लेइ प चरंगा, हार सुगंधा गूथी॥ पहिरावी प्रभु कठें लहिस्यां, शिव मारगनी सुथी रे॥ आ० ॥६॥ गहिर स्वरे जिनवर गुण गातां, जात्र नवाणूं करियें॥ मन गमती जमती विच जमता, जव सायर निसतारिये रे॥ आ० ॥ ७ ॥ पूरव न वाणुं वार प्रथम जिन, रायण रूखे आया॥ ए तीरथ शुन जावें फरसी, करिये निरमल काया रे॥ आ० ॥ ८ ॥ लाज उदे ए गिरिवर ल हियें, कहे इम केवल नाणी॥ श्रीजिनचद स दा हित वत्सल, प्रेम घणे चित्त आणी रे॥ आ० ॥ ए ॥ इति सिद्धाचल स्तवनम्॥

॥ अथ उपदेशमाला पोसह सिद्धाय लि० ॥

॥ जग चूडामणिजूउ, उसजो वीरो तिलो य सिरि तिलउ॥ एगो लोगाइच्चो, एगो चक्कू

श्वती, प्रतिमा गती रे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ तीरथ जात्रा फल तिहां, होजो मुज इहां रे ॥ समयसुंदर कहे एम ॥ ती० ॥ ८ ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ आज आपे चालो सहीयो, सिद्धाचल गिरि जायें ॥ सिद्धाचलगिरि जईए बहेनी, विमलाचलगिरि जईएं रे ॥ आ० ॥ सुण बहेनी ए गिरिनी महिमा, आदि जिनंद इम भाखी ॥ भरतादिक नरपतिने आगल, इंद्रादिक सहु साखी रे ॥ आज० ॥ ॥ १ ॥ इण गिरिवरिये काल अनंते, साधु अनन्ता सीधा ॥ जन्म मरणना दुःख छोडीने, अमल अखय गुण लीधा रे ॥ आ० ॥ २ ॥ इण गिरि सन्मुख पगलां भरतां, आतम शुद्ध सुभावें ॥ कोडि भवारा पातक कीधा, एक पलकमें जावे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ सासतो तीरथ ए शेत्रुंजो, जोतां लागे मीठो ॥ तीन भुवनमे इण गिरि तोले, बीजो कोइ न दीठो रे ॥ आ०

प्पहाणागमो महुरवक्को ॥ गंभीरो धिइमंतो, उ
वएसपरो य आयरिउ ॥ए॥ अपरिस्सावी सो
मो, सगहसीलो अभिग्गहमई य ॥ अविकह
णो अचवलो, पसंतहियउ गुरू होई ॥ १० ॥
कइयावि जिणवरिंदा, पत्ता अयरामर पह दा
ऊं ॥ आयरिएहिं पवयणं,धारिज्जइ सपय सय
लं ॥ ११ ॥ अणुगम्मए भगवई, रायसुयज्जा
सहस्स वंदेहिं ॥ तहवि न करेइ माणं, परिय
च्छइ त तहा नूण ॥ १२ ॥ दिण दिख्खियस्स दम
ग, स्स अभिमुहा अज्जचंदणा अज्जा ॥ नेच्छइ
आसणगहणं, सो विणउ सव अज्जाण ॥ १३ ॥
वरससय दिख्खियाए, अज्जाए अज्जदिख्खिउ सा
हू ॥ अभिगमण वंदण नम, सणेण विणएण
सो पुज्जो ॥ १४ ॥ धम्मो पुरिसप्पभवो, पुरिसव
रदेसिउ पुरिसजिट्ठो ॥ लोएवि पहू पुरिसो, किंपु
ण लोगुत्तमे धम्मे ॥ १५ ॥ संवाहणस्सरस्सो,
तइया वाणारसीइ नयरीए ॥ कन्ना सहस्समहि

तिहुअणस्स ॥ १ ॥ सवत्थरमुसन्न जिणो, च
म्मासे वद्धमाण जिणचदो ॥ इइ विहरिया नि
रसणा, जए जए उवमाणेण ॥ २ ॥ जइता ति
लोयनाहो, विसहइ बहुयाइ असरिसजणस्स
॥ इय जीयतकराइं, एस खमा सवसाहूणं॥ ३ ॥
न चइजइ चालेउ, महइ महावद्धमाण जिण
चदो ॥ उवसग्ग सहस्सेहिं वि,मेरु जहा वायगुं
जाहिं ॥ ४ ॥ भद्दो विणीय विणउ, पढम गण
हरो समत्त सुयनाणी॥जाणंतो वि तमत्थं, विम्हि
य हियउ सुणइ सव ॥ ५ ॥ ज आणवेइ राया,
पयइउ त सिरेण इच्छति ॥ इय गुरुजण मुह भ
णिय, कयजलिउडेहिं सोयवं ॥ ६ ॥जह सुरग
णाण इदो, गहगणतारागणाण जह चंदो॥ज
हय पयाण नरिंदो, गणस्स वि गुरु तहाणंदो
॥ ७ ॥ बालुत्ति महीपालो, न पया परिहवइ ए
स गुरु उवमा ॥ जवा पुरउ काउं, विहरंति मु
णी तहा सोवि ॥ ८ ॥ पडिरूवो

वि सीउन्ह वायविच्चडिउ ॥ संवछरमणसीउ, वाहुवली तह किलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियगमइ विगप्पिय चिं, तिएण सच्छंदवुद्धिचरिएण ॥ कत्तो पारत्तहियं, कीरइ गुरु अणुवएसेण ॥ २५ ॥ थद्धो निरोवयारी, अविणीउ गविउ निरवणामो ॥ साहुजणस्स गरहिउ, जणेवि वयणिज्जयं ल हइ ॥ २६ ॥ थोवेण वि सप्पुरिसा, सणंकुमारु व केइ वुज्झति ॥ देहे खणपरिहाणी, जकिर देवेहिं से कहियं ॥ २७ ॥ जइता लवसत्तम सुर, विमा ण वासीवि परिवडति सुरा ॥ चिंतिज्जतं सेसं, सं सारे सासय कयरं ॥ २८ ॥ कहतं नन्नइ सुक्खं, सुचिरेण वि जस्स डुक्खमल्लिहियए॥जं च मरणा वसाणे, नव ससाराणुवंधिं च ॥ २९ ॥ उवएस सहस्सेहिं, वोहिज्जतो न वुभई कोई ॥ जह वम्भदत्तराया, उदाइनिव मारउ चेव ॥ ३० ॥ ग यकन्न चंचलाए, अपरिचत्ताइ रायलच्छीए ॥ जीवासकम्म कलिमल, भरिय भरातो पडति

य, आसी किररूववतीणं ॥१६॥ तह वि य सा
रायसिरी, उल्लट्टंती न ताइया ताहिं ॥ अयरठि
एए इक्के, ए ताइया अगवीरेण ॥ १७ ॥ मरि
लाणसु वद्धयाण वि, मज्जाउ इह समत्त घरसा
रो ॥ रायपुरिसेहिं निज्जइ,जणेवि पुरिसो जहिं
नत्थि ॥ १८ ॥किं परजण वद्धुजाणा,वणाहिं व
रमप्प सक्खियं सुकयं ॥ इह नरहचक्कवट्टी, पस
न्नचंदो य दिठ्ठता ॥ १९ ॥ वेसो वि अप्पमाणो,
असजम पएसु वट्टमाणस्स ॥ किं परियत्तियवे
स, विसं न मारेइ खज्जंतं ॥ २० ॥ धम्मं रक्कइ
वेसो,सकइ वेसेण दिक्खिउमि अहं ॥ उम्मग्गेण
पढंत, रक्कइ राया जणवउ य ॥ २१ ॥ अप्पा
जाणइ अप्पा, जहठ्ठिउ अप्पसक्खिउ धम्मो ॥
अप्पा करेइ तं तह, जह अप्पसुहावहं होई ॥
॥ २२ ॥ ज ज समयं जीवो, आविस्सइ जेण
जेण नावेण ॥ सो तमि तंमि समए, सुहासुहं
बधए कम्मं ॥ २३ ॥ धम्मो हुंतो

वोसिरियं ॥ ४ ॥ आसव कसाय बंधण, कल
हा ब्नखाण परपरीवाउ ॥ अरइ रई पेसुन्न, मा
या मोस च मिच्छत्तं ॥५॥ वोसिरिसु इमाइं मु, क्ख
मग्ग ससग्ग विग्ध भूआइं ॥ डुग्गइनिबंध
णाइं,अठारस पावठाणाइं ॥ ६ ॥ एगो ह नत्थि
मे कोइ, नाहमन्नस्स कस्सवि ॥ एव अदीणम
णसो, अप्पाण मणुसासए ॥७॥ एगो मे सास
उ अप्पा,नाण दंसणसज्जुउ॥सेसा मे बाहिरा भा
वा, सबे सजोगलक्कणा ॥ ८ ॥ सजोग मूला
जीविण, पत्ता डुक्कपरपरा ॥ तम्हा संजोग सं
बंधं, सव तिविहेण वोसिरे ॥ ए ॥ अरिहंतो म
ह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ॥ जिणपन्न
त्तं तत्त,इयसम्मत्तं मए गहियं ॥१०॥ चत्तारि म
गलं,अरिहंता मगलं, सिद्धा मगलं,साहू मग
लं, केवलिपन्नत्तो धम्मो मगलं, चत्तारि लोगुत्त
मा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलि पन्नत्तो धम्मो लोगुत्त

अहे ॥ ३१ ॥ वोत्तूणवि जीवाए, सङ्करा इति पावचरियाउ ॥ नयवजा सा सासा, पन्नाएसो हु इणमो ते ॥३२॥ पडिवज्जिऊण दोसे, नियए सम्म च पायवडियाए ॥ तो किर मिगावईए,उ पन्नं केवल नाण ॥ ३३ ॥ इति पोसह सिन्ना० ॥

॥ अथ राईसथारा पोसह सिन्नाय ॥

॥ निस्सिही निस्सिही नमो खमासमणाणं, गोयमाईण ॥ महामुणीणं ॥ नवकार ३, करेमि भंते ३,कहियें अणुजाणह जिहिज्जा, अणुजा णह परमगुरु. गुणगणरयणेहिं मंमिअसरीरा॥ बहुपडिपुन्ना पोरिसि, राईसथारए गमि ॥ १ ॥ अणुजाणह संथार, बाहुवहाणेण वामपासेणं ॥ कुक्कुड पाय पसारण, अंतरं तु पमज्जए नूमिं ॥ २ ॥ संकोइय संमास, उवट्टंतेय काय पडिले हा ॥ दवाई उवउग, ऊसासनिरुंमणालोयं ॥ ॥ ३ ॥ जइ मे हुज्ज पमाउ, इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए ॥ आहार सुवहि ति

सु ॥ तिरिएसु हुंति चउरो, चउदस लक्खा य मणुएसु ॥ २ ॥ खामेमि सवजीवे. सवे जीवा खमंतु मे ॥ मित्ती मे सवभूएसु,वेरं मचं न केण वि ॥ ३ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहि अ डुगछिअं सम्मं ॥ तिविहेण पडिकंतो, वदामि जिणे चउवीस ॥४॥ खमिअ खमाविअ मइ खमिअ,सवह जीव निकाय॥सिद्धहसाख आलोयणह,मचह वेर न भाय॥५॥सवे जीवा कम्मवसु, चउदह राज भमंतु ॥ ते मइ सव खमाविया,मच वि तेह खमतु ॥६॥ इति राई सथारा गाथा स०॥

॥ अथ निंदावारक सचाय ॥

॥ निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदा ना बोल्या महापाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करता न गणे माय बाप रे ॥ नि० ॥ १ ॥ दूर बलती का देखो तुम्हें रे, पगमा बलती देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलमा धोया लूगडां रे, कहो केम ऊजला होय रे ॥ नि०

मो ॥ चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहूसरणं पवज्जामि, केवलि पन्नत्त धम्म सरणं पवज्जामि ॥ अरिहंता मंगलं मज्झ, अरिहंता मज्झ देवया॥ अरिहंता कित्तिअत्ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ १ ॥ सिद्धा य मंगलं मज्झ, सिद्धा य मज्झ देवया ॥ सिद्धा य कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ २ ॥ आयरिया मंगलं मज्झ, आयरिया मज्झ देवया ॥ आयरिया कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ३ ॥ उवज्झाया मंगलं मज्झ, उवज्झाया मज्झ देवया ॥ उवज्झाया कित्तिअत्ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥४॥ साहूणो मंगलं मज्झ, साहूणो मज्झ देवया ॥ साहूणो कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥५॥ पुढवि दग अगणि मारुय, इक्किके सत्त जोणि लक्खाउ ॥ वणपतेय अणंते, दस चउदस जोणि लक्खाउ ॥ १ ॥ विगलिंदिएसु दो दो, चउरो ... य नारए.

सु ॥ तिरिएसु हुंति चउरो, चउदस लक्खा य मणुएसु ॥ २ ॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे ॥ मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मझं न केण वि ॥ ३ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहि अ डुगंछिअ सम्म ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥४॥ खमिअ खमाविअ मइ खमिअ, सवह जीव निकाय ॥ सिद्धह साख आलोयणह, मझह वेर न भाय ॥५॥ सव्वे जीवा कम्मवसु, चउदह राज भमंतु ॥ ते मइ सव खमाविया, मझ वि तेह खमतु ॥६॥ इति राई संथारा गाथा सं०॥

॥ अथ निंदावारक सझाय ॥

॥ निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदा नां बोल्या महापाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करता न गणे माय बाप रे ॥ निं० ॥ १ ॥ दूर बळंती का देखो तुम्हें रे, पगमां बळती देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलमां धोयां लुगडा रे, कहो केम ऊजला होय रे ॥ निं०

॥ २ ॥ आप सभालो सहुको आपणो रे, निं दानी मूको परी टेव रे ॥ थोडे घणे अवगुणे सहु भर्यां रे, केहना नलीया चुए केहना नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकी रे, तप जप कीधु सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो करजो आपणी रे, जेम छुटकबारो थाय रे ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो सहुको तणो रे, जेह मा देखो एक विचार रे ॥ कृष्णपरें सुख पाम शो रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥निं०॥५॥इति॥

॥ अथ सीता सिवाय लिख्यते ॥

॥ जल जलती मिलती घणी रे, झाली अ ल अपार रे ॥ सुजाण सीता ॥ जाणे केसू फ लिया रे लाल, राता खैर अङ्गार रे ॥ सु० ॥१॥ धीज करे सीतासती रे लाल ॥ शील तणे परि माण रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम खुशी थया रे लाल, निरखे राणो राण रे ॥ सु० ॥ २ ॥ स्ना न करी निरमल जलें रे पावक

आय रे ॥ सु० ॥ कभी जाणे सुराङ्गना रे लाल, अनुपम रूप दिखाय रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ नर नारी मिलिया घणा रे लाल, कभा करे हाय हाय रे ॥ सु० ॥ भस्म हुशी इण आगमें रे लाल, राम करे अन्याय रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ राघव विन वाछ्यो हुवे रे लाल, सुपनेही न हिं कोय रे ॥ सु० ॥ तो मुझ अगन प्रजलजो रे लाल, नहिं तो पाणी होय रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ इम कहि पेठी आगमें रे लाल, तुरत अगन थयो नीर रे ॥ सु० ॥ जाणें द्रह जलश्च भयो रे लाल, झीले घरम सुधीर रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ देव कुसुम वरषा करे रे लाल, एह सती शिरदार रे ॥ सु० ॥ सीता धीजें कसरी रे, लाख सारव भरे संसार रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ रलियायत सहुको थया रे लाल, स घले थया उछरंग रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम खुशी थया रे लाल, सीता शील सुरंग रे ॥

ग ॥ हि० ॥ ७ ॥ निशिदिन याकुं ध्यावतां हो ॥ज०॥ जीव तणो उध्धार ॥ कमी नहिं कोइ व स्तुनी हो ॥ज०॥ यादि जगमे सार ॥हि०॥८॥ मनचिंता मनोरथ फले हो ॥ज०॥ वरते कोड कल्याण ॥ शुध्ध मने करी समरता हो ॥ज० ॥ निश्चें पद निर्वाण ॥ हि० ॥ ए॥ ए सरणाने ध्यावतां हो ॥ ज० ॥ नाम तणो आधार ॥ ए सरणाकी कीरति कही हो॥ ज० ॥ ध्यावो मन ह मझार ॥ हि० ॥ १० ॥ संवत् अढारे बावने हो ॥ ज० ॥ पालि सहेर सुखकार ॥ चोथमल इम वीनवे हो ॥ ज० ॥ सुनजो बाल गोपाल ॥ हि० ॥ ११ ॥ इति श्रीमागलिक सरणा ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवन ॥

॥ राग केरबो ॥ चालो देखो री मधुवनको राव ॥ चा० ॥ वामानंदन पास जिनेसर, शिर पर रे वाके चमर ढोलाय ॥ चा० ॥१॥ तारणत रण जिनेसर लख कें ने जिन चित्त

॥ चा०॥२॥ गगादरस उमाहो लागो, कव
हुं वाके मन वच काय ॥ चा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग घाटी ॥ मेरो मन वश कर लीनो, जि
नर प्रभु पास ॥ मे० ॥ अखियां कमल पांख
या, मुख सुंदर जास ॥ मे० ॥ १ ॥ काने कुंड
ल दोय झलके, शशि सूरज सम भास॥ मे०॥
नील वरण तन सोहे, त्रिभुवन परकाश ॥ मे०
॥ २ ॥ प्रभु तुम शरण रहीने, समरुं सासोसा
स ॥ मे०॥ लालचंद अरज सुनीजें, पूरो वांछि
त आस ॥ मे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमजिन पद ॥

॥ठुमरी॥ राग जगलो॥सुणो सुजाण नेमजी,
द्वारे में खडी पुकारु नेम तुही तुंही तुहीं ॥सु०
॥ अरज करत हुं मे पईया परत हु, ईतनी अ
रज मेरी मानो ॥ सुजा० ॥ १ ॥ विन अवगुण
क्यु तजो मेरे साहेब, नेह नजर मोपें भारो ॥

ग ॥ हि० ॥ ७ ॥ निशिदिन याकुं ध्यावतां हो ॥ज०॥ जीव तणो उद्धार ॥ कमी नहिं कोइ व स्तुनी हो ॥ज०॥ याहि जगमें सार ॥हि०॥८॥ मनचिंता मनोरथ फले हो ॥ज०॥ वरते कोड कल्याण ॥ शुद्ध मने करी समरता हो ॥ज० ॥ निश्चें पद निर्वाण ॥ हि० ॥ ए ॥ ए सरणाने ध्यावता हो ॥ ज० ॥ नाम तणो आधार ॥ ए सरणाकी कीरति कही हो ॥ ज० ॥ ध्यावो मन ह मझार ॥ हि० ॥ १० ॥ संवत् अढारे बावने हो ॥ ज० ॥ पालि सहेर सुखकार ॥ चोथमल्ल इम वीनवे हो ॥ ज० ॥ सुनजो बाल गोपाल ॥ हि० ॥ ११ ॥ इति श्रीमागलिक सरणां ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग केरवो ॥ चालो देखो री मधुवनको राव ॥ चा० ॥ वामानंदन पास जिनेसर, शिर पर रे वाके चमर ढोलाय ॥ चा० ॥१॥ तारणत रण जिनेसर लख कें,जेटे जवि चित

। चा०॥२॥ गगादरस उमाह्यो लागो, कव
वाके मन वच काय ॥ चा० ॥ ३ ॥ इति ॥
॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥
॥ राग घाटी ॥ मेरो मन वश कर लीनो, जि
र प्रनु पास ॥ मे० ॥ अखियां कमल पाख
या, मुख सुंदर जास ॥ मे० ॥ १ ॥ काने कुन
दोय ऊलके, शशि सूरज सम न्हास॥ मे०॥
ल वरण तन सोहे, त्रिनुवन परकाश ॥ मे०
२ ॥ प्रनु तुम शरण रहीने, समरुं सासोसा
॥ मे०॥ लालचंद अरज सुनीजें, पूरो वाछि
आस ॥ मे० ॥ ३ ॥ इति ॥
॥ अथ नेमजिन पदं ॥
॥ठुमरी॥ राग जगलो॥सुणो सुजाण नेमजी,
रि मैं खडी पुकारु नेम तुही तुंहीं तुहीं ॥ सु०
। अरज करत हुं मे पईया परत हुं, ईतनी अ
ज मेरी मानो ॥ सुजा० ॥ १ ॥ विन अवगुण
त्यु तजो मेरे साहेब, नेह नजर मोपें मारो ॥

सुजा० ॥ २ ॥ हरख चद नेमी राजेसर,
भवकी चेरी ॥ सुजा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमजिनपदं ॥

॥ राग भैरवी ॥ नेम[ं ...
मोरी रेन दिवस नित लग रहीरे ॥ ने०
॥ १ ॥ पहेली आय उन दोस्ती कीनी,
छे छिटकाय दई रे ॥ पसुअन पर प्रभु दया
कीने, सिवरमणी ते वर लेइ रे ॥ ने० ॥ मो०
केई भविक रसना कर दोस्ती, रत्नविमल
पाय लई रे ॥ ने० ॥ मो० ॥ ३ ॥

॥ अथ पद ॥ राग भैरवी ॥

॥ आज प्रभु तोरे चरण लागि, । ...
में खोई रे ॥ आ० ॥ १ ॥ दरसन कर ...
भयो मेरे, आनद चित्त अब जोई रे ॥ आ०
॥ २ ॥ तुम विन उर न कोई मेरे, देख्यो
वन जोई रे ॥ आ
विनति, तुम प्रभु

॥ अथ पदं ॥

॥ राग भैरवी ॥ रात गई अब प्रात होन
यो, क्या सोये जिया जाग रे ॥रा०॥ दोय घडी
डको अब रहियो, ऊठ धरममें लाग रे ॥ रा०
१ ॥ जिनवाणी उरवीच धार ले, उर भरम
ब त्याग रे ॥ रा० ॥ २ ॥ आनद सुगुरु वच
हित मानो, ए सूधो शिवमाग रे ॥रा०॥३॥

॥ अथ पद ॥

॥ राग भैरवी ॥ तुम बिन दीनानाथ दया
ंधि, कोन खबर ले मेरी रे ॥ तु० ॥ १ ॥ भ्र
त फिर्यो ससार जगतमें, मेटो भवदी फेरी
॥ तु० ॥ २ ॥ भव भवके प्रभु तुम जगनाय
, राखो शरणें तेरी रे ॥ तु० ॥३॥ उदय आ
रो पकड्यो तेरो, सरण ग्रही में तेरी रे॥तु०॥४॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ कडखानी देशी ॥ भाव धरि धन्य दिन
आज सफलो गणुं, आज में सजन आनद पा

सुजा० ॥ २ ॥ हरख चंद नेमी राजेसर, भवकी चेरी ॥ सुजा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमजिनपदं ॥

॥ राग भैरवी॥ नेमजि ... मोरी रेन दिवस नित लग रही रे॥ ने० ॥ १ ॥ पहेली आय उन दोस्ती कीनी, ले छे छिटकाय दई रे ॥ पसुअन पर प्रभु दया कीने, सिवरमणी ते वर लेइ रे ॥ने०॥मो० केई भविक रसना कर दोस्ती, रत्नविमल पाय लई रे ॥ ने० ॥ मो० ॥ ३ ॥

॥ अथ पद ॥ राग भैरवी ॥

॥ आज प्रभु तोरे चरण लागि, ... में खोई रे ॥ आ० ॥ १ ॥ दरसन कर भयो मेरे, आनद चित्त अब जोई रे ॥ आ० ॥ २ ॥ तुम विन उर न कोई मेरे, देख्यो . वन जोई रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ दास तुमारो विनति, तुम प्रभु भव भव होई रे॥

इक कोड लाल रे ॥ श्री० ॥३॥ चरणकमल पिंजर वस्यो, मुझ मनहंस नित्यमेव लाल रे ॥ चरण सरण मोहि आसरो, नवनव देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ अधम उद्धारण गो तुमे, दूर हरो नवडुख लाल रे ॥ कहे जिनहर्ष मया करो, देजो अविचल सुक्ख लाल रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति सीमंधरजिनस्तवनम् ॥

॥ अथ अष्टापदगिरिस्तवनम् ॥

॥ मनडो अष्टापद मोह्यो माहरो जी, नाम जपूं निशि दीस जी ॥ चत्तारी अठ दस दोय वंदीया जी, चिहु दिशि जिन चोवीश जी ॥म०॥१॥ जोजन जोजन अंतरे जी, पावड शाला आठ जी ॥ आठ जोजन उंचु देहरुं जी, डुख दोहग जाये नाठ जी ॥ म० ॥२॥ नरते नराया नला देहरा जी, सो नोंयरां थूज जी ॥ आपे मूरत सेवा करे जी,जाण जोईने ऊज जी ॥म०॥ ॥ ३ ॥ गौतमस्वामी तिहां चढ्या जी, वली ना

यो ॥ हर्ष धरि नजर नरि विमलगिरि
रि, रजत मणि कनक सुरतरु कहायो ॥
॥ १ ॥ पग पग उमग धर पथ नित
न्य दोय चरण तिहां चलत आयो ॥
न दीह जागी सुकृतकी दिशा, आज धन १
गिरि सुजस गायो ॥ ना० ॥ २ ॥ दूर ७
टरी जात्र विधिशुं करी, पुण्यनरूार पोते
यो ॥ वंदत जिनराज मणिरंग सुरगिरि ।८
ऋषभजिनचद सुरतरु कहायो ॥ ना० ॥ ३

॥ अथ सीमधर जिन स्तवनं ॥

॥ श्रीसीमधर साहिबा, वीनतडी
लाल रे ॥ परमातम परमेसरू, आतम
आधार लाल रे ॥ श्री० ॥१॥ केवलज्ञान ।
वाकरु, नागे सादि अनंत लाल रे ॥ नास
लोकालोकको, क्षायिक ज्ञेय अनंत लाल रे॥
श्री०॥२॥ ईन्द्र चन्द्र चक्रीसरू, सुर नर रहे कर
जोड लाल रे ॥ पदपंकज सेवे सदा, अणहुते

गारी, श्रीधमसी सुखकारीराज॥सु०॥७॥इति॥

॥ अथ शखेश्वर स्तवनम् ॥

॥ अंतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रि
जग तुमारो ॥ सांजलीने आव्यो तुम तीरे, ज
नम मरण नय वारो ॥ १ ॥ सेवक अरज करे
छे राज, अमने शिवसुख आलो ॥ ए आंकणी॥
सहुकोना मनवांछित पूरो, चिंता सहुनी चूरो
॥ एह विरुद छे राज तुमारुं, किम राखो छो दू
रो ॥ सेवक० ॥ २ ॥ सेवकने वलवलतो देखी,
मनमा महेर न धरशो ॥ करुणासागर केम क
हेवाशो, जो उपगार न करशो ॥ सेवक० ॥३॥
लटपटनु हवे काम नही छे, परतक्ष दरिसण
दीजें ॥ धूवाडे धीजु नहीं साहिब, पेट पड्या प
तीजें ॥ सेवक० ॥ ४ ॥ श्रीसखेसर मंरूण सा
हिब, वीनतडी अवधारो ॥ कहे जिनहर्ष मया
करी मुजने, नवसायरथी तारो ॥ सेवक० ॥५॥

गीरय गंग जी ॥ गोत्र तीर्थंकर बांधीयां जाएो जोई जे ऊम जी ॥म० ॥ ४ ॥ देव धी मुऊनें पाखडी जी, आवु केम हजूर जी समयसुदर कहे वदना जी, प्रह ऊगमते जी ॥ म० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अय पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ सुण अरदासा सुखण निवासा, पूरो प्रनु आशा राज ॥ सु० ॥ देखि अपणा दासा, दीजे कबुक दिलासा राज ॥१॥ चाडी चटकी नवमाहि नटकी, नाच्यो विघ नटकी राज ॥ सु० ॥ २ ॥ हवे मन आपशु अटकी, लाग्र प्रनुपय लटकी राज ॥ सु० ॥ ३ ॥ तें हम टाली सुगत संनाली, प्रीत अमेंहिज पाली राज ॥ सु० ॥ ४ ॥ एक हथा ली वाजे ताली, वात अचना वाली राज ॥सु० ॥ ५ ॥ परउपगारी पास तुमारी, सेवामें विष सारी राज ॥ सु० ॥६॥ तत्त्व विचारी मन शुद्ध

। अथ पद ॥ राजा हुं मे कोमका ॥ ए देशी॥
॥ प्रह उठी मे सदा नमुं, हाथ जोडके साम
। चोवीशे जिनराजकु हु, नित्य करुं परणाम ॥
॥ १ ॥ रिषन्न अजित सम्नव अन्निनदन, और
सुमति जिनराज ॥ पद्म सुपार्श्व चंद्रा प्रन्नुसे,
लगन लगी हे आज ॥ २ ॥ सुबुध्धि शीतल
श्रेयास सवाई, दीजे मुक्ति नाथ ॥ वासुपूज्य
जिन बारमा, विमल अनंत नाथ ॥ ३ ॥ धर्म
शांति अरु कुंथु जिनेश्वर, अर मल्ली महाराज ॥
मुनि सुव्रत नमि नेमजी, पार्श्व वीर जिनराज
॥४॥ कहे पाठक कल्यानकी, निधान पूरो आश॥
कर जोडी गुण गावता, चदगोपाल दास ॥५॥
॥ पद ॥ अरे लालदेव इस तरफ
जलदी या ॥ ए रागमा ॥
॥ गइथी गइथी में मंदिर आज, वा बेठे थे
श्रीजिनराज ॥ १ ॥ कहा कहू आगीकी अजब
बाहार, मन प्रसन्न नया प्रन्नुकुं निहार ॥ २ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ प्राण पीयारा जी हो पास जी किरतार॥जिनेसर ॥ साहेब वसीया जीहो पुरी, हु इण भरत मझार ॥ जि० ॥प्राण०
आघो अंतर जीहो अति घणो, सेयु न साथ ॥ जि० ॥ लिख सदेशा जीहो कागल द्यु किण हाथ ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ १
रमता थें मे जीहो एकठा, दिनमें दश दश र ॥ जि० ॥ केइक दिन लग जीहो एकठा, लता घणी मनुहार ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ ३
आवतो मिलणो जीहो अवसरे, मिलशो सुख संयोग ॥ जि० ॥ पण क्षण क्षण जीहो सांभरे, वाला लणो रे विजोग ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ ४ ॥
मिलस्या जिण दिन जीहो मन रली, फलशो ते दिन आश ॥ जि० ॥ चंदसुर्निद कहे जीहो चित्तमें, वसजो प्रभु सुखवास ॥ जि० ॥ प्रा०॥५॥

गान प्रभु अरज करे हैं तुझकु, चंदगोपाल क
हे दरस देखावो मुझकुं ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद ॥ ठुमरी ॥ अच्छा हमारा
याद रखना ॥ ए देशी ॥

॥ प्रभु नामकुं याद करनां, याद करनां न
हीं विसरना॥प्र०॥ ए टेक ॥ जिनवरजीसे ध्या
न लगाय के, आतम मेलकों निरमल करनां
॥ प्र० ॥ १ ॥ तीन तत्वका ध्यान धरिके, चार
चोकडीकुं परिहरना ॥ प्र० ॥ २ ॥ तन धन यौ
वन सब है जूठा, इनको दिलमे खूब समजनां
॥ प्र० ॥३॥ शिव पदवीकी चाहा होवे तो, स
मकित बीज हृदयमें रखना ॥ प्र० ॥ ४ ॥ चंद
गोपालकी आशा पूरीजे, अब में आयो आप
के सरना ॥ प्र० ॥ ५ ॥

॥ पद ॥ ठुमरी ॥ लगना पानी पूरव मति
जइयो रे ॥ ए रागमा ॥

॥ प्रभुका ध्यान धरो तुमें प्यारा रे ॥प्र०॥

मस्तकमे शोहे मुकुट अति सार, कानोंमें लका है झलकार ॥ ३ ॥ गले बिच माळ है मोतिकी, बाजु कडा कठी सोहे नीकी ॥४॥ सोनेके सिंहासन पर बेठे है राज, फुलूंका गंध भया अति आज ॥ ५ ॥ ऐसे साहेब जिनराज, करुं में प्रणाम पूरो मन काज ॥ ६ ॥ कल्याण निधानकी पूरो आश, पाल तुमारो है दास ॥ ७ ॥ इति ॥

सिर पे आखो पे गलेपें बिठाउ तुझको॥ए ॥ चिंतामणि पार्श्व प्रभु अरज करुं मे ८ अब मेरी अरज सुनी पार उतारो मुझको ॥१ शत्रु मेरे अष्ट कर्मोने फंदमें फसाया मुझको, म बिन और नही फंद छोडावे मुझको ॥२॥ ज्ञा न ध्यान तप जप नहीं, उदयें आवे मुझको ॥ ए क तेरा नामका आधार प्रभु है मुझको ॥३॥ न र नारि सुरवर नित्य नमे है तुझको, मेरा मनमें तो प्रभु ध्यान धरुं मे ॥४॥ कल्यान नि

ज्ञान प्रभु अरज करे हैं तुझकुं, चदगोपाल क
हे दरस देखावो मुझकुं ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद ॥ ठुमरी ॥ बल्ला हमारा
याद रखना ॥ ए देशी ॥

॥ प्रभु नामकूं याद करनां, याद करना न
हीं बिसरना॥प्र०॥ ए टेक ॥ जिनवरजीसे ध्या
न लगाय के, आतम मेलको निरमल करनां
॥ प्र० ॥ १ ॥ तीन तत्त्वका ध्यान धरिके, चार
चोकडीकूं परिहरना ॥ प्र० ॥ २ ॥ तन धन यौ
वनसब है जूठा, इनको दिलमे खूब समजना
॥ प्र० ॥३॥ शिव पदवीकी चाहा होवे तो, स
मकित बीज हृदयमें रखना ॥ प्र० ॥ ४ ॥ चद
गोपालकी आशा पूरीजे, अब मे आयो आप
के सरना ॥ प्र० ॥ ५ ॥

॥ पद ॥ ठुमरी ॥ लगना पानी पूरब मति
जइयो रे ॥ ए रागमा ॥

॥ प्रभुका ध्यान धरो तुमें प्यारा रे ॥प्र०॥

मस्तकमे शोहे मुकुट अति सार, कानोंमें
लका हे ऊलकार ॥ ३ ॥ गले बिच
हे मोतिकी, वाजु कडा कठी सोहे नीकी ॥ ४
सोनेके सिहासन पर बेठे है राज, फुलूंका
गध नया अति आज ॥ ५ ॥ ऐसे साहेब
व जिनराज, करुं में प्रणाम पूरो मन काज
॥ ६ ॥ कल्याण निधानकी पूरो आश,
पाल तुमारो है दास ॥ ७ ॥ इति ॥
सिर पे आखो पे गलेपें बिठाउ तुऊकुं॥ए ।
॥ चिंतामणि पार्श्व प्रभु अरज करुं मे
अब मेरी अरज सुनी पार उतारो मुऊकुं ॥१
शत्रु मेरे अष्ट कर्मोने फंदमे फसाया मुऊकुं,
म विन और नही फद छोडावे मुऊकु ॥२॥
न ध्यान तप जप नहीं, उदयें आवे मुऊकु ॥ ए
क तेरा नामका आधार प्रभु है मुऊकुं ॥३॥ न
र नारि सुरवर नित्य नमे हे तुऊकु, मेरा मनमें
तो प्रभु ध्यान धरुं मे तुऊकु ॥४॥ कल्यान नि

वान प्रभु अरज करे हैं तुझकुं, चदगोपाल क
हे दरस देखावो मुझकुं ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद ॥ ठुमरी ॥ अल्ला हमारा
याद रखना ॥ ए देशी ॥

॥ प्रभु नामकूं याद करनां, याद करनां न
हीं विसरना॥प्र०॥ ए टेक ॥ जिनवरजीसे ध्या
न लगाय के, आतम मेलको निरमल करनां
॥ प्र० ॥ १ ॥ तीन तत्त्वका ध्यान धरिकें, चार
चोकडीकूं परिहरना ॥ प्र० ॥ २ ॥ तन धन यौ
वनसब है जूठा, इनको दिलमे खूब समजना
॥ प्र० ॥३॥ शिव पदवीकी चाहा होवे तो, स
मकित बीज हृदयमें रखना ॥ प्र० ॥ ४ ॥ चद
गोपालकी आश पूरीजे, अब मे आयो आप
के सरना ॥ प्र० ॥ ५ ॥

॥ पद ॥ ठुमरी ॥ लगना पानी पूरव मति
जइयो रे ॥ ए रागमा ॥

॥ प्रभुका ध्यान धरो तुमें प्यारा रे ॥प्र०॥

मस्तकमे शोहे मुकुट अति सार, कानोंमें
लका हे झलकार ॥ ३ ॥ गले बिच माला
हे मोतिकी, बाजु कडा कटी सोहे नीकी ॥ ४
सोनेके सिंहासन पर बेठे हे राज, फुलूंका
गंध नया अति आज ॥ ५ ॥ ऐसें साहेब
व जिनराज, करुं में प्रणाम पूरो मन काज
॥ ६ ॥ कल्याण निधानकी पूरो आश,
पाल तुमारो हे दास ॥ ७ ॥ इति ॥
सिर पे आखो पें गलेपे बिठाउ तुमकुंभाए ।
॥ चिंतामणि पार्श्व प्रभु अरज करुं में
अब मेरी अरज सुनी पार उतारो मुझकुं ॥१
शत्रु मेरे अष्ट कर्मोने फंदमें फसाया मुझकुं, तु
म विन और नहीं फद छोडावे मुझकु ॥२॥ ज्ञा
न ध्यान तप जप नहीं, उदयें आवे मुझकुं ॥ ए
क तेरा नामका आधार प्रभु हे मुझकुं ॥३॥ न
र नारि सुरवर नित्य नमे हे तुझकुं, मेरा मनमें
तो प्रभु ध्यान धरुं मे तुझकु ॥४॥ कल्यान नि

न ॥ प्र० ॥ ३ ॥ कृपा करो मुझकों, पूरो मेरी आस ॥ दुसमनोकों दूर करो, करु नित प्रणाम ॥ प्र० ॥ ४ ॥ श्रीसघकी आशा पूरो, गुन पद्म दास ॥ जैनप्रकाश मरुलीको, मानो बहु प्रणाम ॥ प्र० ॥ ५ ॥

॥पद॥कहु हुं नसीबें दुःखीयो कीधो छे॥ए राग ॥

॥ किसपर मान गुमान करीजे, एक प्रभुजी को ध्यान धरीजे ॥ किस० ॥ ए टेक ॥ जोबन जोर मायाके नसेमे, भूल गये तुम गुरु एक पलमे ॥ किस० ॥ १ ॥ क्रोध कूपमे पडके गमारा, एक उपाय न शोधुं तुमारा ॥ कि० ॥ २ ॥ लोभ लुगाइसें मोह पायके, बहोत दुःखी हुन नरक जायके ॥ कि० ॥ ३ ॥ पाच मित्रके फदमें पडके, वार वार तु लहु जनमीके ॥ कि० ॥ ४ ॥ इनकु छोड तुम ध्यान लगावो, अजर अमर सुख सहजमें पावो ॥ कि० ॥ ५ ॥ चदगोपाल की आस पूरीजें, जैनप्रकाशक गुन गाईजें॥६॥

ए टेक ॥ प्रभुजीके नामसे पाप कटत है,
भ करम दूर जावे रे ॥ प्र० ॥१॥ या
में और कोई नहीं है, एके प्रभुजी कहावे
प्र० ॥ २ ॥ माता पिता सब सुखके साथी,
खमे कोई न आवे रे ॥ प्र० ॥३॥ या
की जूठी है माया, जूठा जाल फेलावे रे ॥
ज्ञानविधानकी आस पूरीजे, चदगोपाल
न गावे रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद ॥ मरुं हु वेरी हाथथी ॥ ए रागमां

॥ प्रणाम होजो प्रभुनें, महाराजकू
॥ महाराजकु प्रणाम हे जिनराजकूं प्रणाम
प्र० ॥ ए टेक ॥ प्रथम आदिनाथकूं में,
करुं सार ॥ छुखकी मे बात कहुं, करीनि प्रण
म ॥ प्र० ॥१॥ मुझकों छुख देवे बहु, कर्म
त्रुराय ॥ इनकों दूर कीजिये, करुं में
॥ प्र० ॥२॥ आपको मे ध्यान धरुं, और
दिं ध्यान॥पूजा करुं नृत्य करुं करुं प्रणा

म ॥ प्र० ॥ ३ ॥ कृपा करो मुझकों, पूरो मेरी आस ॥ दुसमनोकों दूर करो, करुं नित प्रणाम ॥ प्र० ॥ ४ ॥ श्रीसघकी आशा पूरो, सुन पद्म दास ॥ जैनप्रकाश मन्डलीको, मानो बहु प्रणाम ॥ प्र० ॥ ५ ॥

॥पद॥कहुं छुं नसीबे दुखीयो कीधो छे॥ए राग ॥

॥ किसपर मान गुमान करीजे, एक प्रभुजी को ध्यान धरीजें ॥ किस० ॥ ए टेक ॥ जोबन जोर मायाके नसेमे, भूल गये तुम गुरु एक पलमें ॥ किस० ॥ १ ॥ क्रोध कूपमे पडके गमारा, एक उपाय न शोधु तुमारा ॥ कि० ॥ २ ॥ लोभ लुगाइसें मोह पायकें, बहोत दुखी हुव नरक जायकें ॥ कि० ॥ ३ ॥ पाच मित्रके फदमे पडके,वार वार तु लक्ष भमीके ॥ कि० ॥ ४ ॥ इनकु छोड तुम ध्यान लगावो, अजर अमर सुख सहजमें पावो ॥ कि० ॥ ५ ॥ चदगोपाल की आस पूरीजें, जैनप्रकाशक गुन गाईजें॥६॥

ए टेक ॥ प्रभुजीके नामसे पाप कटत है,
न करम दूर जावे रे ॥ प्र० ॥१॥ या
मे और कोई नहीं है, एके प्रभुजी कहावे
प्र० ॥ २ ॥ माता पिता सब सुखके साथी,
खमे कोई न आवे रे ॥ प्र० ॥३॥ या
की जूठी है माया, जूठा जाल फेलावे रे ॥
दयानिधानकी आस पूरीजे, चदगोपाल
न गावे रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद ॥ मरु हुं वेरी हाथथी ॥ ए रागमां

॥ प्रणाम होजो प्रभुने, महाराजकू
॥ महाराजकु प्रणाम हे जिनराजकूं प्रणाम
प्र० ॥ ए टेक ॥ प्रथम आदिनाथकूं में, अरज
करुं सार ॥ दुखकी में बात कहुं, करीने प्रण
म ॥ प्र० ॥१॥ मुझकों दुख देवे बहु, कर्म
शुराय ॥ इनकों दूर कीजिये, करु मे प्रणाम
॥ प्र० ॥२॥ आपको मे ध्यान धरुं, और न
हिं ध्यान ॥ पूजा करुं नृत्य करुं, करुं ~ प्रणा

म ॥ प्र० ॥ ३ ॥ कृपा करो मुझकों, पूरो मेरी आस ॥ ङुसमनोकों दूर करो, करु नित प्रणाम ॥ प्र० ॥ ४ ॥ श्रीसंघकी आशा पूरो, गुन पद्म दास ॥ जैनप्रकाश मन्डलीको, मानो बहु प्रणाम ॥ प्र० ॥ ५ ॥

॥पद॥ कहुं हुं नसीबे ङुःखीयो कीधो छे॥ ए राग ॥

॥ किसपर मान गुमान करीजे, एक प्रनुजी को ध्यान धरीजें ॥ किस० ॥ ए टेक ॥ जोबन जोर मायाके नसेमें, नूल गये तुम गुरु एक पलमें ॥ किस० ॥ १ ॥ क्रोध कूपमे पडके गमारा, एक उपाय न शोधुं तुमारा ॥ कि० ॥ २ ॥ लोन लुगाइसें मोह पायकें, वहोत ङुःखी हुए नरक जायकें ॥ कि० ॥ ३ ॥ पाच मित्रके फदमे पडके, वार वार तु लख्ख नमीके ॥ कि० ॥ ४ ॥ इनकु छोड तुम ध्यान लगावो, अजर अमर सुख सहजमें पावो ॥ कि० ॥ ५ ॥ चंदगोपाल की आस पूरीजें, जैनप्रकाशक गुन गाईजें॥६॥

ए टेक ॥ प्रभुजीके नामसे पाप कटत है,
न करम दूर जावे रे ॥ प्र० ॥१॥ या
में और कोई नहीं है, एके प्रभुजी कहावे
प्र० ॥ २ ॥ माता पिता सब सुखके
खमे कोई न आवे रे ॥ प्र० ॥३॥ या
की जूठी है माया, जूठा जाल फेलावे रे ॥
ध्याननिधानकी आस पूरीजे, चंदगोपाल
न गावे रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद ॥ मरुं बु वेरी हाथथी ॥ ए रागमां

॥ प्रणाम होजो प्रभुनें, महाराजकू
॥ महाराजकु प्रणाम हे जिनराजकू प्रणाम
प्र० ॥ ए टेक ॥ प्रथम आदिनाथकूं में,
करुं सार ॥ छु खकी में बात कहुं, करीनि प्रण
म ॥ प्र० ॥१॥ मुझकों छु ख देवे बहु, कर्म श
त्रुराय ॥ इनकों दूर कीजियें, करुं में प्र
॥ प्र० ॥२॥ आपको में ध्यान धरुं, और
हिं ध्यान॥पुजा करुं नृत्य करुं करुं प्रणा

म ॥ प्र० ॥ ३ ॥ कृपा करो मुझकों, पूरो मेरी आस ॥ दुसमनोकों दूर करो, करु नित प्रणा म ॥ प्र० ॥ ४ ॥ श्रीसघकी आशा पूरो, गुन पद्म दास ॥ जैनप्रकाश मरूलीको, मानो बहु प्रणाम ॥ प्र० ॥ ५ ॥

॥पद॥ कहुं हुं नसीबे दु खीयो कीघो छे॥ए राग ॥

॥ किसपर मान गुमान करीजे, एक प्रभुजी को ध्यान धरीजे ॥ किस० ॥ ए टेक ॥ जोबन जोर मायाके नसेमे, भूल गये तुम गुरु एक प लमें ॥ किस० ॥ १ ॥ क्रोध कूपमे पडके गमा रा, एक उपाय न शोधुं तुमारा ॥ कि० ॥ २ ॥ लोभ लुगाइसें मोह पायके, बहोत दु खी हुव नरक जायके ॥ कि० ॥ ३ ॥ पाच मित्रके फदमे पडके, वार वार तु लक्ष भमीके ॥ कि० ॥ ४ ॥ इनकुं छोड तुम ध्यान लगावो, अजर अमर सुख सहजमें पावो ॥ कि० ॥ ५ ॥ चंदगोपाल की आस पूरीजें, जैनप्रकाशक गुन गाईजें॥६॥

॥ अथ सुमतिजिन स्तवनम् ॥
॥ महाराज वधाई वाजे छे ॥ ।
ई वाजे छे ॥ नगर अयोध्यामाहे, मेव
आज वधाई वाजे छे ॥ ए टेक ॥ मात
जनमिया रे, सुमति नाथ सुखकार ॥
ई सहु देशमे रे, प्रगट भयो जयकार ॥
॥ १ ॥ इन्द्रादिक सहु सुर मल्यारे, मेरु
र पर आय ॥ मज्जन पूजन बहुविधे रे,
करि मन वच काय ॥ व० ॥२॥ घर घर रंग
धामणा रे, घर घर मंगल चार ॥ बालचंद
नु जनमिया रे, सकल संघ सुखकार ॥व०

॥ अथ वीरजिन स्तवनं ॥
॥ आज महोछव रंग रली री ॥ ए टेक
जायो सुत त्रिशलादे रानी, कामित पूरन
कली री ॥ आ० ॥ १ ॥ सजि शणगार
सुरवनिता, अपने अपने मेल चली री ॥
वत सिध्धारथजीके पूर

चोक पूरी री ॥ आ० ॥ २ ॥ इंद्राणी मिल मंगल गावत, नाटक नाचत सुरकुमरी री॥ बाजत ताल मृदग सुरपधनी, बेना बीन मोचंग वली री ॥ आ० ॥ ३ ॥ इंद्र हुकुम कर धरणींद्र पठायो, सब वसुधा धन धान्य भरी री ॥ कनक रजत मनि पच वरनके, कुसुम विखेरत गलिय गली री ॥ आ० ॥ ४ ॥ जयजयकार भयो जिनशासन, व्याधि व्यथा सवि विपत हरी री॥ हरख चद जनम्यो प्रभु मेरो, मनकी आशा सफलफली री ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्रीदादाजीको स्तवन प्रारभ ॥

॥ विलसे ऋद्धि समृद्धि मिली, शुभयोगें पुण्यदशा सफली ॥ जिन कुशलसूरि गुरु अतुलवली, मनवांछित आपे दादो रग रली ॥१॥ मगल लील समे विपुला, नव नवय महोछव राज्यकला ॥ सुपसाये गुरु चढतीकला, सुकुलिणी पुत्रवती महिला ॥ २ ॥ सवही दिन थाये सव

॥ अथ सुमतिजिन स्तवनम् ॥

॥ महाराज वधाई वाजे छे ॥ ।
ई वाजे छे ॥ नगर अयोध्यामाहे, मेघ
आज वधाई वाजे छे ॥ ए टेक ॥ मात
जनमिया रे, सुमति नाथ सुखकार ॥
ई सहु देशमें रे, प्रगट भयो जयकार ॥
॥ १ ॥ इन्द्रादिक सहु सुर मल्यारे, मेरु
र पर आय ॥ मज्जन पूजन बहुविधें रे,
करि मन वच काय ॥ व० ॥२॥ घर घर रंग
धामणा रे, घर घर मंगल चार ॥ बालचंद
नु जनमिया रे, सकल संघ सुखकार ॥व०

॥ अथ वीरजिन स्तवनं ॥

॥ आज महोत्सव रंग रली री ॥ ए टेक
जायो सुत त्रिशलादे रानी, कामित पूरन काम
कली री ॥ आ० ॥ १ ॥ सजि शणगार
सुरवनिता, अपने अपने मेल चली री ॥
वत सिद्धारथजीके पूरत

चोक पूरी री ॥ आ० ॥ २ ॥ इन्द्राणी मिल मंग
ल गावत, नाटक नाचत सुरकुमरी री॥ बाजत
ताल मृदग सुरपधनी, बेना बीन मोचग वली
री ॥ आ० ॥ ३ ॥ इंद्र हुकुम कर धरणींद्र पता
यो, सब वसुधा धन धान्य नरी री ॥ कनक र
जत मनि पच वरनके, कुसुम विखेरत गलिय
गली री ॥ आ० ॥ ४ ॥ जयजयकार नयो जि
नशासन, व्याधि व्यथा सवि विपत हरी री॥
हरख चंद जनम्यो प्रनु मेरो, मनकी आशा स
फलफली री ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्रीदादाजीको स्तवन प्रारंन ॥

॥ विलसे ऋद्धि समृद्धि मिली, शुनयोगें पु
ण्यदशा सफली ॥ जिन कुशलसूरि गुरु अतुल
वली, मनवाछित आपे दादो रग रली ॥१॥ म
गल लील समे विपुला, नव नवय महोछव रा
ज्यकला ॥ सुपसाये गुरु चढती कला, सुकुलिणी
पुत्रवती महिला ॥ २ ॥ सवही दिन थाये सव

॥ अथ सुमतिजिन स्तवनम् ॥

॥ महाराज वधाई वाजे छे ॥
ई वाजे छे ॥ नगर अयोध्यामाहे, मेघ
आज वधाई वाजे छे॥ ए टेक ॥ मात
जनमिया रे, सुमति नाथ सुखकार ॥
ई सहु देशमे रे, प्रगट भयो जयकार ॥
॥ १ ॥ इंद्रादिक सहु सुर मल्यारे, मेरु
र पर आय ॥ मज्जन पूजन बहुविधे रे,
करि मन वच काय ॥ व० ॥२॥ घर घर रंग
धामणा रे, घर घर मगल चार ॥ बालचंद
नु जनमिया रे, सकल सघ सुखकार ॥व०

॥ अथ वीरजिन स्तवनं ॥

॥ आज महोच्छव रग रली री ॥ ए टेक
जायो सुत त्रिशलादे रानी, कामित पूरन
फली री ॥ आ० ॥ १ ॥ सजि शणगार
सुरवनिता, अपने अपने मेल चली री ॥
वत सिद्धारथजीके

आपद निश्चेसुं उवरे॥९॥खड खड खडग प्रहार वहे, सौदामिनी जिम सम सेल सहे ॥ कुशल कुशल गुरु नाम कहे, ते खेम कुशल रिणमल लहे ॥ १० ॥ थुन सकल परचा पूरे, श्रीनागपुरें सकट चूरे॥ मंगलोर अधिके नूरें, देरावर न य टाले दूरे ॥ ११ ॥ वीरमपुर वाने सुधरे, खंभाईतपुर विक्रम नयरें ॥ जिणचद सूरि पाटे पवरे, जसु कीरति महिमंरुल पसरे ॥१२॥ पूरव पश्चिम दक्षिण आगे, उत्तर गुरु दीपे सोभागे ॥ दह दिशि जन सेवा मागे, श्रीखरतर गछ महिमा जागे ॥ १३ ॥ पुर पट्टण जनपद ग्रामे, गाईजे कुशल नयर गामे ॥ पूजे जे नर हितकामे, ते चक्रवर्त्ति पदवी पामे ॥ १४ ॥ श्री जिनकुशलसूरि साखे, सेवकजनने सुखिया राखे ॥ समस्या गुरु दरिसण दाखे, श्रीसाधु कीरति पाठक भाखे ॥ १५ ॥ इति ॥

ला, सटवास कपूर तणा कुरला ॥ हथ
थ पायक वहुला, कल्लोल करे मदिर
॥ ३ ॥ वींजे चमर निसाण घुरे, नर बे
खडा पूहरे ॥ जय जय कर जोडी उच्चरे,
ध्य गुरु सब काज सरे ॥ ४ ॥ सरसा
पान सदा, दुख रोग दुकाल न होय
अविचल कुलट अग मुदा, गुरु परमदृष्टि
सन्न सदा ॥ ५ ॥ घम घम मादल नाद
बत्तीसे नाटक रङ्ग रमे ॥ प्रगट्यो पुण्य
मे, सबला अरियण ते आय नमे ॥६॥ तन
ख मन सुख चीर तने, पहिरे वेलाउल होय र
नै ॥ ध्यावो कुशल गुरु एक मनें, जूंभक सुरमं
दिर भरे धने ॥ ७ ॥ ततखिण घण खंच्यो आ
वे, करि श्यामघटा मेह वरसावे ॥ तिसीयां तो
य तुरत पावे, जलदाता त्रिजग सुजस गावे ॥
॥ ८ ॥ लहिरया जल कल्लोल करे, प्रवहण न
वसायर मांभि भरे ॥ बूडता - ८५ जे ते

आपद निश्रेसु उवरे॥ए॥खड खड खडग प्रहार
वहे, सौदामिनी जिम सम सेज सहे ॥ कुशल
कुशल गुरु नाम कहे, ते खेम कुशल रिणमल
लहे ॥ १० ॥ थुन सकल परचा पूरे, श्रीनागपु
रें सकट चूरे ॥ मंगलोर अधिके नूरें, देरावर न
थ टाले दूरे ॥ ११ ॥ वीरमपुर वाने सुधरे, ख
भाईतपुर विक्रम नयरें ॥ जिणचंद सूरि पाटे
वरे, जसु कीरति महिमंरुल पसरे ॥१२॥ पूर
। पश्चिम दक्षिण आगें, उत्तर गुरु दीपे सोभा
गे ॥ दह दिशि जन सेवा मागे, श्रीखरतर ग
छ महिमा जागे ॥ १३ ॥ पुर पट्टण जनपद
ठामें, गाईजें कुशल नयर गामे ॥ पूजे जे नर
हितकामे, ते चक्रवर्त्ति पदवी पामे ॥ १४ ॥ श्री
जिनकुशलसूरि साखें, सेवकजननें सुखिया रा
खे ॥ समरथा गुरु दरिसण दाखे, श्रीसाधु कीर
ति पाठक भाखे ॥ १५ ॥ इति ॥

ला, सटवास कपूर तणा कुरला ॥ रथ
थ पायक बहुला, कल्लोल करे मंदिर
॥ ३ ॥ वींझे चमर निसाण घुरे, नर बे
खडा पूठरे ॥ जय जय कर जोडी उचरे,
ध्य गुरु सब काज सरे ॥ ४ ॥ सरसा
पान सदा, दुःख रोग दुकाल न होय
अविचल ऊलट अग मुदा, गुरु
सन्न सदा ॥ ५ ॥ घम घम मादल नाद
बत्तीसे नाटक रङ्ग रमे ॥ प्रगट्यो पुण्य
में, सबला अरियण ते आय नमे ॥६॥ तन
ख मन सुख चीर तने, पहिरे वेलाउल होय र
नै ॥ ध्यावो कुशल गुरु एक मनें, जृंभक सुरमं
दिर भरे धने ॥ ७ ॥ ततखिण घण खच्यो आ
वे, करि श्यामघटा मेह वरसावे ॥ तिसीयां तो
य तुरत पावे, जलदाता त्रिजग सुजस गावे ॥
॥ ८ ॥ लहिरया जल कल्लोल करे, प्रवहण न
वसायर मांहि भरे ॥ बूडता जे .

परिवाद अनेरी, सरण ग्रही इन चरणकी ॥वा० ॥च०॥४॥ श्रीजिनहर्ष तुम चरणको दासा, आशा पूरो सुख करणकी ॥वा०॥च० ॥५॥ इति ॥

॥ ताल ठुमरी ॥

॥ सदा सहाई कुशलसूरिंद, गुरु द्यो दोलत गुरु राय जी ॥सदा०॥ खाई न खूटे खरची न तूटे, दिन दिन वधे सवाय जी ॥ स० ॥ १ ॥ सकजा सुत डर सुदर नारी, शुन परिकर सुख दाय जी ॥ स० ॥ मित्र समागम सुजस वधारण, नित प्रति हरष उत्साह जी ॥स० ॥ २॥ राजा परजा पाय नमे सहू, गुरु समरथ सुपसाय जी ॥ स० ॥ दोपी छद्यामन नृपनय पडियां, सद्गुरु करय सहाय जी ॥ स० ॥ ३ ॥ विषमी विरिया सकट पडिया, समख्यां आवे धाय जी ॥ स० ॥ नूख्या नोजन तिसिया पाणी, निरधनिया धन दाय जी ॥स०॥४॥ सघ सकलनें द्यो सुख शाता, जिम कीरत जग थाय जी ॥ स०

॥ अथ गुरुदेवजीका स्तवन ॥ राग
॥ श्रीजिनदत्त सूरिंदा, परम गुरु
परम दयाल दया कर दीजे, दरिसन
नदा ॥ प० ॥ श्री० ॥ जगम सुरतरु
दायक, सेवक जन सुखकदा ॥ सद्गुरु
नाम नित समरण, दूर हरण दुख ददा
श्री० ॥ १ ॥ निजपद सेवक सांनिधकारी,
खीयें गुरु रोजिंदा ॥ कर जोडी विनय
वे, श्रीजिन हरख सूरिंदा ॥प०॥श्री०

॥ राग सारग ॥

॥ चरणकी वारी जाउं गुरुराय चरणकी ॥ ए
आंकणी ॥ श्रीजिनदत्त सूरीसर सद्गुरु, सफल
घडी सेवा चरणकी ॥वा०॥१॥ प्रथम मंगल गुरु
रायकी सेवा, अशुभ करम सब हरणकी ॥वा०
॥च०॥२॥ दारिद्र भजन अरि सब गंजन, पग
पग सानिध्य करणकी॥वा०॥च०॥३

परिवाह अनेरी, सरण ग्रही इन चरणकी ॥वा० ॥च०॥४॥ श्रीजिनहर्ष तुम चरणको दासा, आशा पूरो सुख करणकी ॥वा०॥च० ॥५॥ इति ॥

॥ ताल ठुमरी ॥

॥ सदा सहाई कुशलसूरिंद, गुरु द्यो दोलत गुरु राय जी ॥सदा०॥ खाई न खूटे खरची न तूटे, दिन दिन वधे सवाय जी ॥ स० ॥ १ ॥ सकजा सुत डेर सुंदर नारी, शुन परिकर सुखदाय जी ॥ स० ॥ मित्र समागम सुजस वधारण, नित प्रति हरष उत्साह जी ॥स० ॥ २॥ राजा परजा पाय नमे सहू, गुरु समरण सुपसाय जी ॥ स० ॥ दोषी डुशमन नृपन्नय पडिया, सद्गुरु करय सहाय जी ॥ स० ॥ ३ ॥ विषमी विरिया सकट पडिया, समरया आवे धाय जी ॥ स० ॥ नूख्या नोजन तिसिया पाणी, निरधनियां धन दाय जी ॥स०॥४॥ संघ सकलनें द्यो सुख शाता, जिम कीरत जग थाय जी ॥ स०

॥ थानक थिरता परिगल जोजन, पण
शाल सहाय जी ॥ स० ॥ ५ ॥ अनय
खदाई सद्गुरु, नवनिधि वछित थाय जी ॥
॥ सुमति सवाई नित घर सपद, दान ।
लहाय जी ॥ स० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पुन ॥

॥ कुशल गुरु अब मोहि दरिसण दीजें ॥
॥ अ० ॥ ऐसी जाति करो मेरे सद्गुरु, ज्युं म
न मूढ पतीजें ॥ कु० ॥ १ ॥ जलदातार बिम्ब
अमृतरस, श्रवण अजलि नर पीजें ॥ सुरतरु
सम दरिसण विन देख्या, कहो नयण किम री
झे ॥ कु० ॥ २ ॥ परम दयाल कृपाल कृपानिधि,
इतनी अरज सुणीजें ॥ परम भगत जिनराज
तुम्हारो,अपनो कर जाणीजें ॥कु०॥३॥ इति ॥

॥ पुन ॥

॥ कुशल गुरु कुशल करो भरपूर, सेवक
जन मन वछित पूरण, समरथा होय ॥

कु० ॥ १ ॥ परम दयाल प्रेम रस पूरए, अशु
ज दरए जये दूर ॥ सघ उदय कर सद्गुरु मे
रा, विनवे श्रीजिनचंद सूर ॥ कु० ॥४॥ इति ॥
॥ परममंगल श्रीदादाजीकाव्यानि ॥
॥ दासानुदासा इव सर्वेदेवा, यदीयपादा
ब्जतले लुठंति ॥ मरुस्थलीकल्पतरु स जीया,
घुगप्रधानो जिनदत्तसूरि ॥ १ ॥
॥ चिंतामणि कल्पतरुर्वराको, कुर्वन्ति न
व्या किसु कामगव्या ॥ प्रसीदत श्रीजिनदत्त
सूरेः, सर्वं पद हस्तिपदे प्रविष्ट ॥ २ ॥
॥ नो योगी न च योगिनी न च नराधीशस्य
नो शाकिनी, नो वेतालपिशाचराक्षसगणा
नो रोगशोकौ जय ॥ नो मारी नच विग्रहप्रनृ
तय प्रीत्या प्रणत्युच्चकै, यस्ते श्रीजिनदत्तसू
रिगुरवो नामाक्षर ध्यायति ॥ ३ ॥
॥ अथ सवईया लिख्यते ॥
॥ बावन वीर किये अपणें वस, चौसठ जो

गए पाय लगाई॥ भाइए साइए व्यंतर सेवक भूत रु प्रेत पिशाच पुलाई॥ बीज तडक भडक, भटक रहे जु खटक न काई, कहे प्रमसिंह लघे कुए लीह, दिये जिनदत्तकि एक दुहाई॥१॥

॥ राजे थुभ गोर गोर ऐसो देव नही और दादो दादो नामते जगत्र जस्स गायो है, पणेही आय आय पूजे लखलोक पाय, प्यास नकु रान माऊ पानी आन पायो है ॥ वाट घाट शत्रु थाट हाट पुरपाटएमें, देह गेह नेहसुं कुशल वरतायो है, धर्मसिंह ध्यान धरे सेवकां कुशल करे साचो श्रीजिनकुशल गुरु नाम युं कहायो है ॥ २ ॥

बप्पा॥कुशल अग अवरग, कुशलविणजें व्यापारें ॥ कुशल देव देहरे, कुशल धन राजद्वारें ॥ पुण्य पसायें कुशल, कुशल श्रीसघ जणीजें ॥ वाहए आवे कुशल, कुशल घर घर गाईजें ॥ श्रीजिनचद्रसूरि पुहपट्टधर, मंत्र

टले ॥ श्रीजिनकुशल सूरि पाय पूजता, नव निधान लक्ष्मी मिले ॥ १ ॥

॥ कुशल वडो संसार, कुशल सज्जन घर चाहे ॥ कुशलें मयगल वार, लच्छि घर कुशलें आवे ॥ कुशलें घन वरसंत, कुशल धन धन्न रु वन्नो ॥ कुशलें घोडा थट्ट, कुशल पहरीय सु वन्नो ॥ ए रसो नाम सद्गुरु तणो, कुशलें ज ग रलीयामणो ॥ भट्टारक श्रीजिनकुशल सूरि नाम ग्रहणें करी, घर घर होत वधामणो ॥२॥

॥ अथ गौतम स्वामीनो रास लिख्यते ॥

॥ वीर जिणेसर चरण कमल कमलाकय वासो, पणमवि पभणिसु सामी साल गोयम गुरुरासो ॥ म णतणु वयणे एकत करवि निसुणहु भो भविया, जि म निवसे तुम देह गेह गुण गण गह गहिया ॥ १ ॥ जंबूदीव सिरिभरहखित्त खोणी तल मरुण, मगहदे स सेणियनरेस रिउदल बलखरुण ॥ धणवर गुब्बर गाम नाम जिहां गुणगणसज्जा, विप्प वसे वसुभूइ तछ तसु पुहवी भज्जा ॥ २ ॥ ताणपुत्त सिरिइंद भू

य नृपसगपगिन्ती, नयरइ त्रिज्ञा विवरूप मरी रस सुणो ॥ विनय विवेक विचार सार गुण गवर मनोहर, सात हाथ सुप्रमाणदेह रूवहि रंभावर ॥ ॥ ३ ॥ नयणवयण कर चरण जणवि पंकजजलपारि य, तेजहिं तारा चद सूरि आकास जमाडिय ॥ रू वहि मयण अनग करवि मेल्यो निरधाडिय,धीरमने रु गभीर सिंधु चगम चयचाडिय ॥४॥ पेखवि निरु वम रूव जास जण जपे किंचिय, एकाकी किल ची त्त इछ गुण मेल्या संचिय ॥ अहवा निश्चयपुव जम्म जिणवर इण अंचिय, रंभा पउमा गवरि गंगरतिहा विधि वंचिय ॥५॥ नय बुध नय गुर कविण कोव जसु आगल रहियो, पचसयां गुण पात्र छात्र हींडे प रवरियो ॥ करय निरंतर यज्ञ करम मिथ्यामति मो हिय, अणचल होसे चरमनाण दसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु ॥ जंबूदीव जंबूदीव भरह वासंमि, खोणीतल मंडण, मगह देस सेणिय नरेसर, वरगु बरगाम तिहां, विप्प वसे वसभूइ, सुंदर तसु पुहवि भज्जा, सयलगुणगणरूवनिहाण, ताणपुत्त विज्जानि लो, गोयम अतिहि सुजाण ॥ ७ ॥ भास ॥ चर म जिणेसर केवलनाणी,

॥ पावा पुर सामी संपत्तो, चउविह देव निकायहिं जुत्तो ॥ ८ ॥ देवहि समवसरण तिहा कीजें, जिण दीठे मिथ्यामत छीजे ॥ त्रिभुवनगुरु सिंहासन बेठा, ततखिण मोह दिगत पइठा ॥ ए ॥ क्रोध मान माया मदपूरा, जाये नाठा जिम दिनचोरा ॥ देव दुंदुभि आगासें वाजी, धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि अरचे तिहां देवा, चउसठ इंद्रज मागे सेवा ॥ चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूवहि जिनवर जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उपसम रसभर वरवरसंता, जोजनवाणि वखाण करता ॥ जाणवि वर्द्धमान जि ण पाया, सुर नर किन्नर आवइ राया ॥१२॥ कत स मोहिय जलहलकता, गयण विमाणहि रणरणकता ॥ पे खवि इंदभूइ मन चिंते, सुर आवे अम यज्ञ हुवते ॥ ॥ १३ ॥ तीरतरंरूक जिम ते वहिता, समवसरण पुहता गहगहिता ॥ तो अभिमानें गोयम जपे, इण अवसर कोपें तणु कंपे ॥ १४ ॥ मूढा लोक अजाण्यु बोले, सुर जाणंता इम कांइ डोले ॥ मो आगल को इ जाण भणीजें, मेरु अवर किम उपम दीजें ॥ ॥ १५ ॥ वस्तु ॥ वीर जिणवर वीर जिणवर ना ण संपन्न पावापुरसुरमहिय, पत्तनाह संसारतारण ॥

तिर्हि देवइ निम्मविय, समवसरण बहु सुक्ख कार ण ॥ जिणवर जग उज्जोय करे, तेजरि कर दिनकार सिंहासण सामी ठव्यो, हुर्ड तो जयजयकार ॥१६॥ भास ॥ तो चढियो घणमाण गजे, इंदभूय भूयदे व तो ॥ हुंकारो कर मचरिय, कवणसु जिणवर देव तो ॥ जोजन भूमि समोसरण, पेखवि प्रथमारज तो ॥ दहदिस देखे विबुधवधू, आवंती सुररंज तो ॥१७॥ मणिमय तोरणदंड ध्वज, कोसीसे नवघाट तो ॥ वयरविवर्जितजंतुगण, प्रातीहारिज आठ तो ॥ सुर नर किन्नर असुरवर, इंद्र इंद्राणी राय तो ॥ चित्त चमकिय चिंतव ए, सेवंतो प्रभु पाय तो ॥ १८ ॥ स हस किरण सामी वीरजिण, पेखिय रूप विसाल तो ॥ एह असंजव संजव ए, साचो ए इंद्र जाल तो ॥ तो बोलावइ त्रिजग गुरु, इंदभूइ नामेण तो ॥ श्रीमु ख संसा सामि सवे, फेडे वेदपएण तो ॥ १९ ॥ मा न मेल्ल मद ठेल करे, जगतहिं नाम्यो सीस तो ॥ पंच सयासूं व्रत लियो ए, गोयम पहिलो सीस तो ॥ बंध व संजम सुणवि करे [illegible] आवेय तो ॥ नाम वेई आचास करे [illegible] तो ॥ २० ॥ [illegible] तो ॥

ो उपदेसे भुवन गुरु, सयमशु व्रत धार तो ॥ बिछु
उपवासें पारणो ए, आपणपें विरहंत तो ॥ गोयम
संयम जग सयल, जय जयकार करंत तो ॥ २१ ॥
। वस्तु॥ इंदभूइ इंदभूइ चढियो बहुमान, हुंकारो क
रि कपतो, समवसरण पहुतो तुरतो ॥ जे ससा
सामि सवे, चरमनाह फेडे फुरंततो ॥ बोधबीज स
ज्ञायमनें, गोयम जवहि विरत्त॥ दिस्क लेई सिस्का स
ही, गणहरपयसंपत्त ॥२२॥ नास ॥ आज हुउं सुवि
हाण, आज पचेलिमां पुण्य जरो ॥ दीठा गोयम सा
मि, जो नियनयणें अमिय करो ॥ समवसरण मका
र, जे जे ससा ऊपजे ए ॥ ते ते पर उपगार, कारण
पूछे मुनि पवरो ॥२३॥ जीहां दीजें दीख, तीहां के
वल उपजे ए ॥ आप कनें अणहुत, गोयम दीजे दान
इम ॥ गुरु उपर गुरु जक्ति, सामी गोयम ऊपनिय ॥
अणचल केवल नाण, रागज राखे रग जरे ॥२४॥
जो अष्टापद सेल, वंदे चढ चउवीस जिण ॥ आतम
लब्धि वसेण, चरम सरीरी सोज मुनि ॥ इय देसणा
निसुणेह, गोयम गणहर संचरिय ॥ तापस पररसए
ण, जो मुनि दीठो आवतो ए ॥ २५ ॥ तपसोमि
यनिय अग, अम्हा सगति न ऊपजे ए ॥ किम चढं

२८ तिर्यंचना रुधिर पडवाथी हाथ १००मांहे अहोरात्र असधाय

२९ मनुष्यना रुधिर पडवाथी हाथ १००मांहे अहोरात्र असधाय

३० मनुष्यनां अस्थि, दांत, दाढ पडे हाथ १०० सो माहे सूत्र पढवु सूजे नहि

३१ स्त्रीने ऋतु आवे थके दिन ३ त्रय असध

३२ आर्द्रा नक्षत्र आव्या पीछें स्वाति नक्षत्र पर्यंत जो गाजे, वीजे, मेह वरसे, तो असधाय न होय,

३३ पुत्रने प्रसवे दिन ७ सात असधाय अने दीकरीने प्रसवे दिन ८ आठ असधाय

३४ कालमहुण विणकी जणवो गुणवो नहिं प्रहर १२ बार असधाय,

३५ वैशाखवदि १, श्रावणवदि १, कार्त्तिकवदि १, मागशिरवदि १ ए चार दिवसें सदैव असधाय अने सूत्रनी असधाय तो प्रहर १२ बार सूधी जाणवी

॥ अथ ॥

साधु ओर श्रावककों कोनसी वस्तु कितने प्रहर ओर दिन पीछें न खावणी सोलिखते हे

॥ चावल प्रहर८, राब प्रहर१२, घीस.

गाठी प्रहर २४, दहि प्रहर १६, दूध प्रहर ४, कांजी वडां प्रहर २४, घोळवडां प्रहर ४, तळ्यां वडां प्रहर ४,पूडी प्रहर ०, रोटी प्रहर ४, तथा ६ बाजरा ऊष्ण प्रहर १२, जवार ऊष्णा प्रहर १२, बाजरीकी खीचडी प्रहर ०, जवारकी खीचडी प्रहर ०, चावलकी खीचडी प्रहर ४, सीयाले आटो दिन १०, उन्हाले आटो दिन ०, वरसाले आटो दिन ५, पकान्न सियाले दिन ३०, उन्हाले पकान्न दिन १५, वरसाले पकान्न दिन ७, उन्हाले लूण फासू दिन ०, वरसाले लूण फासू दिन ३, सीयाले फासू लूण दिन ५, सीयाले फासु घी दिन ०, उन्हाले फासु घी दिन ५, वरसाले फासु घी दिन ३, तथा हमेसका सियाले फासु पाणी प्रहर ५, वरसाले फासु पाणी प्रहर ३, सर्व अनाजकी घूघरी पाणी जीजोइ प्रहर ०, पाणीकी उसेइ घूघरी प्रहर १०, घीतेलकी तली घूघरी प्रहर २०, तथा २४ वडी प्रहर ०, कढी प्रहर ४, सर्व दाल प्रहर ४, तथा ६ रायता प्रहर ०, घीकी तली प्रहर १६ एव सर्व वस्तु ए कीये परिमाण उपरात चलितरस होवे, सो साधु तथा श्रावककों खावे योग्य रहे नहिं ॥